Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शाण्डिल्य सर्वदेव पूजा पद्धतिः
एवं
शतचण्डी विधानम्

नवलदुर्ग वास्तव्य कर्मठ केसरी मिश्रो पाह्व पण्डित प्रवर
फूलचन्द्रात्मज श्रीराम मिश्रेण संकलय्य प्रकाशिता

श्रीराम सम्पत्कुमार मिश्र
गंगा लहरी, तिलकमार्ग
रानीगंज, बर्द्धमान (प० बं०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शाण्डिल्य सर्वदेव पूजा पद्धतिः
एवं
शतचण्डी विधानम्

नवलदुर्ग वास्तव्येन पण्डित श्रीराम मिश्रेण प्रकाशिता

☆

विद्वजन सेवकः

मिश्रः श्रीराम शाण्डिल्यः

का० व्या० पुराण तीर्थः

कविराज शास्त्री आयुर्वेदाचार्यः

भिषग्रत्न—कर्मकाण्ड कोविद

ज्योतिर्विद्—याज्ञिक भूषण

राजकीय कथा भट्टः

गंगालहरी, तिलकमार्ग

रानीगंज (वर्द्धवान)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

डाक व्यय मुद्रा चतुष्टय प्रेषणेन
ग्रंथोऽयं विना मूल्यं प्रदीयते
संकेतः

श्रीराम विजय कुमार मिश्र
गंगा लहरी, तिलकमार्ग
पो०—रानीगंज, जि०—वर्द्धमान (प० बं०)

मुद्रक :—
उदयाचल प्रेस
३१, मुखराम कानोड़िया रोड,
हवड़ा—७११००१
फोन { ६६-५४८८, २०-०१७२, २०-२५६१ }

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रथन्नोद्द्देश्यम्

विदांकुर्वन्तु विद्वद्वरेण्या: यद्भारते आर्यचारितानां हिन्दूनां प्राचीनतमो ग्रन्थो वेद: । वेदे च कर्मौपासना ज्ञानरूपास्त्रयो विषया: काण्ड-नाम्ना: प्रसिद्धा: । अन्त: करण शुद्धयुद्देश्यं तेषु प्रधानं कर्मैव । कर्मसु यज्ञस्यैववेदे प्राधान्यम् । यज्ञेचमंत्रा एव सविधि प्रयुक्ता: फलदातार: । अतो यज्ञो मंत्र प्रधान:, मंत्रश्च यज्ञ प्रधाना इति स्पष्टं वक्तुं शवयते: ।

यज्ञ विधानं मंत्रार्थवत् दुरुहम् । यथा वेदोऽपौरुषेयस्तथा-यज्ञोऽपि । यज्ञैरेव कल्याणमिति सर्वत्र धर्मशास्त्रे प्रतिपादितम् । यज्ञार्थ-मेव भगवान् वेदान प्राकटयत् । प्राचीनैर्महर्षेभि: स्व जीवनं यज्ञार्थमेव स्वीकृतम् । यतोहि जीवने सर्वकामानां पूरको यज्ञ एव । ऐहिकामुष्मि-कश्च लाभो यज्ञैरेव परंपरया मोक्षश्च । अत इदं सर्वथासत्यं यत् सर्वकाम साधको यज्ञ: ॥

एषु यज्ञेषु उच्चार्यमाणानां मंत्रणां सम्यक् सविधि सस्वरमुच्चा-रणमा चार्यस्य ऋत्वि जाश्चकृते परमावश्यकम् । अन्यथा विधानमेव खण्डितं स्यात् ।

यज्ञ मंत्रणामेकत्र सन्निवेशाय-येन सारल्येन सर्वे यज्ञा सविधि सम्पादिता: स्यु:—ममाभिलाषश्चिरादासीत, येन-आचार्याणामृत्विजाञ्चा-न्वेषण श्रमो न स्यात-इति विचिन्त्य शाण्डिल्य सर्वदेव पूजा पद्धति, शतचण्डी विधान पद्ध तिश्च प्रकाशिता । अनया अकृत वेदश्रम: साधा-रणोऽपि विद्वान् कर्मकारयितुं समर्थ: प्रतिष्ठां धनञ्च पाप्नुयाच्च ।

केनापि दोषेणजातां विच्युतिं विद्वत्कल्याणय सूचयन्तो वुधा: सादरमभ्यर्थ्यन्ते विनीतेन ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

—: विषयसूचि :—

		पृष्ठ
१	मंगलाचरण	१
२	स्वस्ति वाचन	३
३	गणेश पूजन	११
४	पुण्याहवाचन	२६
५	मातृका पूजन	४१
६	घृतमातृका पूजन	४६
७	रक्षाविधान	४६
८	नान्दी श्राद्ध	५२
९	वास्तु पूजन	६२
१०	अग्न्युत्तारण	७२
११	मंडप पूजन	७८
१२	सर्वतोभद्र पूजन	८१
१३	अग्निस्थापन	९०
१४	नवग्रह पूजन	९१
१५	योगिनी पूजन	१००
१६	क्षेत्रपाल पूजन	११३
१७	कुशकण्डिका	१२२
१८	पूर्णाहुति होम	१२७
१९	शतचण्डी विधान	१५७

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

प्रणम्य विघ्नेशगुरूं च शारदाम्
पितामहं शंकररूपिणं सदा
भजामि नित्यं पितरौ च पादौ
करोमि देवार्चन पद्धतिं मुदा ॥ १ ॥
शतचण्डी विधिं पूर्णां सर्व देवार्चन क्रियाम्
श्रीराममिश्र शाण्डिल्य स्तनोति विदुषां मुदे ॥२॥
वर्धमाने जनपदे रानीगंज सुशोभने
सर्वदा निवसाम्यत्र करोमि हरि चिन्तनम् ॥३॥
सर्वेषामुप कारार्थं रचिता पद्धति र्मया
सुगमा सरला एषा स्वीकुर्वन्तु विपश्चितः ॥४॥
पुष्पांजलि र्मया भक्त्या श्रीपितृ चरणार्पिता
कर्मणानेन मे देवः पितरः प्रीयतामिति ॥५॥

आभार

विद्वद्वरेण्य स्वनामधन्य पण्डित प्रवर श्री श्रीनिवास जी शास्त्री एवं श्री श्री भगवानदत्त जी शास्त्री (राकेश) जी का मैं बहुत आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर—सत्परामर्श एवं संशोधनादि कार्य को संपन्न किया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैद्य पं० श्रीराम मिश्र

याज्ञिक भूषण, ज्योतिर्विद, कर्मकाण्ड कोविद, आयुर्वेदाचार्य
का० व्या० पुराणतीर्थ, कविराज शास्त्री,
भिषक् रत्न, राजकीय कथाभट्ट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

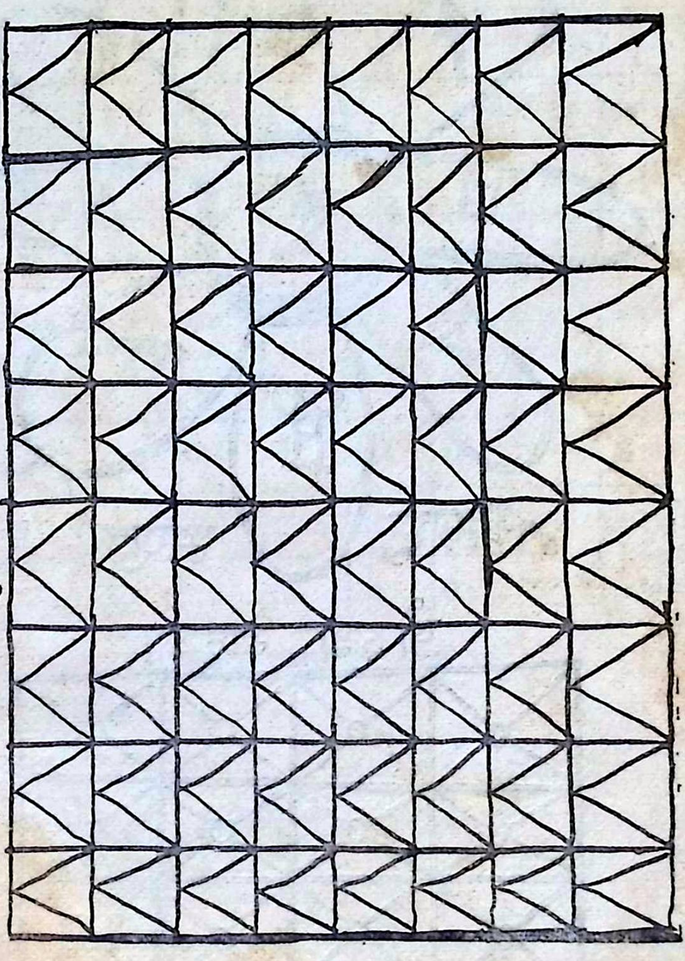

नव रेखात्मक चतुःषष्टि योगिनी मण्डल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

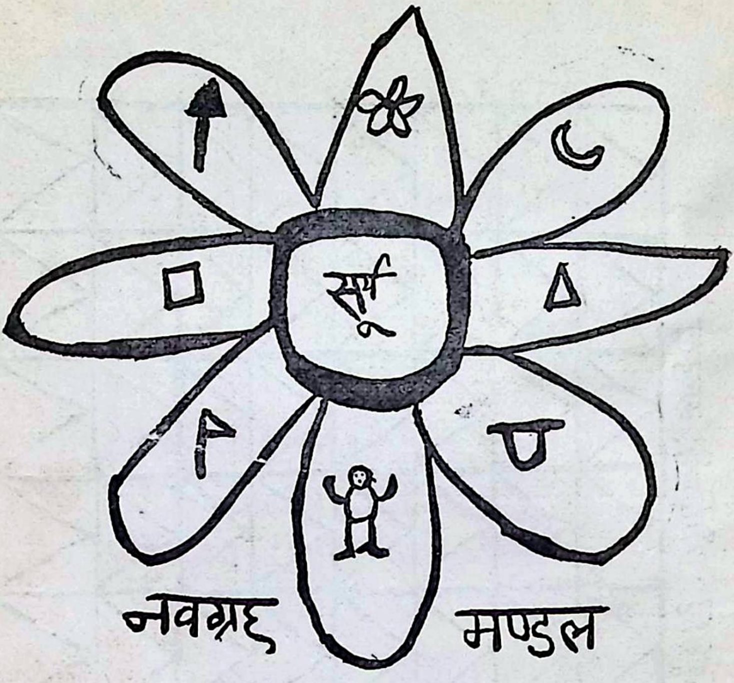

नवग्रह मण्डल

षोडश मातृका

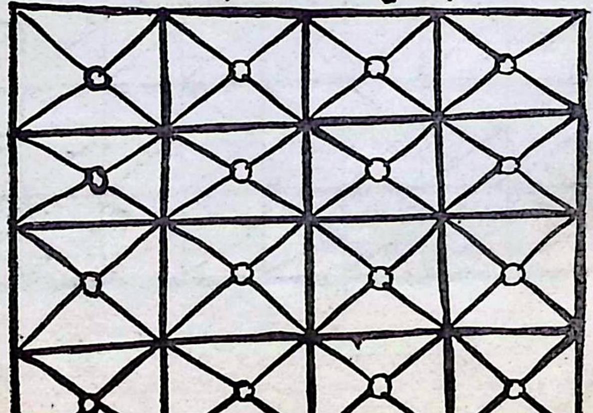

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

८१ वास्तु चक्रम्

का०	स०	का०	स०	ला०	स०	का०	स०	ला०
ला०	स०	का०	स०	ला०	स०	का०	का०	का०
का०	का०	ह०	ला०	ला०	ला०	स०	ह०	ह०
पी०	पी०	पी०	स०	स०	पी०	का०	स	स०
स०	पी०	पी०	स०	स०	स०	का०	का	का०
ह०	ह०	पी०	स०	स०	स०	का०	स०	स०
ह०	स०	ला०	पी०	पी०	पी०	स०	ह०	ह०
का०	का०	स०	ह०	स०	स०	स०	ला०	ला०
ला०	स०	स०	ह०	स०	स०	स०	स०	ला०

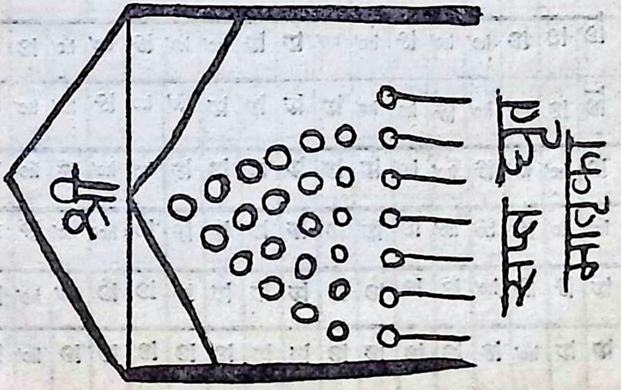

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकोनविंशति रेखात्मक सर्वतोभद्र मण्डलम्

स	स	ह	ल	ला	ल	ल	ल	स	स	ल	ल	ल	ल	ल	ह	स	स
स	क	ह	ह	ल	ल	ल	स	स	स	स	ल	ल	ल	ह	ह	क	स
ह	ह	क	ह	ह	ल	स	स	स	स	स	स	ल	ह	ह	क	ह	ह
ल	ह	ह	क	ह	ह	स	स	स	स	स	स	ह	ह	क	ह	ह	ला
ल	ल	ह	ह	क	ह	ह	स	स	स	स	ह	ह	क	ह	ह	ल	ल
ल	ल	ल	ह	ह	क	ह	ह	स	स	ह	ह	क	ह	ह	ल	ल	ल
ल	ल	स	स	ह	ह	पी	पी	पी	पी	पी	पी	ह	ह	स	स	ल	ल
ल	स	स	स	स	ह	पी	ह	ह	ह	ह	पी	ह	स	स	स	स	ल
स	स	स	स	स	स	पी	ह	ल	ल	ह	पी	स	स	स	स	स	स
स	स	स	स	स	स	पी	ह	ल	ल	ह	पी	स	स	स	स	स	स
ल	स	स	स	स	ह	पी	ह	ह	ह	ह	पी	ह	स	स	स	स	स
ल	ल	स	स	ह	ह	पी	पी	पी	पी	पी	पी	ह	ह	स	स	स	स
ल	ल	ल	ह	ह	क	ह	ह	स	स	ह	ह	क	ह	ह	ल	ल	ल
ल	ल	ह	ह	क	ह	ह	स	स	स	स	ह	ह	क	ह	ह	क	क
ल	ह	ह	क	ह	ह	स	स	स	स	स	स	ह	ह	क	ह	ह	ल
ह	ह	क	ह	ह	ल	स	स	स	स	स	स	ह	ह	ल	क	ह	ह
स	क	ह	ह	ल	ल	ल	स	स	स	स	ल	ल	ल	ह	ह	क	स
स	स	ह	ल	ल	ल	ल	ल	स	स	स	ल	ल	ल	ल	ह	स	स

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री पूर्व

अष्टादश रेखात्मकम्

॥ गौरी तिलक मण्डल ॥

कृ०	कृ०	पी०	कृ०	ह०	कृ०	स०	र०	पी०	र०	स०	क०	ह०	क०	पी०	क०	क०
क०	पी०	स०	ह०	ल०	ह०	क०	स०	पी०	स०	क०	ह०	ल०	ह०	स०	पी०	क०
पी०	स०	ह०	ल०	पी०	ल०	ह०	क०	स०	क०	ह०	ल०	पी०	ल०	ह०	स०	पी०
क०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	क०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	क०
ह०	र०	पी०	स०	कृ०	स०	पी०	र०	ह०	र०	पी०	स०	क०	स०	पी०	र०	ह०
क०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	कृ०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	क०
स०	क०	ह०	र०	पी०	र०	ह०	क०	पी०	वृ०	ह०	र०	पी०	र०	ह०	क०	स०
र०	स०	क०	ह०	र०	ह०	क०	पी०	स०	पी०	क०	ह०	र०	ह०	क०	स०	र०
पी०	पी०	स०	क०	ह०	क०	पी०	स०	र०	स०	पी०	क०	ह०	क०	स०	पी०	पी०
र०	स०	क०	ह०	र०	ह०	क०	पी०	स०	पी०	क०	ह०	र०	ह०	क०	स०	र०
स०	क०	ह०	र०	पी०	र०	ह०	क०	पी०	क०	ह०	र०	पी०	र०	ह०	क०	स०
क०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	क०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	क०
ह०	र०	पी०	स०	क०	स०	पी०	र०	ह०	र०	पी०	स०	क०	स०	पी०	र०	ह०
क०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	क०	ह०	र०	पी०	स०	पी०	र०	ह०	क०
पी०	स०	ह०	र०	पी०	र०	ह०	क०	स०	क०	ह०	र०	पी०	र०	ह०	स०	जी०
क०	पी०	स०	ह०	र०	ह०	क०	स०	पी०	स०	क०	ह०	र०	ह०	स०	पी०	क०
क०	क०	पी०	क०	ह०	क०	स०	र०	पी०	र०	स०	क०	ह०	क०	पी०	क०	क०

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रेखा—८

मरुद्गण मण्डल—२

का०	ला०	ह०	ला०	ह०	ला०	का०
ला०	पी०	ला०	ह०	ला०	पी०	ला०
ह०	ला०	पी०	ला०	पी०	ला०	ह
स०	ह०	ला०	स०	ला०	ह०	स
ह०	ला०	पी०	ला०	पी०	ला०	ह०
ला०	पी०	ला०	ह०	ला०	पी०	ला
का०	ला०	ह०	स०	ह०	ला०	क

एकोन पंचाशत् मरुद्गण मण्डल

का०	स०	पी०	ला०	पी०	स०	का०
स	ला	ह	स	ह	ल०	स०
पी	ह०	ला०	पी०	ला०	ह०	पी०
ला	स०	पी०	ह	पी०	स०	ला०
पी०	ह	ला०	पी	ला	ह०	पी०
स	ला०	ह०	स०	ह०	ला	स०
क०	स०	पी०	ला०	पी०	स०	का०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१० रेखात्मक

एकाशीतिपद वास्तु मण्डल

ह०	ला०	पी०	क०	स०	क०	पी०	ला०	ह
ला०	पी०	का०	स०	ह०	स०	का०	पी०	ला०
पी०	का०	स	ह०	ला०	ह	स०	का०	पी०
क०	स०	ह०	पी०	पी०	पी०	ह०	स०	का
स०	ह०	ला०	पी०	पी०	पी०	ला०	ह०	स
का०	स०	ह०	पी०	पी०	पी०	ह०	स०	क
पी०	क०	स०	ह०	ला०	ह०	स०	का०	पी०
ला०	पी०	का०	स०	ह०	स०	का०	पी०	ला०
ह०	ला०	पी०	का०	स०	का०	पी०	ला०	ह

वास्तु मण्डल द्वितीय प्रकार

ला०	पी०	पी०	पी०	ला०	स०	का०	का०	धूम्रवर्ण
पी०	स०	पी०	पी०	ला०	स०	क०	स०	ला०
पी०	पी०	स०	का०	का०	का०	ला०	स०	स०
का०	का०	ला०	पी०	पी०	पी०	स०	पी०	पी०
स०	स०	ला०	पी०	पी०	पी०	स०	का०	का०
का०	का०	ला०	पी०	पी०	पी०	स०	ला०	ला०
ला०	ला०	ला०	स०	स०	स०	ला०	का०	का०
ला०	ला०	का०	पी०	स०	ला०	स०	स०	पी०
ला०	पी०	का०	पी०	स०	ला०	स०	ला०	ला

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्लिंगतोभद्र मण्डल (परिधि रहितम्)   पूर्व   अष्टादश रेखात्मकम्

स०	स०	ह०	ला०	ला०	ला०	क०	क०	क०	क०	क०	ला०	ला०	ला०	ह०	स०	स०
स०	का०	ह०	ह०	ल०	पी०	स०	क०	क०	का०	स०	पी०	ला०	ह०	ह०	क०	स०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	क०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	क०	क०	क०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ला०
ल०	ल०	ह०	ह०	पी०	पी०	क०	क०	क०	क०	क०	पी०	पी०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	पी०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	क०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	पी०	ल०
क०	स०	स०	स०	क०	ल०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ल०	क०	स०	स०	स०	क०
क०	क०	स०	क०	क०	ल०	पी०				पी०	ल०	क०	क०	स०	क०	क०
क०	क०	क०	क०	क०	क०	पी०				पी०	क०	क०	क०	क०	क०	क०
क०	क०	स०	क०	क०	ल०	पी०				पी०	ला०	क०	क०	स०	क०	क०
क०	स०	स०	स०	क०	ल०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ला०	क०	स०	स०	स०	क०
ल०	पी०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	क०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	पी०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	पी०	पी०	क०	क०	क०	क०	क०	पी०	पी०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	क०	क०	क०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	क०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
स०	क०	ह०	ह०	ल०	पी०	स०	क०	क०	क०	स०	पी०	ल०	ह०	ह०	क०	स०
स०	स०	ह०	ल०	ल०	ल०	क०	क०	क०	क०	क०	ल०	ल०	ल०	ह०	स०	स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

एकोनविंशति रेखात्मकं सर्वतोभद्र मण्डलम्

स०	स०	ह०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	ह०	स०	स०
स०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	स०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०
ल०	ल०	स०	स०	ह०	ह०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ह०	ह०	स०	स०	ल०	ल०
ल०	स०	स०	स०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	स०	स०	स०	ल०
स०	स०	स०	स०	स०	स०	पी०	ल०			ल०	पी०	स०	स०	स०	स०	स०	स०
स०	स०	स०	स०	स०	स०	पी०	ल०			ल०	पी०	स०	स०	स०	स०	स०	स०
ल०	स०	स०	स०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	स०	स०	स०	ल०
ल०	ल०	स०	स०	ह०	ह०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ह०	ह०	स०	स०	ल०	ल०
ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
स०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	स०
स०	स०	ह०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	ह०	स०	स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्लिंगतोभद्रमण्डल १८ रेखात्मक

स	स	ह	ला	ला	ला	का	का	का	का	का	ला	ला	ला	ह	स	स
स	का	पी	ह	ला	पी	स	का	का	का	स	पी	ला	ह	पी	का	स
ह	पी	का	पी	ह	स	स	स	का	स	स	स	ह	पी	श	पी	ह
ला	ह	पी	का	पी	ह	स	का	का	का	स	ह	पी	का	पी	ह	ला
ला	ला	ह	पी	पी	पी	का	का	का	का	का	पी	पी	पी	ह	ला	ला
ला	पी	स	ह	पी	ला	ला	ला	ला	ला	ला	ला	पी	ह	स	पी	ला
का	स	स	स	का	ला	पी	पी	पी	पी	पी	ला	का	ह	स	स	का
का	का	स	का	का	ला	पी	ला	ला	स	पी	ला	का	का	स	का	का
का	का	का	का	का	का	पी	ला	ला	स	पी	का	का	का	का	का	का
का	का	स	का	का	ला	पी	ला	ला	स	पी	ला	का	का	स	का	का
का	स	स	स	का	ला	पी	पी	पी	पी	पी	ला	का	स	स	स	का
ला	पी	स	ह	पी	ला	ला	ला	का	ला	ला	ला	पी	ह	स	पी	ला
ला	ला	ह	पी	पी	पी	का	का	का	का	का	पी	पी	पी	ह	ला	ला
ला	ह	पी	का	पी	ह	स	का	का	का	स	ह	पी	का	पी	ह	ला
ह	पी	का	पी	ह	स	स	स	का	स	स	स	ह	पी	का	पी	ह
स	का	पी	ह	ला	पी	स	का	का	का	स	पी	ला	ह	पी	का	स
स	स	ह	ला	ला	ला	का	का	का	का	का	ला	ला	ला	ह	स	स

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१३ त्रयोदश रेखात्मकम्

एकलिंगतोभद्र मण्डल (गौरी तिलक)   पूर्व

स०	स०	ह०	ला०	ला०	ला०	ला०	ला०	ला०	ह०	स०	स०
स०	स०	ह०	ह०	ला०	ला०	ला०	ला०	ह०	ह०	स०	स०
ह०	ह०	पी०	ह०	ह०	ला०	ला०	ह०	ह०	पी०	ह०	ह०
ला०	ह०	ह०	स०	ह०	पी०	पी०	ह०	स०	ह०	ह०	ला०
ला०	ला०	का०	पी०	पी०	का०	का०	पी०	ह०	ह०	ला	ला
ला०	ला०	ला०	पी०	पी०	का०	का०	पी०	पी०	ला०	ला०	ला
ला०	ला०	ला०	का०	का०	का०	का०	का०	का०	ला०	ला०	ला०
ला०	ला०	ह०	ह०	का०	का०	का०	का०	ह०	ह०	ला०	ला०
ला०	ह०	ह०	स०	ह०	का०	का०	ह०	स०	ह०	ह०	ला०
ह०	ह०	स०	ह०	ह०	का०	का०	ह०	ह०	स०	ह०	ह०
स०	स०	ह०	ह०	का०	का०	का०	का०	ह०	ह०	स०	स०
स०	स०	ह०	का०	का०	का०	का०	का०	का०	ह०	स०	स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रेखा—८

मरुद्गण मण्डल—२

का०	ला०	ह०	ला०	ह०	ला०	का०
ला०	पी०	ला०	ह०	ला०	पी०	ला०
ह०	ला०	पी०	ला०	पी०	ला०	ह
स०	ह०	ला०	स०	ला०	ह०	स
ह०	ला०	पी०	ला०	पी०	ला०	ह०
ला०	पी०	ला०	ह०	ला०	पी०	ला
का०	ला०	ह०	स०	ह०	ला०	क

एकोन पंचाशत् मरुद्गण मण्डल

का०	स०	पी०	ला०	पी०	स०	का०
स	ला	ह	स	ह	ल०	स०
पी	ह०	ला०	पी०	ला०	ह०	पी०
ला	स०	पी०	ह	पी०	स०	ला०
पी०	ह	ला०	पी	ला	ह०	पी०
स	ला०	ह०	स०	ह०	ला	स०
क०	स०	पी०	ला०	पी०	स०	का०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१० रेखात्मक

एकाशीतिपद वास्तु मण्डल

ह०	ला०	पी०	क०	स०	क०	पी०	ला०	ह
ला०	पी०	का०	स०	ह०	स०	का०	पी०	ला०
पी०	का०	स	ह०	ला०	ह	स०	का०	पी०
क०	स०	ह०	पी०	पी०	पी०	ह०	स०	का
स०	ह०	ला०	पी०	पी०	पी०	ला०	ह०	स
का०	स०	ह०	पी०	पी०	पी०	ह०	स०	क
पी०	क०	स०	ह०	ला०	ह०	स०	का०	पी०
ला०	पी०	का०	स०	ह०	स०	का०	पी०	ला०
ह०	ला०	पी०	का०	स०	का०	पी०	ला०	ह

वास्तु मण्डल द्वितीय प्रकार

ला०	पी०	पी०	पी०	ला०	स०	का०	का०	धूम्रवर्ण
पी०	स०	पी०	पी०	ला०	स०	क०	स०	ला०
पी०	पी०	स०	का०	का०	का०	ला०	स०	स०
का०	का०	ला०	पी०	पी०	पी०	स०	पी०	पी०
स०	स०	ला०	पी०	पी०	पी०	स०	का०	का०
का०	का०	ला०	पी०	पी०	पी०	स०	ला०	ला०
ला०	ला०	ला०	स०	स०	स०	ला०	का०	का०
ला०	ला०	का०	पी०	स०	ला०	स०	स०	पी०
ला०	पी०	का०	पी०	स०	ला०	स०	ला०	ला

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्लिंगतोभद्र मण्डल (परिधि रहितम्) पूर्व अष्टादश रेखात्मकम्

स०	स०	ह०	ला०	ला०	ला०	क०	क०	क०	क०	क०	ला०	ला०	ला०	ह०	स०	स०
स०	का०	ह०	ह०	ल०	पी०	स०	क०	क०	का०	स०	पी०	ला०	ह०	ह०	क०	स०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	क०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	क०	क०	क०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ला०
ल०	ल०	ह०	ह०	पी०	पी०	क०	क०	क०	क०	क०	पी०	पी०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	पी०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	क०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	पी०	ल०
क०	स०	स०	स०	क०	ल०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ल०	क०	स०	स०	स०	क०
क०	क०	स०	क०	क०	ल०	पी०				पी०	ल०	क०	क०	स०	क०	क०
क०	क०	क०	क०	क०	क०	पी०				पी०	क०	क०	क०	क०	क०	क०
क०	क०	स०	क०	क०	ल०	पी०				पी०	ला०	क०	क०	स०	क०	क०
क०	स०	स०	स०	क०	ल०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ला०	क०	स०	स०	स०	क०
ल०	पी०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	क०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	पी०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	पी०	पी०	क०	क०	क०	क०	क०	पी०	पी०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	क०	क०	क०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	क०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
स०	क०	ह०	ह०	ल०	पी०	स०	क०	क०	क०	स०	पी०	ल०	ह०	ह०	क०	स०
स०	स०	ह०	ल०	ल०	ल०	क०	क०	क०	क०	क०	ल०	ल०	ल०	ह०	स०	स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकोनविंशति रेखात्मकं सर्वतोभद्र मण्डलम्

स०	स०	ह०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	ह०	स०	स०
स०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	स०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०
ल०	ल०	स०	स०	ह०	ह०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ह०	ह०	स०	स०	ल०	ल०
ल०	स०	स०	स०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	स०	स०	स०	ल०
स०	स०	स०	स०	स०	स०	पी०	ल०			ल०	पी०	स०	स०	स०	स०	स०	स०
स०	स०	स०	स०	स०	स०	पी०	ल०			ल०	पी०	स०	स०	स०	स०	स०	स०
ल०	स०	स०	स०	स०	ह०	पी०	ल०	ल०	ल०	ल०	पी०	ह०	स०	स०	स०	स०	ल०
ल०	ल०	स०	स०	ह०	ह०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	पी०	ह०	ह०	स०	स०	ल०	ल०
ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	स०	स०	स०	स०	स०	स०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
स०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	स०
स०	स०	ह०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	स०	स०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	ह०	स०	स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्लिंगतोभद्रमण्डल १८ रेखात्मक

स	स	ह	ला	ला	ला	का	का	का	का	का	ला	ला	ला	ह	स	स
स	का	पी	ह	ला	पी	स	का	का	का	स	पी	ला	ह	पी	का	स
ह	पी	का	पी	ह	स	स	स	का	स	स	स	ह	पी	श	पी	ह
ला	ह	पी	का	पी	ह	स	का	का	का	स	ह	पी	का	पी	ह	ला
ला	ला	ह	पी	पी	पी	का	का	का	का	का	पी	पी	पी	ह	ला	ला
ला	पी	स	ह	पी	ला	ला	ला	ला	ला	ला	ला	पी	ह	स	पी	ला
का	स	स	स	का	ला	पी	पी	पी	पी	पी	ला	का	ह	स	स	का
का	का	स	का	का	ला	पी	ला	ला	स	पी	ला	का	का	स	का	का
का	का	का	का	का	का	पी	ला	ला	स	पी	का	का	का	का	का	का
का	का	स	का	का	ला	पी	ला	ला	स	पी	ला	का	का	स	का	का
का	स	स	स	का	ला	पी	पी	पी	पी	पी	ला	का	स	स	स	का
ला	पी	स	ह	पी	ला	ला	ला	का	ला	ला	ला	पी	ह	स	पी	ला
ला	ला	ह	पी	पी	पी	का	का	का	का	का	पी	पी	पी	ह	ला	ला
ला	ह	पी	का	पी	ह	स	का	का	का	स	ह	पी	का	पी	ह	ला
ह	पी	का	पी	ह	स	स	स	का	स	स	स	ह	पी	का	पी	ह
स	का	पी	ह	ला	पी	स	का	का	का	स	पी	ला	ह	पी	का	स
स	स	ह	ला	ला	ला	का	का	का	का	का	ला	ला	ला	ह	स	स

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१३ त्रयोदश रेखात्मकम्

एकलिंगतोभद्र मण्डल (गौरी तिलक) पूर्व

स०	स०	ह०	ला०	ला०	ला०	ला०	ला०	ला०	ह०	स०	स०
स०	स०	ह०	ह०	ला०	ला०	ला०	ला०	ह०	ह०	स०	स०
ह०	ह०	पी०	ह०	ह०	ला०	ला०	ह०	ह०	पी०	ह०	ह०
ला०	ह०	ह०	स०	ह०	पी०	पी०	ह०	स०	ह०	ह०	ला०
ला०	ला०	का०	पी०	पी०	का०	का०	पी०	ह०	ह०	ला	ला
ला०	ला०	ला०	पी०	पी०	का०	का०	पी०	पी०	ला०	ला०	ला
ला०	ला०	ला०	का०	का०	का०	का०	का०	का०	ला०	ला०	ला०
ला०	ला०	ह०	ह०	का०	का०	का०	का०	ह०	ह०	ला०	ला०
ला०	ह०	ह०	स०	ह०	का०	का०	ह०	स०	ह०	ह०	ला०
ह९	ह०	स०	ह०	ह०	का०	का०	ह०	ह०	स०	ह०	ह०
स०	स०	ह०	ह०	का०	का०	का०	का०	ह०	ह०	स०	स०
स०	स०	ह०	का०	का०	का०	का०	का०	का०	ह०	स०	स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकलिंगतोभद्रमण्डलम् (परिधि रहितम्)
त्रयोदश रेखात्मकम् पूर्व

स०	स०	ह०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	ल०	ह०	स०	स०
स०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	स०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	पी०	पी०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	पी०	क०	क०	पी०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ल०	ल०	पी०	पी०	क०	क०	पी०	पी०	ल०	ल०	ल०
ल०	ल०	ल०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	ल०	ल०	ल०
ल०	ल०	ह०	ह०	क०	क०	क०	क०	ह०	ह०	ल०	ल०
ल०	ह०	ह०	क०	ह०	क०	क०	ह०	क०	ह०	ह०	ल०
ह०	ह०	क०	ह०	ह०	क०	क०	ह०	ह०	क०	ह०	ह०
स०	क०	ह०	ह०	क०	क०	क०	क०	ह०	ह०	क०	स०
स०	स०	ह०	क०	क०	क०	क०	क०	क०	ह०	स०	स०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री हरिः ॥

श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री गुरवे नमः श्रीमातृ पितृ चरणकमलेभ्यो नमः ।

॥ शाण्डिल्य सर्वदेव पूजा पद्धति ॥

प्रणम्य विघ्नेश गुरूं च शारदाम्
पितामहं शंकर रूपिणं सदा ॥
भजामि नित्यं पितरौ च पादौ
करोमि देवार्चन पद्धतिं मुदाम् ॥ १ ॥
बर्धमाने जनपदे रानीगंज सुशोभने
सर्वदा निवसाम्यत्र करोमि हरि चिन्तनम् ॥ २ ॥
सर्वेषामुपकारार्थं रचिता पद्धति मया
सुगमा सरला एषा स्वीकुर्वन्तु विपश्चिता ॥ ३ ॥
पुष्पांजलि मया भक्त्या श्रीपितृ चरणार्पिता
कर्मणानेन मे देवः पितरः प्रीयतामिति ॥ ४ ॥
शत चण्डी विधिं पूर्णां सर्व देवार्चन क्रियाम्
श्रीराम मिश्र शाण्डिल्यस्तनोति विदुषां मुदे ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुदिने सुमुहूर्ते गृहतीर्थ पुण्य क्षेत्रादौ यथा शक्ति मण्डपादिकरणम् । यजमानः प्रातः काले संध्यावन्दनादि कर्म समाप्य—अर्चन देशमागत्य रक्षा दीपं प्रज्वाल्य कुशासने प्राङ्मुखउदङ् मुखो वा उपविश्य स्व दक्षिणे कम्बलासने स्वपत्नीं चोपवेश्य ग्रन्थिबन्धनं तिलकं कुंकुमादिना च कारयित्वा आचमनं कुर्यात् ।। ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः इति त्रिराचम्य हस्तप्रक्षालनम् ॐ गोविन्दाय नमः ।।

पृथिवी पूजनम् ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसने विनियोगः । प्रार्थना—पृथ्वी त्वया धृता लोकाः देवी त्वं विष्णु नाधृता त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् । भूम्यै नमः गन्धाक्षतादिभिः पूजयेत् । पवित्र धारणम् । ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः । तस्यत्ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् । इति मंत्रेण धृत्वा ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानोव्वीरान्नुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे। इति मंत्रेण—शिखां वद्ध्वा ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः । इति पूजन सामग्रीमात्मानं च संप्रोक्ष्य—अष्टदले गौरी गणेशं संस्थाप्य—भगवत्स्मरणम् कुर्यात्—ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः ॐ विष्णवे नमः ॐ मधुसूदनाय नमः ॐ त्रिविक्रमाय नमः ॐ वामनाय नमः ॐ श्रीधराय नमः ॐ हृषीकेशाय नमः ॐ पद्मनाभाय नमः ॐ दामोदराय नमः ॐ संकर्षणाय नमः ॐ वासुदेवाय नमः ॐ प्रद्युम्नाय नमः ॐ अनिरुद्धाय नमः ॐ पुरुषोत्तमाय नमः ॐ अधोक्षजाय नमः ॐ नारसिंहाय नमः ॐ अच्युताय नमः ॐ जनार्दनाय नमः ॐ उपेन्द्राय नमः ॐ हरये नमः ॐ कृष्णाय नमः । इति स्मृत्वा शान्ति पाठं पठेत् । ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधे असन्न प्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥ देवानांभद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳬं रातिरभिनो निवर्त्तताम् । देवानाᳬं सख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीव से ॥२॥ तान्पूर्व्वया निविदाहूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् । अर्य्यमणं वरुणᳬं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥ तन्नोव्वातोमयोभुव्वातुभेषजं तन्मातापृथिवी तत्पिताद्यौः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्णया युवम् ।।४।। तमीशान ञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषानो यथाव्वेदसाम सद्वृधे रक्षिता वायुरदब्धः स्वस्तये ।।५।। स्वस्तिनःऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्व वेदाः । स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु ।।६।। पृषदश्वाप्ररुतः पृश्नि मातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूर चक्षसो व्विश्वेनो देवाःऽअवसा-गमन्निह ।।७।। भद्रं कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्ष-भिर्य्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाᳬ सस्तनूभिर्व्व्य शेमहि देवहितं य्यदायुः ।।८।। शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवा यत्रानश्चक्रा जरसन्त-नूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरोभवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषता-युर्ग्गन्तोः ।।९।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः । व्विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्ज्जात मदितिर्ज्ज-नित्वम् ।।१०।। द्यौᳬ शान्तिरन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवीशा-न्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे-देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वᳬ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।११।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ।।१२।। गणा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधीपतिꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् ॥१३॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥ इति पठेत् ॥ ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः। इष्ट देवताभ्यो नमः। कुल देवताभ्यो नमः। ग्राम देवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। इति प्रणम्य पुष्पाण्यादाय

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः ॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥२॥
विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥३॥
शुक्लाम्बर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न [वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्व विघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥५॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते ॥६॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥७॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव
ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव
लक्ष्मीपते तेंघ्रि युगं स्मरामि ॥८॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दी वर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥९॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥१०॥
अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योग क्षेमं वहाम्यहम् ॥११॥
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥१२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वेष्वारंभ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ॥१३॥
विश्वेषं माधवं ढुंढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानि मणिकर्णिकाम् ॥१४॥
विनायकं गुरूं भानु ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतिं प्रणम्यादौ सर्व कार्यार्थ सिद्धये ॥१५॥

इति नमस्कृत्य० संकल्पं कुर्यात्—दक्षिणहस्ते जलगन्धाक्षतपुष्पद्रव्याण्यादाय ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञयाप्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपहरार्द्धे एक पंचाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नोद्वितीयेयामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये सप्तमेवैवस्वत मन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलि संज्ञानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे तथा पंचाशत्कोटि योजनविस्तीर्ण भूमण्डलांतर्गत सप्तद्वीप मध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे तत्रापि नवखण्डानां मध्ये नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे भरतखण्डे तत्रापि परम पवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक क्षेत्रे श्री गंगायमुनयोर्महानद्योरमुक दिग्भागे नर्मदाया अमुक दिग्भागे अमुक प्रदेशे देव ब्राह्मणानाम् सन्निधौ श्रीमन्नृ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पति वीरविक्रमादित्य राज्यातीत अमुक संख्या परिमिते प्रवर्तमान संवत्सरे प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्ये अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुक राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान स्थितेषुसत्सु एवं ग्रहगुणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोऽमुक शर्मा सपत्निकोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तये अस्मिन् यज्ञकर्मणि पुण्याहे मम कलत्रादिभिः सह जन्मराशे सकाशात् नाम राशे सकाशाद्वा जन्मलग्नात् वर्ष लग्नात् गोचराद्वाये केचिच्चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्ट स्थानस्थिताः क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थम् सर्वदा तृतीयैकादश शुभ स्थान स्थितवदुत्तम फलप्राप्त्यर्थं तथा दशान्तर्दशोपदशामासदशा दिनदशा जनित पीडाऽल्पायुराधिदैवाधिभौतिकाध्यात्मिक जनित क्लेश निवृति पूर्वक शरीरारोग्यार्थं च परमैश्वर्यं प्राप्त्यर्थं विपुलधनधान्यपुत्रपौत्रादि वृद्ध्यर्थं नानाविधकर्मोपार्जित बन्धक विमोचनार्थम् आजन्मोपार्जित सुकृत मंगलाभि वृद्धयर्थं सर्वत्र प्रख्यात कीर्ति शत्रु पराभव सदभिष्ट सिद्धयर्थं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्मी चिरकाल संरक्षणार्थं व्यापारे बहुद्रव्य प्राप्त्यर्थं राजकृतपीडा निवारणार्थं राजद्वारे सभायां यशो विजयादि लाभार्थं च अमुक कर्माहं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये इति संकल्प्य० पुनः द्रव्याण्यादाय—तदंगत्वेन निर्विघ्नता परि-समाप्त्यर्थं आदौ श्री गणेशाम्बिकयोः पूजनम्—स्वस्तिपुण्याह-वाचनम्—मातृका पूजनम्—नान्दीश्राद्धम्—रक्षाभिधानम्—आचार्यादि वरणम्—कलश पूजनं च करिष्ये ॥

तत्रादौ दीप कर्मपात्रार्चनं च करिष्ये ।

॥ भैरव प्रणाम ॥

ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम्
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसी ॥ इति
पुष्पाक्षतादीनि समर्प्य नमस्कुर्यात्

॥ कर्मपात्र पूजा ॥

कर्मपात्रे किंचित् गांगोदकं प्रक्षिप्य वारिणा पूरयित्वा गन्धाक्षतपुष्पै रभ्यर्च्य प्रार्थयेत् ।

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अस्मिन् कलशे सर्वाणि तीर्थान्यावाहयामि स्थापयामि--

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्करोमि—

प्रार्थना—नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय
सुश्वेत हाराय सुमंगाय
सुपाशहस्ताय झषासनाय
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥

इति प्रार्थ्य कलशोदकेन पूजा संभारान् आत्मानं च ॐ—अपवित्रेति मंत्रेण संप्रोक्षयेत् ।

॥ दीप पूजनम् ॥

ॐ वह्नि दैवत्याय दीप पात्राय नमः इति पात्रं पूजयित्वा—ईशान भागे—दीपं प्रज्वाल्य अक्षतपुंजोपरि निधाय ॐ चन्द्रमा मनसो० आवाह्य प्रार्थयेत्—

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत ।
यावत्कर्म समाप्तिस्यात्तावदत्र स्थिरोभव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थ देवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि—

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकार निवारकः
इमां मया कृतां पूजां गृह्णन् तेजो विवर्द्धय ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री सूर्य ध्यानम् ॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥ इतिध्यात्वा—

ताम्रपात्रे रक्तचन्दनपुष्पाक्षतादिकृत्वा ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो— तेजोराशि जगत्पते। अनुकंपय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

त्रिवारमर्घ्यं दत्वा प्रणमेत् ॥

॥ अथ श्री गणेशाम्बिकयोः पूजनम् ॥

ताम्रपात्रे रक्तवर्णाक्षतैः स्वस्तिकं वा रक्तचन्दनेन विलिख्य तदुपरि फलमयं गणेशं गौरीं चावाहयेत् ।

ॐ एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्रः
समस्त विघ्नौघ विनाशदक्षः ।
मांगल्य पूजा प्रथमं प्रधानः
गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ भूर्भुवः स्वः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋद्धि सिद्धि सहिताय महागणाधिपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि-पुनः

हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञᳪ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइहमादयन्तामो३ प्रतिष्ठ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमार्चायै मामहेति च कश्चन ॥

श्रीगणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम् इति प्रतिष्ठाप्य—

॥ आसन दानम् ॥

ॐ पुरुष एवेदᳪ सर्वं यद्भुतं यच्च भाव्यम्
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः
आसनं समर्पयामि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ पाद्यम् ॥

ॐ एतावानस्य महीमा तो ज्यायांश्च पुरूषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

श्रीगणे० पाद्यं सम०

॥ अर्घ्यम् ॥

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ्व्यक्राम त्साशनानशने अभि ॥

श्रीगणे० अर्घम् सम०

॥ आचमनीयम् ॥

ॐ ततो विराड़ जायत विराजो अधि पूरूषः ।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥

श्रीगणे० आ० सम०

॥ स्नानम् ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्रामाश्चये ॥

श्रीगणे० स्ना० सम०

॥ पय स्नानम् ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ श्रीग० पय० स्ना० सम० शुद्धस्नानम्—

॥ दधि स्नानम् ॥

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ᳪ षितारिषत् ॥ श्रीगणे० दधि स्ना० सम० पुनः शु० स्नानम्

॥ घृत स्नानम् ॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतव्वसांव्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ श्रीगणे० घृत० स्ना० सम० पुनः शु० स्ना०

॥ मधु स्नानम् ॥

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ᳪ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ ऽ अस्तु सूर्यः। माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः। श्रीगणे० मधु० स्ना० सम० पुनः शु० स्नानम्।

॥ शर्करा स्नानम् ॥

ॐ अपा ᳪ रसमुद्वयस ᳪ सूर्ये सन्त ᳪ समाहितम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपा७ँ रसस्ययो रसस्तं व्वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसी-न्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्टतमम् ॥

श्रीगणे० शर्क० स्ना० सम० पुनः शु० स्नानम्

॥ स्नानम् ॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः७ँश्येतः श्येताक्षोरूणस्तेरूद्द्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्द्रा-नभोरूपाः पार्ज्जन्या७ँ ॥ श्रीगणे० शु० स्ना० सम०

॥ पंचामृत स्नानम् ॥

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सोऽदेशे भवत्सरित्। श्रीगणे० पंचा० स्ना० सम० पुनः शु० स्ना०।

॥ वस्त्रम् ॥

ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्स ऽ उश्रेयान्भवति जाय-मानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

श्रीगणे० वस्त्रं० सम०

॥ उत्तरीय वस्त्रम् ॥

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः। व्वासोऽअग्नेव्विश्वरूप७ँ संव्ययस्व व्विभावसोः ॥ श्रीगणे० उ० व० सम० आचमनम् सम०।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ यज्ञोपवितम् ॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रयम् प्रतिमुंच शुभं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि। श्रीगणे० यज्ञो० सम०

॥ गन्धम् ॥

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत। श्रीगणे० गन्ध० सम०

॥ अक्षतानि ॥

ॐ अक्षन्ननीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत । अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रानविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी । श्रीगणे० अक्ष० सम० ।

॥ पुष्पाणि ॥

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वाऽइवसजि त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः । श्रीगणे० पुष्पा० सम० ।

॥ दुर्वाङ्कुराणि ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषऽँ परूषस्परि । एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ श्रीगणे० दूर्वा० सम० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अवीरं-सुगन्धितैलम् ॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येतिबाहुं ज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नोव्विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाᳬं सं परिपातु व्विश्वतः। श्रीगणे० सुग० सम० ।

॥ सिन्दूरम् ॥

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियᳬं पतयन्ति यह्वाᳬं। घृतस्य धाराऽअरुषोनव्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः। श्रीगणे० सिन्दू० सम० ।

॥ धूपम् ॥

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं य्योस्मान्धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितमᳬं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ श्रीगणे० धूपमाघ्रा० ।

अथवा ॐ वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसांगिरस्वद्रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुपेन छन्दसांगिरस्वद्विश्वेत्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसांगिरस्वदिन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु ॥ धूपमा० ।

॥ दीपम् ॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूर्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

श्रीगणे० दी० दर्श०

अथवा—ॐ चन्द्रमा मनसो जात। इति

॥ नैवेद्यम् ॥

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ२अकल्पयन्॥

श्रीगणे० नैवे० सम० आच० सम०

अन्य—ॐ ये देवासोदिव्येकादशस्थ पृथिव्या मध्येकादशस्थ।
अप्सुक्षितौमहिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्॥

अन्य—ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारन्तारिषऽउर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

अन्य—ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा समानाय स्वाहा
अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥

॥ करोद्वर्तनम् ॥

ॐ अꣳशुनाते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः
गन्धस्ते सोममवतुमदाय रसो ऽ अच्युत

श्रीगणे० करोद्व० सम०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ताम्बूलम् ॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञमतन्वत
वसन्तोऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ।
अन्य—ॐ उतस्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवे रनुवाति प्रगर्द्धितः ।
श्येनस्येवद्व्रजतोऽअंक सम्परि दधिक्राव्णः सहोर्ज्जा तरित्रतः ॥
श्रीगणे० ताम्बू० सम०

॥ ऋतुफलानि ॥

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ᳪ हसः ॥

॥ हिरण्यम् ॥

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम ॥
अन्य—ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याच दक्षिणा ।
तदग्निर्वैश्व कर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ॥
अन्य—ॐ दक्षिणावतामिदमानि चित्रा दक्षिणावतां दिवि सूर्यासः ।
दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते दक्षिणावन्त प्रतिरन्त आयुः ॥
श्रीगणे० दक्षि० सम०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ आभूषणम् ॥

ॐ स्वर्ण धर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा। स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा ॥

श्रीगणे० आभू० सम०

॥ अथ श्री गणेशाभिषेकः ॥

ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्य शेमहि देवहितं य्यदायुः॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्योंऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्द्दधातु॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलं कर्ताऽसि। त्वमेव केवलं धर्ताऽसि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अवत्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अवचोर्ध्वात्तात्। अवाध-स्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ् मयः। त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमय स्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयिलयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्यदानि। त्वं गुण त्रयातीतः। त्वं देह त्रयातीतः। त्वं काल त्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्ति त्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुः त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रः त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरोऽर्द्धेन्दु लसितं तारेण रूद्धं एतत्तव मनु स्वरूपम्। गकारः पूर्वं रूपम्। अकारो मध्यमम् रूपम्। अनुस्वारश्चान्त्य रूपम्। विन्दुरुत्तर रूपम्। नादः संधानम्। संहिता संधिः सैषा गणेश विद्या। गणिक ऋषिः निचृद् गायत्रीछन्दः गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एक दन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥ इत्यभिषेकः। अभिषेकं कृत्वा—दशमोदकान् दद्यात्। पश्चात् एक विंशति दूर्वांकुरान् गृहीत्वा प्रति नाम दूर्वांकुर युग्मं गन्ध युतान् समर्प्य अन्ते सर्वनामभिः एकां समर्पयेत्—तद्यथा—ॐ गणाधिप नम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तेऽस्तु। ॐ उमापुत्र नमस्तेऽस्तु। अघ नाशन नमस्तेऽस्तु। ॐ विनायक नमस्तेऽस्तु। ॐ ईश पुत्र नमस्तेऽस्तु। ॐ सर्व-सिद्धि प्रदायक नमस्तेऽस्तु। ॐ एकदन्त नमस्तेऽस्तु। ॐ इभवक्र नमस्तेऽस्तु। ॐ मूषक वाहन नमस्तेऽस्तु। ॐ कुमार गुरवे तुभ्यं नमोऽस्तु। ॐ चतुर्थीश नमोऽस्तुते। इति० पश्चात् ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति मंत्रेण आरोपयेत् सर्वाणि।

॥ आरार्तिकम् ॥

ॐ ज्वाला मालिन्यै नमः ॐ आरार्तिक्यै नमः इति संपूज्य ॐ आरात्रि पार्थिवᳬ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदाᳬसि बृहती व्वितिष्ठ सः ऽआत्वेषं वर्त्तते तमः॥ ॐ इदᳬ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशव्वीरᳬ सर्व गणᳬ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि अग्निः प्रजाम्ब-हुलाम्मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽअस्मासुधत्त। ॐ अग्निर्द्देवता व्वातो देवता० ॐ कर्पूर गौरम्०।

॥ पुष्पांजलिः ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुर्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्या वसन्। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। संबाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः॥

॥ प्रदक्षिणा ॥

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति० यानि कानि च पापानि
पदे पदेभ्यः परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि फलं ददाति।
तां सर्व पापक्षय हेतु भूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥

॥ विशेषार्घ्यम् ॥

पात्रे जलगन्धपुष्पाक्षतदूर्वादि द्रव्यं प्रक्षिप्य हस्ताभ्यां गृहीत्वा---

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक रक्षक
भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातर कृपा सिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरदत्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थदः
अनेन सफलाऽर्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम

॥ प्रार्थना ॥

सिन्दूर पूर परिशोभित पूर्णशुण्डम्
श्रीकुण्डतुल्य युगकुण्डलमण्डि गण्डम् ।
तुण्डेन विघ्नभय काननभंग चण्डम्
वन्दे महेश गिरिजा महिमांशु पिण्डम् ॥१॥
गलद्दान गण्डं मिलद्भृंग खण्डम्
चलच्चारु शुण्डं जगत्प्राण शौण्डम् ।
लसद्दन्त काण्डं विपद्भंग चण्डम्
शिव प्रेम पिण्डं भजे वक्र तुण्डम् ॥२॥
आनन्दरूप करुणाकर विश्वबन्धो
सन्तापचन्द्र भव वारिधि भद्रसेतो ।
हे विघ्नमृत्यु दलनामृत सौख्य सिन्धो
श्रीमन् विनायक तवांघ्रि युगं नताःस्मः ॥३॥
गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रम्
बृहदुदरमशेषं भूतिराजं पुराणम्
अमरवर सुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशम्
पशुपति सुतमीशं विघ्नराजं नमामि ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गजाननं चारु विशाल नेत्रम्
मौंजीधरं मूषक वाहनं च ।
चतुर्भुजं चंचल युग्यकर्णम्
गणाधिपं शंभु सुतं नमामि ।।५।।
विघ्नेश्वराय वरदाय० ।।६।।
भक्तार्ति नाशन० ।।७।।
त्वां विघ्न शत्रुदलनेति वरप्रदेति
भक्त प्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ।
विद्या प्रदेत्यघ हरेति च येस्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ।।८।।
लम्बोदरं परम सुन्दर० ।।६।।

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।।
शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ।।
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणतास्मताम् ।।
देवि प्रपन्नार्ति हरे०
त्वं वैष्णवी०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वभक्त वत्सलेऽनघे सदापवर्ग मोक्षदे
दरिद्र दुःख हारिणि त्रिलोक शंकरीश्वरी
भवानि भीम अम्बिके प्रचण्ड तेज उज्ज्वले
भुजा कलाप मण्डिते नमोस्तुते महेश्वरि ॥
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम् इति

॥ अथ स्वस्तिपुण्याहवाचनम् । कलश स्थापनम् । वरुणपूजनम् ॥

(तत्रैकं पूजांगमैशानभागस्थे कलशे, द्वितीये पुण्याहवाचनांग सन्निहिते कलशे वरुण पूजनम्, इत्युभयमपि सौकर्यायैक तंत्रेण कर्तव्यम्) कलश पूजनम् अग्नि स्थापनान्तरं भवति किन्तु सौकर्याय लिखितमिति दिक । ततः कुंकुमादिना भूमौ अष्टदलं कृत्वा—

॥ तत्रादौ भूमि स्पर्शनम् ॥

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवींयच्छ पृथिवीं ह ऀ ह पृथिवीं माहि ऀ सीः ॥१॥

॥ धान्य क्षेपणम् ॥

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानायत्वा व्यानायत्वा दीर्घामनु प्रसिति मायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोसि ॥२॥

॥ कलशस्थापनम् ॥

ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्त स्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरूधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः ॥३॥

॥ वरूणस्येत्युदकम् ॥

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कंभसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि। वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽ ऋतसदन-मासीद ॥ ४ ॥

॥ वस्त्रं कंठे वेष्टयेत् ॥

ॐ व्वसो पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।५।

॥ गन्धद्वारामितिगन्धम् ॥

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥६॥

॥ याः ओषधि सर्वौषधीः ॥

ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा
मनैनुबभ्रूणामहऀ शतं धामानि सप्त च ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ काण्डादिति दूर्वा ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वेप्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥८॥

॥ अश्वत्थेति पंच पल्लवम् ॥

ॐ अश्वत्थेवो निषदनम्पर्णेवो वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्किला सथ यत्सनवथ पूरूषम् ॥६॥

॥ पवित्रेस्थ पवित्राणि ॥

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥१०॥

॥ स्योनापृथिवी० सप्तमृदः ॥

ॐ स्योनापृथिवीनोभवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छानः शर्म्म सप्रथाः ॥ ११ ॥

॥ याः फलिनी० पूगी फलम् ॥

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफला अपुष्पा याश्चपुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वꣳ हसः ॥१२॥

॥ परिवाजेति पंचरत्नानि ॥

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ हिरण्य गर्भेति हिरण्यम् ॥१३॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१४॥

॥ पूर्णादर्वीति पूर्णपात्रम् ॥

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जं शतक्रतोः ॥१५॥

॥ नारिकेलं स्थापयेत् ॥

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं हसः ॥१६॥
अथवा—श्रीश्चते लक्ष्मीश्चेति

॥ आवाहनम् ॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणे ह बोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः ॥
ॐ वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि ॐ अप्पतये नमः ।

॥ तत्रैव देवाना वाहयेत् ॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुक्षौ तु सागराः सप्तः सप्त द्वीपा वसुन्धरा
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥२॥
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिता
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिपुष्टिकरी तथा ॥३॥
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरित क्षय कारका ॥

ॐ वरुणाय नमः सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॐ भूर्भुवः स्वः अप्पतये वरुणाय नमः इति षोडषोपचारैः संपूज्य ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा मंत्रेण पुष्पांजलिं समर्प्य—अनया पूजया वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम् ।

पश्चात्—कलशोपरि अक्षतान् क्षिपेत्—

ॐ ऋग्वेदाय नमः ॐ यजुर्वेदाय नमः ॐ सामवेदाय नमः ॐ अथर्ववेदाय नमः ॐ कलशाय नमः ॐ रुद्राय नमः ॐ समुद्राय नमः ॐ गंगायै नमः ॐ यमुनायै नमः ॐ सरस्वत्यै नमः ॐ कलशकुंभाय नमः इति—

अनामिकया कलशं स्पृष्ट्वा अभिमंत्रयेत्

ॐ देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुंभ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥१॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवा सर्वे त्वयिस्थिता
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवा सपैतृकाः
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः
सान्निध्यं कुरु मे देवेश प्रसन्नो भव सर्वदा
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय
सुश्वेत हाराय सुमंगलाय ।
सुपाश हस्ताय झषासनाय
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥१॥
चन्द्र प्रभं पंकज संन्निषण्णम्
पाशांकुशाभीति करं दधानम् ।
मुक्ता विभूषांचित सर्व गात्रम्
ध्यायेत्प्रसन्नं वरुणं विभूत्यै ॥२॥

॥ अथ पुण्याह वाचनम् ॥

पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीव नायक
पुण्याह वाचनं यावत्तावत्त्वं संनिधौ भव ॥

ततो यजमानः स्वदक्षिणतो युग्मान् ब्राह्मणान् उदङ्मुखा-नुपवेश्य अवनिकृत जानु मण्डलः कमलमुकुल सदृशमंजलिं शिर-स्याधाय पुनः पुनस्त्रिः प्रणमेत् आचार्यस्य दक्षिणेन पाणिना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजमानांजलौ स्वर्णपूर्ण पुण्य कलशं धारयेत् यजमानश्च ब्राह्मणान् आशिषः प्रार्थयेत् ॐ दीर्घानागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च। तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु। अस्तु दीर्घमायुः। ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः अतो धर्माणि धारयन् तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायु-रस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु-विप्राः ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायु-रस्तु३ एवं प्रतिवचनान्ते यजमानः शिरसि भूमौ निनयेत्। ततः कलशं स्वशिरसा पत्नीशिरसा संयोज्य कलश स्थाने कलशं स्थापयित्वा पुनर्गृहीत्वा त्रिवारं कुर्यात्। यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलं—सन्तुशिवा आपः इति ब्राह्मणाः। एवं सर्वत्र॥ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्—अस्तु सौम-नस्यम् अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अस्त्वक्षतमरिष्टं च। गन्धाः-पांतु—सुमंगल्यं चास्तु अक्षताः पान्तु—आयुष्य मस्तु। पुष्पाणि पान्तु—सौश्रियमस्तु। सफल ताम्बूलानि पान्तु—ऐश्वर्यमस्तु। दक्षिणा पान्तु—वहुदेयं चास्तु। पुनरत्रापः पान्तु—स्वर्चितमस्तु इति विप्राः। ततो यजमानः प्रार्थयेत्—दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीर्यशोविद्याविनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु। विप्राः तथास्तु। यजमानः यंकृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रिया-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करण कर्मारंभाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषि मतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये वाच्यताम् इति विप्राः।

ॐ द्रविणोदाः षिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत।
नेष्ट्रा दृतुभिरिष्यत ॥१॥

सविता त्वासवानाᳪं सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳪं सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥२॥

न तद्रक्षाᳪं सिनपिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजᳪं ह्येतत्। योविभर्तिदाक्षायणᳪं हिरण्यᳪं सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥३॥

उच्चातेजातमन्धसो दिविसद्भूम्याददे। उग्रᳪं शर्म्म महिश्रव ।४।
उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँ२॥ऽइयक्षते ॥५॥

यजमानः—व्रतजपनियमतपः स्वाध्याय क्रतु शम-दम-दया-दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। ब्राह्मणाः—सभाहित मनसः स्मः। यजमानः—प्रसीदन्तु भवन्तः। ब्राह्मणाः—प्रसन्नास्मः। यजमानो ब्रूयात् शान्ति रस्त्वित्यादि। अस्तु इति द्विजाः प्रति वचनं सर्वत्र दद्युः। ॐ शान्तिरस्तु ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्टिरस्तु ॐ तुष्टिरस्तु ॐ वृद्धिरस्तु ॐ अविघ्नमस्तु ॐ आयुष्यमस्तु ॐ आरोग्यमस्तु ॐ शिवमस्तु ॐ शिवं कर्मास्तु ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॐ इष्टसम्पदस्तु वहिः। ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु ॐ यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु अन्तः॥ ॐ यच्छ्रेय स्तदस्तु ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यंताम् ॐ तिथिकरण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्न सम्पदस्तु ॐ तिथिकरण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् ॐ तिथि करणे स मुहूर्ते स नक्षत्रे सग्रहे स लग्नेसाधि दैवते प्रीयेताम् ॐ दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयेताम् ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॐ इन्द्र पुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् ॐ वसिष्ठ पुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् ॐ माहेश्वरी पुरोगाः उमामातरः प्रीय-न्ताम् ॐ अरुन्धती पुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् ॐ विष्णु पुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् ॐ ब्रह्म पुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीय-न्ताम् ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम् ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम् ॐ भगवती कात्यायनी प्रीय-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताम् ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् ॐ भगवन्तौ विघ्न-विनायकौ प्रीयेताम् ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् ॐ सर्वा इष्ट देवताः प्रीयन्ताम् ॐ ॥ बहिः ॥ ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्च परिपंथिनः ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु ॐ शाम्यन्तु घोराणि ॐ शाम्यन्तु पापानि ॐ शाम्यन्त्वीतयः ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः ॥ अन्तः ॥ ॐ शुभानि वर्धन्ताम् ॐ शिवा आपः सन्तु ॐ शिवा ऋतवः सन्तु ॐ शिवा ओषधयः सन्तु ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु ॐ शिवा अतिथयः सन्तु ॐ शिवा अग्नयः सन्तु ॐ शिवा आहुतयः सन्तु ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्—निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ॐ शुक्राऽङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतुसोम सहितादित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम् ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम् ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम् ॥ पुरोऽनु वाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु—याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु—वषट् कारेण यत्पुण्यं तदस्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु—एतत्कल्याण युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये इति यजमानः ॐ वाच्यतामिति विप्राः।

ॐ ब्राह्मं पुण्य महर्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्
वेदवृक्षोद्भवं नित्यम् तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमानस्यामुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति यजमानः ॐ पुण्याहं पुण्याहं पुण्याहं त्रिर्वदेत्।

अन्य प्रकार—भो ब्राह्मणाः मयाक्रियमाणस्यामुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु---इति

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा।
पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मया० कल्याणम्० ब्रुवन्तु इति कल्याणम्३ विप्राः॥

ॐ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्न्याभ्याᳬं शूद्राय चार्याय चस्वाय चारणाय च प्प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयाः समयं मे कामः समृद्ध्य तामुपमादो नमतु॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सागरस्य तु या ऋद्धि र्महालक्ष्म्यादिभिः कृता
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ।

भो ब्राह्मणाः मयाक्रियमाणस्यामुक कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु इति ओं कर्म ऋध्यताम् ३

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम ।
दिवंपृथिव्याऽअध्यारुहा मा विदाम देवान्त्सज्योतिः । ३

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ।

भो ब्राह्मणाः मयाक्रियमाणस्यामुक कर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु

ॐ आयुष्मते स्वस्ति ३

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

समुद्रमथना ज्जाता जगदानन्द कारिका
हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्यामुक कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ॐ अस्तु श्रीः ३ ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप-मश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वंलोकम्मऽइषाण ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मृकण्ड सूनोरायुर्यद् ध्रुव लोमशयोस्तथा
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥

यजमानः —शतं जीवन्तु भवन्त इति ब्राह्मणाः

ॐ शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्रपितरो भवन्ति मानो मद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः ॥

शिव गौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि

अस्तु श्रीः ३

ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय ।
पशूनाᳬं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ।

प्रजापति र्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्
भगवान्-शाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः ॥

ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्न्यन्न्यो विश्वारुपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्यपिता सावस्यपिता व्वयᳬं स्याम पतयोरयीणाᳬं स्वाहा ।

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे
श्रिये दत्ताशीषः सन्तु ऋत्विग्भिः वेद पारगैः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति यजमानः आयुष्मते स्वस्ति इति ब्राह्मणाः

ॐ प्रतिपन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्। येन विश्वाः परिंद्विषो व्वृणक्ति व्विन्दते व्वसु। ॐ स्वस्तिवाचन समृद्धिरस्तु। ॐ कृतैतदस्मिन् दानखंडोक्त पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानाम् वचनात् श्रीगणपति प्रसादच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु—ब्राह्मणाः ॐ अस्तु परिपूर्णः ३

॥ अथ पुण्याहवाचनांगभूताभिषेकः ॥

अविधुरा श्चत्वारो ब्राह्मणाः—कर्तु र्बामतः तत्सहचरित पुत्रादिकमपि उपवेश्य प्रथम पात्रे प्रक्षिप्त जलं गृहीत्वा दूर्वाम्र-पल्लवैः अभिषिंचेयुः तत्रमंत्राः—ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु-पयोदिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम्।१। ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्तिसस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सोऽदेशे भवत्सरित् ॥२॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य-स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्न्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदन-मसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥३॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु व्विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥४॥ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचोयन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्टा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥५॥ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचोयन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥६॥ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्वाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनौर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन व्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलायश्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ विश्वानिदेव सवितर्द्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव।८। धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मादेवो वृहस्पतिः। स चेतसो व्विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥९॥ त्वं यविष्ठदाशुषोनॄँः पाहिश्रृधीगिरः। रक्षातोकमुतत्त्मना ॥१०॥ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नोधेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥११॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ ॥१२॥ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु। शन्नः कुरु प्प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१३॥ अमृताभिषेकोऽस्तु। ॐ कृतस्य स्वस्तिवाचन कर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे। इति पुण्याहवाचनम् ॥

॥ अथ अविघ्न पूजनम् ॥

मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा
अविघ्नो विघ्न हर्ता च षडेते विघ्ननायकाः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ मोदाय नमः मोदमा० स्था० । ॐ प्रमोदाय नमः प्रमोदमा० स्था० । ॐ सुमुखाय नमः सुमुखमा० स्था० । ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मुखमा० स्था० । ॐ अविघ्नाय नमः अविघ्न-मा० स्था० । ॐ विघ्नहर्त्रे नमः विघ्नहर्तारमा० स्था० । ॐ मोदादिषड् विनायकेभ्यो नमः इति पूजयेत् ॥

॥ अथ षोडशमातृका पूजनम् ॥

॥ आग्नेयां मातृका वेदी ॥ देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रोमुक शर्माहं सर्वाभ्युदय प्राप्तये गणपति सहित गौर्यादि षोड़श मातृणां पूजनं करिष्ये ॥

गणपति—ॐ गणानान्त्वा गणपतिं—गणपतये नमः गण-पतिमा० स्था० ॥१॥

गौरी—ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥२॥ गौर्यै न० गौ० आ० स्था० २

पद्मा—ॐ हिरण्यरुपाऽउषसोव्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्यश्च । आरोहतंव्वरुणमित्त्रगर्त्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिश्च-मित्त्रोऽसिव्वरुणोऽसि ॥३॥ पद्मा० आ० स्था० ३

शची—ॐ निवेशनः संगमनो व्वसूनां व्विश्वारूपाभिचष्टे शचीभिः । देवऽइव सवितासत्यधर्म्मेन्द्रोन तस्थौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समरे पथीनाम् ॥४॥ शच्यैन० शचीमा० स्था० ४

मेधा—ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥५॥

मेधा० न० मेधा० आ० स्था०

सावित्री—ॐ सविता त्त्वा सवानाᳬं सुवतामग्निर्गृहपतिनाᳬं सोमो वनस्पतिनाम्। बृहस्पतिर्वा व्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुब्भ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥६॥

सावि० न० सावि० आ० स्था० ॥

विजया—ॐ बिज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो वाण वाँ२॥ उत। अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥७॥

विज० न० आ० स्था० ॥७॥

जया—ॐ बह्वीनाम्पिता बहुरस्यपुत्र श्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥ जयायै नमः जयामा० स्था० ॥८॥

देवसेना—ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥९॥ देवसे० देव० मा० स्था० ९

स्वधा—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधा नमः अक्षन्निपतरोमीम दन्तपितरोतीतृपन्तपितरः
पितरः शुन्धद्ध्वम् ॥१०॥ स्वधा० नमः आ० स्था०

स्वाहा—ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहा-
ग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा ॥११॥
स्वाहा० नमः स्वा० मा० स्था० ॥११॥

मातृ—ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतष्वः
पुनन्तु । व्विश्वꣳ हि रिप्र प्प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः
शुचिरापूतऽएमिदीक्षा तपसो स्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳ
शग्ग्माम्परिदधे भद्रं व्वर्णं पुष्यन् ॥१२॥
मातृ० नमः मा० आ० स्था० ॥१२॥

लोकमातृ०—ॐ रयिश्चमेरायश्चमे पुष्टं चमे पुष्टिश्चमे विभुचमे
प्रभु चमे पूर्णं चमे पूर्णतरं चमे कुयवं चमे क्षितंच मेन्नं-
चमे क्षुच्चमे यज्ञेन कल्पताम् ॥१३॥
लोकमा० नमः लो० आ० स्था०

हृष्टि—ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयामदेवाः भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यं शेमहि देवहितं यदायुः ।
हृष्ट्यै० नमः हृ० आ० स्था० ॥१४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्टि---ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥१५॥
पुष्टयै० नमः पु० आ० स्था०

केचित् धृतिम्---आवाहनं कुर्वन्ति---

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्मक्रियते तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु

तुष्टि---ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुन्दुरितात्यग्निः ।
तुष्टयै० नमः आ० स्था० ॥१६॥

कुलदेवता---ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ।
आत्मनःकुलदेवतायै नमः आ० स्था०

पुष्पाण्यादाय---

ॐ समख्येदेव्व्याधिया सन्दक्षिणयोरु चक्षसा । मामऽआयुः
प्रमोषीम्र्मोऽअहंतवव्वीरं व्विदेयतव देवि सन्दशि ॥
ॐ मनोजूतिर्ज्जुष तामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो
त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु । व्विश्वेदेवासऽइहमाद-
यन्तामोँ २ ॥ प्रतिष्ठ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति प्रतिष्ठाप्य---गौर्याद्याः कुलदेवतान्त मातरो गणपति सहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। यथा लब्धोपचारैः पूजयेत्----

ॐ गणपत्यादि कुलदेवतान्त मातृभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः पूजयेत् ।

॥ प्रार्थना ॥

गणेश पूर्विका देव्यो गौर्यादि प्रमुखा स्मृता ।
प्रसीदन्तु हि कल्याण्योः निर्विघ्नं कुरुताध्वरम् ॥
कल्याणी कमलेन्दु सौम्य वदना माहेश्वरी लीलया
कौमारी रिपु दर्पनाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी ॥
वाराही महिषासुर प्रमथिनी चैन्द्रीच वज्रायुधा
चामुण्डा गणनाथ रूद्र सहिता रक्षन्तु नो मातरः ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम
निर्विघ्नं सर्व कार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ॥

॥ कृतांजलि ॥

श्री गौर्यादि षोडश मातृणां पूजन कर्मणो यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं मातृणाम् प्रसादात्परिपूर्णमस्तु---गृहे वृद्धि शतानि भवन्तु उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु---इति वदेत् अनया पूजया सगणेश गौर्यादि षोडश मातरः प्रीयन्ताम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।। सप्तघृत मातृका पूजनम् ।।

आग्नेयां भित्तौ काष्ठफलकेवा सप्त विन्दून् क्रमेण प्रादेश मात्रस्थले निर्माय उपरि श्रीं लिखित्वा तदधः सप्तसु विन्दुषु घृतादिना सप्तधारा उदक् संस्थाः प्रादेश मात्रीः कुर्यात् ॐ व्वसो पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सवितापुनातुव्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। इति मंत्रेण तथा श्रीपूर्व सप्तमातृभ्यो घृतमातृभ्य एव च । गुडेन मेलयिष्यामि ताः सर्वार्थ प्रसाधिकाः । क्रमेणा वाहयेत् ।

---धारा मंत्र---

नमोस्तु वसु मातृभ्यो घृत मातृभ्य एवच
स्वयज्ञ कार्य सिद्ध्यर्थं धारां दास्यामि मातरः ।।

श्री---ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय । पशूनाᳪं रूपमन्नस्यरसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ।
ॐ श्रियै नमः आ० स्थाप० ।।१।।

लक्ष्मी---ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वं लोकम्मइषाण ।।२।। ॐ लक्ष्म्यै नमः आ० स्था० २

धृति---ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थिरैरङ्गैः स्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।

ॐ धृत्यै नमः आ० स्था० ॥३॥

मेधा---ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः मेधा-

मिन्द्रश्चव्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥४॥

ॐ मेधायै नमः आ० स्था० ४

स्वाहा---ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा

चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा

ॐ स्वाहायै नमः आ० स्था० ॥५॥

प्रज्ञा---ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमी दसदन्मातरम्पुरः ।

पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥६॥

ॐ प्रज्ञायै नमः आ० स्था० ६

सरस्वति---ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवती ।

यज्ञं व्वष्टुधिया व्वसुः ॥७॥

ॐ सरस्वत्यै नमः आ० स्था० ७

प्रार्थना---श्रीश्च लक्ष्मी धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।

मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृत मातरः ॥

ॐ मनोजूतिर्ज्जूषता---इति प्रतिष्ठाप्य---

ॐ वसोर्धारा देवता सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥

ॐ वसोर्धारा देवताभ्यो नमः इति मंत्रेण पूजयेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारिकेलं गृहीत्वा---

यदंगत्वेनभो देव्यः पूजिता विधि मार्गतः
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥१॥
श्रियादि देव्यः सदा पूज्याः सप्तवै घृत मातरः
कल्याणानि प्रयच्छन्तु सकुटुम्बस्य मे सदा ॥२॥
पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं देहि मे वाञ्छितं फलम् ॥३॥
रुपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥४॥
फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्
फलार्घ्यस्य प्रदानेन सफला मे मनोरथाः ॥५॥

वसोर्धारा पूजन विधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु---

अनया पूजया सप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम् ॥

॥ आयुष्य मंत्रः ॥

ॐ आयुष्यं व्वर्च्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् । इदꣳहिरण्यं व्वर्चस्वज्जैत्राया विशतादुमाम् ॥ ॐ नतद्रक्षाꣳसि नपिशास्त-रन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।२।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकायसुमनस्यमानाः । तन्मऽआबध्नामि शतशारदाया युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥३॥

॥ अथ रक्षाभिधानम् ॥

ताम्रपात्रे सर्षपलाजा रक्तसूत्र पुष्पपुगीफल दक्षिणादीन् वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणेन हस्तेन पिधाय पठेत् ॥

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥१॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्
धरणीगर्भं संभूतम् शशि पुत्रं बृहस्पतिम् ॥२॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्
राहुंकेतुं नमस्कृत्य यज्ञारंभे विशेषतः ॥३॥
शक्राद्याः देवताः सर्वा मुनींश्च कथयाम्यहम्
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥४॥
बसिष्ठं मुनि शार्दूलं विश्वामित्रं तथैव च ।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम् ॥५॥
विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः
तान्सर्वान्प्रणमाम्येव यज्ञरक्षाकरान्सदा ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः ।
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैरृते ॥७॥
वारुण्यां केशवो रक्षेत् वायव्यां मधुसूदनः
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशाने तु गधाधरः ॥८॥
उर्ध्वं गोवर्द्धनो रक्षेत् अधस्ताच्च त्रिविक्रमः
एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥६॥
शंखो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैव च
वाम पार्श्वे गदा रक्षेत् दक्षिणे तु सुदर्शनः ॥१०॥
ब्रह्माणं माधवो रक्षेत् आचार्यं पातु माधवः
अच्युतोऽवतु ऋग्वेदम् यजुर्वेदमधोक्षजः ॥११॥
कृष्णश्चसामगंरक्षेदाथर्विकं च माधवः ।
उपद्रेष्टातु यो विप्रः तं रुद्रोऽवतु सर्वदाः ॥१२॥
यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु ।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षतां हरिः ॥१३॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ।
स्थानं त्यक्त्वातु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥१४॥
अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता ।
ये भूता विघ्न कर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥१५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अप क्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतो दिशम्
सर्वेषामविरोधेन शान्ति कर्म समारभे ॥१६॥
भूतप्रेत पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः
स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवन्त्विमाम् ॥१७॥
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति के चन
ते सर्वेऽप्यप गच्छन्तु शान्ति कर्म करोम्यहम् ॥१८॥

॥ वैदिक मंत्राः ॥

ॐ रक्षोहणं व्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहंतं व्वलगमुत्किरामि यंमेनिष्ठ्यो यजमान्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्त व्वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्य्यम सबन्धुर्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखात्कृत्याङ्किरामि ॥१॥ रक्षोहणो वो व्वलगहनः प्रोक्षामि व्वैष्णवा न्रक्षोहणो वो व्वलगहनोऽवन-यामि व्वैष्णवान्रक्षोहणो वो व्वलगहनोऽवस्तृणामि व्वैष्णवान्र-क्षोहणौ वां व्वलगहनाऽउपदधामि व्वैष्णवी रक्षोहणौ वां व्वल-गहनौ पर्य्यूहामि व्वैष्णवी व्वैष्णवमसि व्वैष्णवास्थ ॥२॥ रक्षसां भागोऽसि निरस्तᳬं रक्षऽइदमहᳬं रक्षोऽभितिष्ठामीदमहᳬं रक्षो वबाधऽइदमहᳬं रक्षोऽधमं तमो नयामि । घृतेन द्यावा पृथिवी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रोर्णुवाथां व्वायोवेस्तोकानामग्नि राज्यस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहा कृतेऽउर्ध्वनभसं मारुतङ्गच्छतम् ॥३॥ रक्षोहा विश्वचर्षणीरभि-योनि मयो हते। द्रोणे सधस्थमासदत् ॥४॥ सर्वत्र विकरेत्—आवाहित सर्वेभ्यो देवेभ्यो निवेदयेत् पश्चात् ब्राह्मणेभ्यः ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति—गन्धं-गन्धद्वाराम् ॥ यजमान हस्ते यदा-वध्नन्दाक्षा—येनवद्धोवलि ॥ पत्नीं—श्रीश्चतेलक्ष्मी—तं पत्नी-भिरनु ॥ इत्यादि ॥

॥ अथ सांकल्पिक नान्दी श्राद्धम् ॥

सव्येन सर्व कार्यम्—ऋजवः एव कुशाः तिलस्थाने यवा दातव्याः सव्येन प्राङ्मुखः आसनेषु अष्टौ चतुरो वा यथा संभवं कुश बटून् वा उदङ् मुखान् प्राक्संस्थान् उदङ् मुखो वा प्राग् युतान् उदक संस्थानुपवेश्य कुर्यात् ॥ यथा—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः ॥१॥

ॐ अमुक गोत्राः मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षा-लनम् वृद्धिः ॥२॥

ॐ अमुक गोत्राः मातृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनम् वृद्धिः ॥३॥

ॐ असुक द्वितीय गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमा-तामहाः सपत्नीकाः नान्दी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनम् वृद्धिः ॥४॥

॥ आसन दानम् ॥

१ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्त तथा प्राप्नुवामः ॥१॥

२ ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवत्यः तथा प्राप्नुवामः ॥२॥

३ ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्त तथा प्राप्नुवामः ॥३॥

४ ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दी-मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवंतो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥४॥

॥ गन्धदानम् ॥

१ ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥१॥

२ ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥२॥

३ ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥३॥

४ ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ४ ॥

॥ भोजन निष्क्रय दानम् ॥

१ ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तामान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यममृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥१॥

२ ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तामान्न निष्क्रय भूतं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्रव्यममृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥२॥

३ ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तामान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यममृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥३॥

४ ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तामान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यममृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥

॥ सक्षीरयवमुदकदानम् ॥

१ ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्

२ ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्

३ ॐ पितृ पितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्

४ ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्

शिवा आपः सन्तु इति जलम्। सौमनस्य मस्तु इतिपुष्पम्। अक्षतं चारिष्टं चास्तु इत्यक्षतान्। ॐ अघोराः पितरः सन्तु इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्। इति समाचारात्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ कृतांजलिः प्रार्थयेत् ॥

ॐ गोत्रं नो वर्धताम्—दातारो नोऽभि वर्धन्ताम्—वेदाः सन्तति रेव च श्रद्धा च नो माव्यगमत्—बहुदेयं च नोऽस्तु—अन्नं च नो बहु भवेत् अतिथींश्च लभेमहि—याचितारश्च नः सन्तु—मा च याचिष्म कंचनः एता सत्या आशिषः सन्तु ॥ ब्राह्मणाः सन्त्वेता सत्या आशिष इति ॥

॥ दक्षिणा दानम् ॥

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥

ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं द्राक्षाऽऽ-मलक यवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥

ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातु-महमुत्सृजे ॥

ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे॥ अभिदेवाँऽइयक्षते।

ॐ इड़ामग्नेपुरुदᳪ सᳪ सनिङ्गोः शश्वत्तमᳪ हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्नेसाते सुमतिर्भूत्वस्मे। अनेन नान्दीश्राद्धं संपन्नम् इति यजमानो ब्रूयात्। सुसम्पन्नम् इति ब्राह्मणाः ॥

ॐ व्वाजेव्वाजेवतव्वाजिनो नो धनेषु व्विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः। अस्यमद्ध्वः पिबतमाद यदध्वं तृप्तायात पथिभिर्द्देव-यानैः। ॐ आमाव्वाजस्यप्रसवो जगम्यादेमे द्यावा पृथिवी-व्विश्वरूपे। आमागन्तांपितरामातरा चामासोमोऽअमृतत्त्वेन गम्यात्। ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इति विसृज्य। मया आ चरिते सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेश प्रसादात् परिपूर्णोऽस्तु—अस्तु परिपूर्ण इति ब्राह्मण वचनम् ॥

॥ आचार्यादि वरणम् ॥

उदङ्मुखमाचार्यमुपवेश्य गन्धादिभिः संपूज्य ॐ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माऽहं करिष्यमाण कर्मणि अमुक गोत्रं अमुक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शर्माणं एभिः वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे—वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनम्—ॐ वृहस्पतेऽअतियदर्य्यो० मंत्रपाठः ॥ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत। ब्रह्म वरणम्—एभिः वरणद्रव्यैः अमुक गोत्रम् अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि—प्रतिवचनम्—ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमं० मंत्रपाठः ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्माभवद्विजोत्तमः। सदस्य वरणम्—अस्मिन् कर्मणि एभि र्वरणद्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि, प्रतिवचनम् ॥ ॐ सदस्यस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधामयासिषᳬ स्वाहा। भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्म भृतांवरः। वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत। गाणपत्य वरणम्। अस्मिन् कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि प्रतिवचनम् ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपति० मंत्रपाठः वाञ्छितार्थ फलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुरासुरैः। निर्विघ्नं क्रतु संसिद्ध्यै त्वामहं गणप वृणे। उपद्रष्टृ वरणम्। अस्मिन् कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उपद्रष्टृत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि—प्रतिवचनम्—ॐ ऋतये- तेस्न हृदयं व्वैरहत्यायपिशुनं व्विविक्त्यै क्षत्तार मौपद्द्रष्ट्यायानु- क्षत्तारम्बलायानुचरम्भूम्ने परिष्कन्दम्प्रियाय प्प्रियवादिनमरिष्ट्या ऽअश्वसादᳬ स्वर्ग्गाय लोकाय भागदुघं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्। भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्व धर्म परायण। वितते मम यज्ञेऽस्मिनुपद्रष्टा भवद्विज। ऋत्विक वरणम्। अस्मिन् कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक् त्वेन त्वामहं वृणे॥ वृतोस्मि—प्रति वचनम्॥ ॐ होतायक्षत्समिधेन्द्रमिऽस्पदे नाभा पृथिव्याऽअधि। दिवोव्वर्ष्मर्म- न्त्समिद्ध्यत्ऽओजिष्ठश्चर्षणी सहांव्वेत्त्वाज्यस्यहोतर्य्यज। भग- वन् सर्व धर्मज्ञ सर्वधर्म परायण वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मखेभव। यजमानः सर्वान् प्रार्थयेत्। अस्मिन् कर्मणि ये ये तु वृता गुरु मुखादयः। सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथो- दितम्। अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम्। यथा विहितं कर्म कुरु। यथा ज्ञानं करवाणि। यथा विहितं कर्म कुरुध्वम् यथा ज्ञानं करवामः। इति आचार्यादि वरणम्। मण्डपः यदि चेत् अस्ति तर्हि पश्चिम द्वारेण प्रवेशो भवति तत्पूर्व मण्डपस्य वक्ष्यमाण मंत्रैः प्रद- क्षिणां कुयात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।। प्रदक्षिणा मंत्राः ।।

ॐ भद्रं कर्णेभि० । शतमिन्नु शरदः० । अदितिर्द्यौः० । द्यौः शान्तिः० । यतो यतः० । ॐ ऋचं वाचम्० । यन्मे छिन्द्रम्० । भूर्भुवः स्वः तत्सवि० । कयानः० । कस्त्वा० । अभीषुणः० । कयात्वम्० । इन्द्रो विश्व० । शन्नो मित्रः० । शन्नो वातः० । अहानि० । शन्नो देवी० । स्योनापृ० । आपोहि० । द्यौः शान्तिः० । दृते दृꣳह० । दृते दृꣳ० । नमस्ते० । नमस्तेऽअस्तु० । यतो यत० । सुमित्त्रि० । तच्चक्षु० ।

।। प्रवेश समये मण्डप द्वारभूमि पूजनम् ।।

भूमिध्यानं ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरस्य विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं माहिꣳ सीः । ॐ महीद्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतान्नो भरीमभिः । ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः । ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शं योरभिस्रवन्तुनः । आगच्छ देवि० उधृतासि० प्रणामं कुर्यात्—भूम्यै अर्घ दानम्० पूजनम्० प्रार्थना—यमेन पूजिते देवि इति—देवा आयान्तु—यातुधाना अपयान्तु। आचार्यः मण्डपदिग्रक्षणं ॐ रक्षोहणं व्वलग० मंत्रेण कुर्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पंचगव्येन मण्डप प्रोक्षणम्। यथा गायत्र्या-गोमूत्रम्। गन्ध-द्वाराम्—गोमयम्। आप्यायस्व—पयः। दधिक्राब्णः दधि। तेजोऽसिशुक्र—आज्यम्। देवस्यत्वा सवितु—कुशोदकम्। ॐ प्रणवेन आलोडनम्। कुशैः ॐ आपोहिष्ठामयो० मंत्रेण कर्म भूमिं प्रोक्षेत्। संकल्पं कुर्यात्—हस्ते गन्धाक्षतपुष्पद्रव्याण्यादाय—ॐ अमुक गोत्रोऽहं अमुक शर्माऽहं अमुक कर्मणि वास्तु पूजन महं करिष्ये। पूर्व ईशानादि क्रमेण चत्वारः शंकून् रोपयेत्—विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्वल कराः सदाः। माषदध्योदनं तत्रैव वलिं दद्यात् ॥१॥

अग्निकोणे—अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः।
वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम्॥
सदीपं माषभक्त दध्योदन वलिं दद्यात् ॥२॥

नैर्ऋ०—नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः।
वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मंत्रितम्॥
सदीपं दधिमाषोदनबलिं दद्यात् ॥३॥

वायव्ये—वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः।
वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम्॥
सदीपं दधिमाष भक्तोदन वलिं दद्यात् ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ रेखा करणम् वास्तुमण्डले ॥

पश्चादारंभा प्रागन्ता नवरेखाः कार्याः—कुंकुमादिना कनक शलाकया रत्नेन वा रजतफल पुष्पाणामन्यतमे न वा यथा-साध्यं कुर्यात् ।

ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥१॥ ॐ यशोवत्यै नमः ॥२॥ ॐ कान्तायै नमः ॥३॥ ॐ सुप्रियायै नमः ॥४॥ ॐ विमलायै नमः ॥५॥ ॐ शिवायै नमः ॥६॥ ॐ सुभगायै नमः ॥७॥ ॐ सुमत्यै नमः ॥८॥ ॐ इडायै नमः ॥९॥ नवरेखाः कार्याः । पुनः दक्षिणारंभाः उदगन्ता नवरेखा एभिः नामभिः कार्याः ॥

ॐ धान्यायै नमः ॥१॥ ॐ प्राणायै नमः ॥२॥ ॐ विशालायै नमः ॥३॥ ॐ स्थिरायै नमः ॥४॥ ॐ भद्रायै नमः ॥५॥ ॐ स्राथायै नमः ॥६॥ ॐ निशायै नमः ॥७॥ ॐ विरजायै नमः ॥८॥ ॐ विभवायै नमः ॥९॥ रेखां गन्धा-क्षतादिभिः पूजयेत् ॥

॥ वास्तु मण्डले देवानावाहयेत् ॥

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च ।
ययस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः शिखिनमा० ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ शन्नो वातः पवताᳪं शं नस्तपतु सूर्य्यः। शं नः कनि-क्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु। ॐ भू० पर्जन्याय० पर्जन्य-मा० ॥२॥ ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु। ॐ भू० जयन्ताय० जयन्तमा० ॥३॥ ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिवव्वृत्रहा शूर व्विद्वान्। जहि शत्रूँ२॥ रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः। ॐ भू० कुलिशायुधाय० कुलिशायुध० ॥४॥ ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यञ्च। हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ भू० सूर्याय० सूर्यमा० ॥५॥ ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते। ॐ भू० सत्याय० सत्य-मा० ॥६॥ ॐ आत्वाहार्यमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा व्विचाचलिः। व्विशस्त्वा सर्व्वा व्वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्। ॐ भृशाय० भृशमा० ॥७॥ ॐ यावां कशा मधुसत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। ॐ भू० आकाय० आकाशमा० ॥८॥ ॐ वायो येते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोम-पीतये। ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥९॥ ॐ पूषन् तवव्व्रते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्वयं न रिष्येमकदाचन। स्तोतारस्तऽइह स्मसि। ॐ भू० पूष्णे नम० पूषाणमा० ॥१०॥ ॐ तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततᳪ सञ्जभारः। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादा-द्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै। ॐ भू० वितथाय० वितथमा० ॥११॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्प्रियाऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठयामती योजान्विंद्रते हरी। ॐ भू० गृहक्षताय० गृहक्षतमा० ॥१२॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृ-मते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॐ भू० यमाय० यममा० ॥१३॥ ॐ गंधर्व्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु व्विश्व-स्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड़ऽईडितः। इन्द्रस्य वाहुरसि दक्षिणो व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्नि-रिड़ऽइडितः। मित्रा वरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्म्मणा व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड़ऽईडितः। ॐ भू० गंधर्वाय० गंधर्वमा० ॥१४॥ ॐ सौरी बलाका शार्ङ्गः पुरुष वाक् श्वाविद्धौमी शार्दूलो व्वृकः पृदाकुस्ते मन्न्यवे सर-स्वते शुकः पुरुष वाक्। ॐ भू० भृंगराजाय० भृंगराजमा० ॥१५॥ ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः। सृकᳪ सᳪ शाय पविमिन्द्र तिग्मं व्वि शत्रून ताढ़ि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विमृधोनुदस्व । ॐ भू० मृगाय० मृगमा० ॥१६॥ ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समधी महि। उशन्नुशतऽआवह पितॄन्ह विषेऽअत्तवे । ॐ भू० पितृभ्यो० पितॄना० ॥१७॥ ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वार्थे अन्योन्या व्वत्समुप धापयेते । हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रोऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः। ॐ भू० दौवारिकाय० दौवारिकमा० ॥१८॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकंठा दिंवᳬ रुद्राऽउपश्रिताः। तेषाᳬसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। ॐ भू० सुग्रीवाय० सुग्रीवमा० ॥१६॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः। ॐ भू० पुष्पदन्ताय० पुष्पदन्तमा० ॥२०॥ ॐ इमं मे व्वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥२१॥ ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय । इमं तᳬ शुक्रं मधुमन्तमिन्दुᳬ सोमᳬ राजानमिह भक्षयामि । ॐ भू० असुराय० असुरमा० ॥२२॥ ॐ याऽइषवो यातु धानानां ये वा व्वनस्पतींर॥ रनु ॥ ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः। ॐ भू० शेषाय० शेषमा० ॥२३॥ ॐ एतत्ते रुद्राऽवसन्तेन परो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मूजवऽतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिꣳ शन्नः शिवोऽतीहि। ॐ भू० पापाय० पापमा० ॥२४॥ ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्र नील लोहित। आसां प्रजाना मेषां पशूनां माभेर्म्मा रोङ्मोचनः किञ्चनाममत्। ॐ भू० रोगाय० रोगमा० ॥२५॥ ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया-हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो ब्विश्वाव्वयुनानि ब्विद्वान्पुमा-न्पुमाꣳ सं परिपातु ब्विश्वतः। ॐ भू० अहिर्बुध्न्याय० अहि-र्बुध्न्यमा० ॥२६॥ ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। नीशीर्य्यं शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव। ॐ भू० मुख्याय० मुख्यमा० ॥२७॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभराम हेमतीः। यथा समसद् द्विपदे चतुष्पदे ब्विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्। ॐ भू० भल्लाटाय० भल्ला-टमा० ॥२८॥ ॐ व्वयꣳ सोमब्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥२९॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः। ॐ भू० सर्पाय० सर्पमा० ॥३०॥ ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्त रिक्षमदितिर्म्माता सपितासपुत्रः। ब्विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जात मदितिर्ज्जनीत्त्वम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भू० अदितये० अदितिमा० ॥३१॥ ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात्। ॐ भू० दितये० दितिमा० ॥३२॥ ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः। ॐ भू० अद्भ्यो नमः। अपः आवा० ॥३३॥ ॐ आते व्वत्सो मनो यमत्पर-माच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामया गिरा॥ ॐ भू० आप-वत्साय० आपवत्समा० ॥३४॥ ॐ यदद्य सूरऽउदितेऽनागा मित्रोऽअर्यमा। सुवाति सविता भगः। ॐ भू० अर्य्यम्णे० अर्य्यमाणमा० ॥३५॥ ॐ हस्तऽआधाय सविता बिभ्रदभ्रिः हिरण्ययीम्। अग्नेर्ज्ज्योतिर्न्निचाय्य पृथिव्याऽअद्ध्याभरदानुष्टु-भेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत्। ॐ भू० सावित्राय० सावित्रमा० ।३६। ॐ व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽ आसुव। ॐ भू० सवित्रे० सवितारमा० ॥३७॥ ॐ विवस्व-न्नादित्यैयते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व। श्रदस्मै नरोव्वचसो दधा-तन यदाशीर्दा दम्पती व्वाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधा व्विश्वाहारयऽएधतेगृहे। ॐ भू० विवस्वते० विवस्वन्तमा० ॥३८॥ ॐ सबोधि सूरिर्म्मघवा व्वसुपते व्वसु-दावन्। युयोध्यस्मद्द्वेषाᳬंसि व्विश्वकर्म्मणे स्वाहा। ॐ भू० विबुधाधिपाय० विबुधाधिपमा० ॥३९॥ ॐ अषाढं य्युत्सु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृतनासुपप्प्रिᳪं स्वर्सामप्सां व्वृजनस्य गोपाम्। भरेषुजाᳪं सुक्षितिᳪं सुश्रवसं जयन्तं त्वामनुमदेम सोम। ॐ भू० जयन्ताय० जयन्तमा० ॥४०॥ ॐ मित्रो नऽएहि सुमित्रधऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्तᳪं स्योनः स्योनम्। स्वान ब्भ्राजाङ्घनरे बम्भारे हस्त सुहस्त कृशानवेते वः सोमक्रयणास्तान्नक्षद्ध्वं मावो दभन्। ॐ भू० मित्राय० मित्रमा० ॥४१॥ ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसऽउपचितामसि। अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशिनी। ॐ भू० राजयक्ष्मणे० राजयक्ष्माणमा० ॥४२॥ ॐ अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथानो व्वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथानो व्व्यवसाययात्। ॐ भू० रुद्राय० रुद्रमा० ॥४३॥ ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः। ॐ भू० पृथ्वीधराय० पृथ्वीधरमा० ॥४४॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः। ॐ ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥४५॥

ॐ यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृतम्। तं ते व्विष्याम्म्यायुषो नमद्ध्यादथै तं पितुमद्धि प्प्रसूतः। नमो भूत्य येदं चकार। ॐ भू० चरक्यै० चरकीमा० ॥१॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अक्षराजाय कितवं कृतयादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाणऽउपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् । ॐ भू० चिदायै० चिदारीमा० ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवऽदित्यै भसज्जीभूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्हा वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्याᳪं समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना । ॐ भू० पूतनायै० पूतनामा० ॥३॥ ॐ यस्ताते घोरऽआसन् जुहोम्येषां बन्धानामवसर्ज्जनाय । यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परिवेद विश्वतः । ॐ भू० पापराक्षस्यै० पापराक्षसी० ॥४॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽअर्व्वन् । ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा० ॥५॥ ॐ यदद्य सूरऽउदिते नागा मित्रोऽअर्य्यमा । सुवाति सविता भगः । ॐ भू० अर्यम्णो० अर्यमाणमा० ॥६॥ ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गन्धाय स्वाहा ग्घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृताय स्वाहा सᳬ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा। ॐ भू० जृम्भकाय० जृम्भकमा० ॥७॥ ॐ का स्विदासीत्पूर्व्वचित्तिः किᳬ स्विस्विदासीद् वृहद्वयः। का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला। ॐ भू० पिलिपिच्छाय० पिलिपिच्छमा० ॥८॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳬ हवे हवे सुहवᳬ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳬ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥१॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषाᳬसि प्प्रमुमुग्ध्यस्मत्। ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥२॥ ॐ यमा यत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे। ॐ भू० यमाय० यममा० ॥३॥ ॐ असुन्वन्त मयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्न्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मस्तु। ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋति० ॥४॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानास्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेड-मानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳ समानऽआयुः प्प्रमोषीः। ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥५॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिर-ध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायोऽअस्मिन्त्सवने माद-यस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥६॥ ॐ व्वयꣳ सोमव्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजा-वन्तः सचे महिः। ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥७॥ ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषानो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। ॐ भू० ईशानाय० ईशानमा० ॥८॥ ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳ सते स्तुवते धायिवज्रऽइन्द्र-ज्ज्येष्ठाऽअस्माँ२॥ऽअवन्तु देवाः। ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥९॥ ॐ स्योना पृथिवीनो भवान्नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः। ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तमा० ॥१०॥

(वास्तु मण्डले देवाना वाहयेत् षोडशोपचारैः पूजयेत् पश्चाद्वास्तुपूजनम् कुर्यात्) मध्ये कलश विधिना ताम्र कलशं स्थाप्य तदुपरि वास्तु सुवर्ण निर्मित कृकलासमूर्ति अग्न्युत्तारण पूर्वकं स्थापयेत्। ईशाने शिरः नैर्ऋत्ये पादम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अग्न्युत्तारणम् ॥

घृतेनाभ्युक्ष्य—दुग्धधारां दद्यात् वक्ष्यमाण मंत्रैः। संकल्पः अद्येतस्येत्यादि पठित्वा० अमुकगोत्रोऽमुक शर्माहं एतस्या नूतनाया घटिताया देवमूर्तें घंटनकालिक तद्दोष निवर्त्तनपूर्वकं सारुप्यादि लाभयोगत्व सम्पादनाय चाग्न्युत्तारणसूक्तेन जलदुग्धराभि रभिषेक्ष्यामि इति संकल्पयेत्।

॥ अग्नि सूक्तम ॥

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि ।
पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥१॥

ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि ।
पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥२॥

ॐ उमज्ज्मन्नुप वेतसे ऽ वतर नदीष्वा ।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमं नो यज्ञं
पावक वर्ण्णꣳ शिवं कृधिः ॥३॥

ॐ अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्त्याँस्तेऽ
अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥४॥

ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया ।
आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ स नѸ पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ऽइहावह ।

ॐ पावकया यश्चित यन्त्याकृपा क्षामान् रूरूचऽउषसो न भानुना । तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणऽ आ यो घृणे न ततृषाणो ऽ अजरः ॥७॥

ॐ नमस्ते हरषे शोचिषे नमस्ते ऽ अस्त्वर्च्चिषे । अन्न्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मब्भ्यः Ѹ शिवो भव ॥८॥

ॐ नृषदे व्वेड़प्सुषदे व्वेड् बर्हिषदे व्वेड् व्वनसदे व्वेट स्वर्व्वि दे वेट् ॥६॥

ॐ ये देव देवानां यज्ञिया यज्ञियानाѸ संवत्सरीणमुप भागमासते । अहुतादो हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो घृतस्य ॥१०॥

ॐ ये देवा देवेष्ष्वधि देवत्त्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽ अस्य । येब्भ्यो नऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽ अधिस्न्नुषु ॥११॥

ॐ प्राणदाऽअपानदा व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः। अन्न्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मब्भ्यѸ शिवो भव ॥१२॥ इति सूक्तम् ॥

एवं अग्न्युत्तारणं कृत्वा प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।। अथ प्राण प्रतिष्ठा ।।

जलं गृहीत्वा—अस्य प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि च्छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता—आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्यां नूतन मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । तां मूर्तिं दक्षिण हस्तेन स्पृशन् । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः। अस्या प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः । पुनः ॐ आं ह्रीं कौं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः । अस्या प्रतिमाया जीव इहस्थितः । पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः। अस्या प्रतिमाया सर्वाणि इन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्त्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु व्विश्वेदेवा सऽइहमादयन्तामोँ ३।। प्रतिष्ठ । अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन । प्रतिमां दक्षिण हस्तेन स्पृशन् ॐ ॐ इति पंचदशवारं मन्दं मन्दं पठित्वा अनेनास्याः प्रतिमाया गर्भाधानादयः पंचदश संस्काराः सम्पद्यन्ताम् इति पठेत् किंचिज्जलं क्षिपेत् । अथ तस्या एव मूर्तेः नेत्रे स्वर्णशला-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कयोन्मीलयन् (मधुघृताभ्याम्) ॐ वृत्रस्यासिकनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि । इति पठेत् । वास्तु आवाहनमंत्र—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वा वेशोऽअनमीवो भवानः । यत्वे महे प्रति तनो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे । वास्तु पुरुषं कलशोपरि स्थापयेत् ।

॥ प्रार्थना ॥

भगवन् देव देवेश ब्रह्मादि दैवतात्मकः ।
तव पूजां करिष्यामि प्रसादं कुरु मे प्रभो ॥

ॐ ह्रीं नमो भगवन् वास्तु पुरुष महावल पराक्रम सर्व-देवताश्रित शरीर ब्रह्मपुत्र सकल ब्रह्माण्ड धारिन् भूम्यर्पित मस्तक पुरपत्तन प्रासादगृह वापीकूपादि संनिवेश सानिध्यकर विश्वंभर परम पुरुष स्वरुप शंखचक्र शार्ङ्गधनुः कर वरदा भय हस्त वास्तो नमस्ते ।

एह्येहि भगवन् वास्तो सर्व देवैरधिष्ठित
भगवन् कुरु कल्याणं गृहेस्मिन् सन्निधो भव

ॐ वास्तुपुरुष इह स्वागतो भव सुप्रसन्नो भव इत्यावाह्य

ॐ वास्तवे नमः षोडशोपचारैः पूजयेत् ।

वास्तु पुरुषाय वलिदानम्—ॐ एह्येहि भगवन् वास्तो इमं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मयोपनीतं बलिं गृहाण ममगृहमच्छिद्रं कुरु सकल दुष्ट ग्रह भूत पिशाच वेताल ब्रह्म राक्षसेभ्यो रक्ष रक्ष स्वाहा। नाना पक्वान्नं संयुक्तं नाना गन्ध समन्वितम्। बलिं गृहाण देवेश वास्तु दोषं प्रणाशय। सफल नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणा दीपं बलिं दत्वा प्रार्थयेत्॥ प्रार्थना—

यज्ञ भागं प्रतीक्षस्व पूजां चैव बलिं मम
नमो नमस्ते देवेश मम स्वस्ति करो भव॥
नमस्ते वास्तु देवेश सर्व विघ्न हरो भव
शान्ति कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छमे॥

अर्घ्यदान—पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञ रक्षार्थ हेतवे
त्वद्विना नैव सिध्यन्ति यज्ञदानान्य नेकशः॥
अयोने भगवन् भर्ग ललाट स्वेद संभव
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं वास्तो स्वामिन्नमोस्तुते॥
वास्तोष्पते महादेव रक्ष त्रैलोक्य रक्षकः
भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
वरदत्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ शिखिने नमः एष सदीप पायस वलिं न मम ॥ इत्थं सर्वेभ्यो दद्यात् ॥

॥ वास्तु स्थापनम् ॥

यावच्चन्द्रो नगाः सूर्यं तिष्ठन्त्य प्रति घातिता
तावत्वयात्र देवेश स्थेयं भक्त्यानुकंपया ॥

अपक्व कुंभं (काष्ठ पेटिकायां स्थाप्यम्) ॐ नमो वरुयेति खातमध्ये संस्थाप्य—ॐ वरुणस्योत्तम० ॐ इमम्मे वरुण० ॐ उरुᳪ हि राजा० एभिः मंत्रैः जलं पूरयेत्—सप्तधान्यं प्रक्षिपेत् । मंत्रः—अन्नं प्रजापति साक्षात् अन्न मेव प्रजापतिः ।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि जगदन्नेन वर्द्धते ॥

गर्त मध्ये स्थापयेत् मृदा पूरयेत्—स्वस्ति लिखित्वा नारिकेल पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा—श्री सूक्तं पठेत् ।

पूजितोऽसि मयादेव होमाद्यै रर्च नैः शुभैः
प्रसादं कुरु देवेश देहि मे गृहजं सुखम् ॥
वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्यादि रत प्रभो
मद्गृहं धनधान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा
भगवन् सर्व देवेश त्वं पिता सर्व देहिनाम्
यज्ञरूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जानता जानता वापी शास्त्रोक्तं न कृतं हि यत्
एतच्च पूर्ण मेवास्तु प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
स्वागतं देव देवेश मद्भाग्या त्त्वमिहागतः
प्राकृतत्वं च मां दृष्ट्वा बालवत्परिपालय ॥
यथात्वं धरणिं कृत्स्नां सर्वदा धरसि प्रभो
हिताय सर्व लोकानां तथा धारयमद्गृहम् ॥
इष्टान् कामान् प्रयच्छत्वं अरिष्टं च विनाशय
पुत्रपौत्रादि वृद्धिं च सततं कुरु देवनः
सशैल सागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्द्धनि ॥
तथेदं वह कल्याण संपत्संततिभिः सह
देवेश वास्तु पुरुष सर्व विघ्न विनाशक
शांति कुरु सुखं देहि सर्व कामान्प्रयच्छमे ॥
इति पठित्वा नारिकेलं समर्पयेत् ।

॥ मण्डप पूजनम् ॥

ईशान कोणादारभ्य मध्ये चतुरः स्तंभान् पूजयेत् । ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम् ब्रह्मणे नमः । ॐ ऊर्द्ध्वऽउषुणऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता । ऊद्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भि-र्व्विह्वयामहे । नागमात्रे नमः । ॐ आयंगौः पृश्नि० शाखा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वन्धनम् । ॐ यतो यतः समीहसे० स्तंभाभि मंत्रणम् । (एवं सर्वत्र कुर्यात्) ॐ इदं विष्णुः० विष्णवे नमः। ऊर्द्ध० आयंगौ० यतोयतः ॥२॥ ॐ नमः शंभवा० ऊर्द्ध० आयंगौ० यतोयतः ॥३॥ ॐ त्रातारमि० इन्द्राय नमः । ऊर्द्ध० आयंगौ० यतोयतः ॥४॥ (वहिः द्वादश स्तंभान् पूजयेत्) ईशाने— आकृष्णेन० सूर्याय नमः ॥१॥॥ ई० पू० मध्ये—गणानान्त्वा० गणपतये नमः ॥२॥ पूर्वाग्नेयमध्ये—यमायत्वा यमाय नमः ॥३॥ अग्निकोणे—नमोस्तु सर्पे० शेषाय नमः ।४। आग्नेय दक्षिण अन्तरात्मे—यदक्रन्द प्रथम० स्कन्दाय नमः ।५। द० नै० अन्तराले—वायो येते० वायवे नमः ॥६॥ नैऋत्ये— आप्यायस्व समे० सोमाय नमः ॥७॥ नै० प० मध्ये—इमम्मे वरुण० वरुणाय नमः ॥८॥ प० वा० अन्तराले—वसोः पवित्र० वसुभ्यो नमः ॥९॥ वायव्ये—वयᳬ धनदाय नमः ॥१०॥ उ० वा० अन्तराले—बृहस्पतेऽअति० बृहस्पतये नमः ॥११॥ उ० ई० अन्तराले—विश्वकर्मह्नविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृक्षोर वद्धयम् । तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा सत् ॥१२॥ सर्वेषु स्थंभेषु देवानावाह्य— ऊर्द्धऽऊषुण० आयंगौ० यतोयतः मंत्रान् पठित्वा पूजयेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्व द्वारे—ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं
ऋग्वेद रत्नधातमम्। ॐ ऋग्वेदाय नमः।

दक्षिण द्वारे—ॐ इषे त्त्वोर्ज्जे त्त्वा व्वायवस्थ देवो वः सविता
यजुर्वेद प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमायकर्म्मणऽआप्यायद्ध्वमघ्न्याऽ
इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेन
ईशत माघशꣳ सो द्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात
बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि ॥२॥ ॐ यजु-
र्वेदाय नमः।

पश्चिम द्वारे—ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
साम निहोता सत्सि बर्हिषि ॥३॥ ॐ सामवेदाय नमः

उत्तर द्वारे—ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
अथर्व शंय्योरभि स्त्रवन्तुनः ॥४॥ ॐ अथर्व वेदाय नमः

तोरण निधानम्—पूर्वे ॐ सुदृढ तोरणाय नमः। दक्षिणे ॐ
सुभद्र तोरणाय नमः।

पश्चिमे—ॐ सुभीम तोरणाय नमः ॐ सुहोत्राय नमः।

प्रति द्वारेषु द्वौ द्वौ पाठ कर्त्तारौ वेदस्य। ॐ उर्ध्वद्वार
श्रियै नमः ॐ अधः देहल्यै नमः। वाम दक्षिण स्तंभयोः पूज-
नम्। द्वारेषु द्वौ द्वौ कलशौ कोणेषु एकैक कलशः मध्येऽपि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकैक कलशं कलश विधिना निधाय—दशदिक्पालानावाह्य पूजयेत् पश्चाद्दश दिक्षुवलिं देयम्। पताकां ध्वजं समुच्छ्रयेत् पंचवर्ण महाध्वजम् ॐ इन्द्रस्य वृष्णो इति मंत्रेण रोपयेत्। ॐ ब्रह्म यज्ञानम्—इति मंत्रेण पूजयेत्।

(मेखलापूजनम्) ॐ इदं विष्णु० ॐ विष्णवे नमः ॥१॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं० ॐ ब्रह्मणे नमः ॥२॥ ॐ नमस्ते रुद्र० ॐ रुद्राय नमः ॥३॥ योनिपूजा—ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मात्वा हिंꣳ सीन्मा माहिꣳ सीः ॐ जगत्प्रसूत्यै नमः। कंठ पूजा—नीलग्रीवा० ॐ कंठाय नमः। नाभि पूजा—ॐ नाभिर्मेचित्तं विज्ञानं पायुर्मेपचितिर्भसत्। आनन्द नन्दा वाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जंघाभ्यां पद्भ्यां धर्मोसि विशि राजा प्रतिष्ठितः।

॥ अथ प्रधान वेद्यां सर्वतोभद्रमण्डल देवानामावाहनम् ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्प्रथमं पुरस्ता द्विसी मतः सुरुचो व्वेनऽ आवः। सबुध्न्याऽउपमा अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः। ॐ भू० ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमा:० ॥१॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवाव्वाजस्य संगथे। ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥२॥ ॐ तमीशानं जगतस्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्त्थुषस्पतिं धियं जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । ॐ भू० ईशानाय० ईशानमा० ॥३॥ ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्रꣳ हवामहे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः । ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥४॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाꣳसि प्प्र मुमुग्ध्यस्मत् । ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥५॥ यमायत्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे । ॐ भू० यमाय० यममा० ॥६॥ ॐ असुन्न्वन्तम यजमानमिच्छस्तेनस्ये त्यामन्न्विहि तस्करस्य । अन्यमस्म्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु । ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥७॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमान स्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः । अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳस मानऽ आयुः प्प्रमोषीः । ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥८॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । व्वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥९॥ ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वा रुद्रेब्भ्यस्त्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऽऽआदितेब्भ्यस्त्वा सञ्ज्ञानाथां द्यावा पृथिवी मित्रा वरुणौ त्त्वा वृष्ट्यावताम्। व्व्यन्तु व्वयोक्तꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्ग्गच्छ व्वशा पृश्निर्भूत्त्वा दिवङ्गच्छ ततो नो व्वृष्टि मावह। चक्षुष्पाऽ अग्नेऽसि चक्षुर्म्मेपाहि। ॐ भू० अष्टवसुभ्यो० अष्टवसूना० ।१०। ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुतते नमः। ॐ भू० एकादशरुद्रेब्भ्यो० एकादशरुद्राना० ॥११॥ ॐ यज्ञो देवानां प्रत्त्येति सुम्म्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आवोऽर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्यादꣳ होश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासत्। ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्याना० ॥१२॥ ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो वले नेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐ भू० अश्विभ्याम्० अश्विनौ० ॥१३॥ ॐ व्विश्वेदेवासऽआगत शृणुता मऽइमꣳ हवम्। एदं बर्हि र्निषीदत। उपयाम गृहीतोऽसि व्विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यऽएषते योनिर्व्विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यः। ॐ भू० सपैतृक विश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृक विश्वान् देवाना० ॥१४॥ ॐ अभित्त्यं देवꣳ सवितारमोण्योः कविक्क्रतुमर्च्चामि सत्यसवꣳ रत्नधामभि प्प्रियं मतिं कविम्। ऊद्ध्वा यस्यामतिब्भाऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः प्प्रजाब्भ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नु प्प्राणन्तु प्प्रजास्त्वमनुप्प्राणिहि। ॐ भू० सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षाना० ॥१५॥ ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः। ॐ भू० अष्टकुलनागेभ्यो० अष्टकुलनागाना० ॥१६॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्व्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम। स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट् ताभ्यः स्वाहा। ॐ भू० गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आ० ॥१७॥ ॐ यदक्रन्दः प्प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्त्यं महि जातं तेऽअर्व्वन्। ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा० ॥१८॥ ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः। ॐ भू० वृषभाय० वृषभमा० ॥१९॥ ॐ यते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलन्निहत स्याव धावति। मातद्भूम्यामाशिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्त दुशद्भ्यो रातमस्तु। ॐ भू० शूलाय० शूलमा० ॥२०॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्त्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधि-भिरोषधीः। ॐ भू० महाकालाय० महाकाल० ॥२१॥ ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्मांश्च।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुक्रश्चऽक्कृतपाश्चात्यꣳ हाः। ॐ भू० दक्षादिसप्तगणेभ्यो० दक्षादिसप्तगणाना० ॥२२॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्। ॐ भू० दुर्गायै० दुर्गामा० ॥२३॥ ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा। ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥२४॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्। ॐ भू० स्वधायै० स्वधामा० ॥२५॥ ॐ परं मृत्योऽअनु परेहि पन्था यस्तेऽ अन्यऽइतरो देवयानात् चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत व्वीरान्। ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगाना० ॥२६॥ ॐ गणानान्त्वा०। ॐ भू० गणपतये० गणपति० ॥२७॥ ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ भू० अद्भ्यो० अपः आ० ॥२८॥ ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो व्विमहसः। स सुगोपात मो जनः। ॐ भू० मरुद्भ्यो० मरुतः आ० ॥२९॥ ॐ स्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरानिवेशनी। यच्छा नः शर्म्म

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्प्रथाः। ॐ भू० पृथिव्यै० पृथिवीमा० ॥३०॥ ॐ इमम्मे व्वरुण श्रृधी हवमद्या च मृड़व। त्वामवस्यु रा चके। ॐ भू० गंगादिनदीभ्यो० गंगादि नदीः आ० ॥३१॥ ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयोभूरभि माव्वाहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतांगणः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा। ॐ भू० सप्त सागरेभ्यो० सप्तसागराना० ॥३२॥ ॐ प्रपर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठानावश्चरन्ति स्वसि चऽइयानाः। ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः। व्विष्णोर्व्विक्रमणमसि व्विष्णोर्व्विक्रान्तमसि व्विष्णोः क्रान्तमसि। ॐ भू० मेरवे० मेरुमा० ॥३३॥ ॐ गणानान्त्वा०। ॐ भू० गदायै० गदामा० ॥३४॥ ॐ त्रिंᳬ शद्धाम व्विराजति व्वाक्पतंगाय धीयते। प्रतिवस्तोरहद्युभिः। ॐ भू० त्रिशूलाय० त्रिशूलमा० ॥३५॥ ॐ महाँ२॥ऽइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्रायत्त्वैषते योनिर्महेन्द्राय त्वा। ॐ भू० वज्राय० वज्रमा० ॥३६॥ ॐ व्वसु च मे वसति श्चमे कर्म्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च मऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। ॐ भू० शक्तये० शक्तिमा०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥३७॥ ॐ इड एह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात्। ॐ भू० दण्डाय० दण्डमा०॥३८॥ ॐ खड्गो व्वैश्वदेवः श्श्वा कृष्णः कर्णो गर्द्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिᳪहो मारुतः कृकलासः पिप्पका: शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः। ॐ भू० खड्गाय० खड्गमा० ॥३९॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मद वाधमं व्वि मध्यमᳪ श्रथाय। अथा व्वयमादित्यव्व्रते तवा नागसोऽअदितये स्याम। ॐ भू० पाशाय० पाशमा० ॥४०॥ ॐ अᳪ शुश्चमे रश्मिश्चमेऽदाब्भ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाᳪ शुश्चमेऽन्तर्य्यामश्च म ऐन्द्र वायवश्च मे मैत्रा वरुणश्च मऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। ॐ भू० अंकुशाय० अंकुशमा० ॥४१॥ ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमी दसदन्मातरंपुरः। पितरं च प्रयन्त्स्व। ॐ भू० गौतमाय० गौतममा० ॥४२॥ ॐ अयन्दक्षिणा व्विश्वकर्मा तस्य मनो व्वैश्वकर्म्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारᳪ स्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाजऽऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्त्वया मनो गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः। ॐ भू० भरद्वाजाय० भरद्वाजमा० ॥४३॥ ॐ इदमुत्तरात्त्स्वस्तस्य श्रोत्रᳪ सौवᳪ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मथी मन्थिनऽएकविंशाद् द्वैराजं विश्वामित्रऽऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः। ॐ भू० विश्वामित्राय० विश्वामित्रमा० ॥४४॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्। ॐ भू० कश्यपाय० कश्यपमा० ॥४५॥ ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्व्वैश्व व्यचसं व्वर्षाश्चक्षुष्यो जगती व्वार्षी जगत्त्याऽऋक्समम्मृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद् द्वैरुपं जगदग्नि ऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्प्रजाभ्यः। ॐ भू० जगदग्नये० जमदग्निमा० ॥४६॥ ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्प्राणो भौवायनो व्वसन्तः प्राणायनो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रा दुपांशुरुपांशो स्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं व्वसिष्ठऽऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः। ॐ भू० वसिष्ठाय० वसिष्ठमा० ॥४७॥ ॐ अत्र पितरो मादयद्ध्वं य्यथाभागमावृषायद्ध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषायिषत। ॐ भू० अत्रये० अत्रिमा० ॥४८॥ ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः। ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भू० अरुन्धत्यै० अरुन्धतीमा० ॥४९॥ ॐ अदित्यै रास्ना-सीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासि घर्म्माय दीष्व। ॐ भू० ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीमा० ॥५०॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० । ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥५१॥ ॐ इन्द्राया हि धियेषितो व्विप्रजूतः सुतावतः। उपब्ब्रह्माणि व्वाग्घतः। ॐ भू० ब्राह्मयै० ब्राह्मी-मा० ॥५२॥ ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः। ॐ भू० वाराह्यै० वाराहीमा० ॥ ५३ ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० । ॐ भू० चामुण्डायै० चामुण्डामा० ।५४। ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा व्वाजस्य संगथे। ॐ भू० वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥५५॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्त मयागिरि-शन्ताभिचाकशीहि। ॐ भू० माहेश्वर्यै० माहेश्वरीमा० ॥५६॥ ॐ समख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मा मऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि। ॐ भू० वैनायक्यै० वैनायकीमा० ॥५७॥ इत्यावाह्य ॐ मनोजूति० इति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः पूजयेत्। मण्डलोपरि कलश विधिना कलशं स्थाप्य पूजनं कुर्यात् तदुपरि सुवर्णमयीमूर्ति अग्न्युत्तारण पूर्वकं संस्थाप्य षोडशोपचारैः पूजयेदिति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अग्निस्थापनम् ॥

तत्रादौ पंचभू संस्कारः तद्यथा—त्रिभिः कुशैः प्राक्संस्थं उदक संस्थं वा भूमिंत्रिः परि समुह्य तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य श्रुवमूलेन प्रागग्र प्रादेश मात्रमुत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुलिख्य उल्लेखन क्रमेण अनामिकां गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य कांस्यपात्रे ताम्रपात्रे वा अग्निमानीय आग्नेयां निधाय ॐ हुं फट् इति मंत्रेण नैर्ऋत्यां दिशि क्रव्यादांशं परित्यज्य ॐ क्रव्यादग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतुरि प्रवाहः। इहैवापमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥१॥ पश्चात्। ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवां आसादपादिह। आत्माभिमुखमग्निं संस्थापयेत्। अग्न्यानयन पात्रे साक्षतोदकं निषिच्य इन्धनानि क्षिपेत्। प्रज्वलिताऽग्नौ अग्निमुखं (चुल्लुक गृहीतेन जलेन चतुर्दिक् भ्रामयित्वा क्षिपेत्) कृत्वा ध्यायेत्। ॐ चत्वारि शृंगा त्रयोऽस्य पादा द्वेशीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य। त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्याँ २॥ आविवेश। ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमि मातः वरुण पितः मेष ध्वज प्राङ्मुखः मम सन्मुखो भव इति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथा नामाग्निं प्रतिष्ठाप्य। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ अग्नेनय सुपथा रायेऽअस्मान् विशानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोद्ध्यस्मज्ज्रु-हुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम। अग्नये नमः मंत्रेण वहिरग्निं पंचोपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत्। ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्य वर्णममलं समृद्धं विश्वतो-मुखम्। इति प्रार्थ्य॥ वायव्य कोणे अग्नि पूजनम् (मध्येपि गन्ध पुष्पादीन दद्यादग्ने र्नसंशयः। वहिः नैवेद्य मात्रं तु दातव्य मिति निश्चयः)

॥ नवग्रहाणामावाहनम् ॥

ऐशान्यां ग्रह पीठे सूर्यादिनवग्रहाणामावाहनम्। आचम्य देशकालौ स्मृत्वा—अस्मिन् कर्मण्यादित्यादि ग्रहादीनां स्थापनमर्चनं च करिष्ये इति। तत्रमध्ये वर्तुलाकारे मण्डले रक्त-पुष्पाक्षतैः। ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्म-र्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ भू० सूर्याय० सूर्यमा० ॥१॥ आग्नेयां अर्द्धचन्द्राकारे श्वेतपुष्पाक्षतैः। ॐ इमन्देवाऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकम्ब्राह्म-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

णानाᳬ राजा ॐ भू० चन्द्राय० चन्द्रमा० ॥२॥ याम्यां त्रिकोण मण्डले रक्तपुष्पाक्षतैः। ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाᳬ रेताᳬ सि जिन्वति। ॐ भू० भौमाय० भौममा० ॥३॥ ऐशान्यां धनुषाकारे हरितपुष्पाक्षतैः। ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्त्वा मिष्टापूर्ते सᳬ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत। ॐ भू० बुधाय० बुध० ॥ ४ ॥ उत्तरे अष्टदलमण्डले पीतपुष्पाक्षतै० ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ भू० बृहस्पतये० बृहस्पतिमा० ॥५॥ पूर्वे चतुरस्त्रमण्डले शुक्लपुष्पाक्षतैः। ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपानᳬ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु। ॐ भू० शुक्राय० शुक्रमा० ॥६॥ पश्चिमे नराकारमण्डले कृष्णपुष्पाक्षतैः ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्त्रवन्तु नः। ॐ भू० शनैश्चराय० शनैश्चरमा० ॥७॥ नैऋत्ये मकराकार मण्डले कृष्णपुष्पाक्षतैः। ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वृता । ॐ भू० राहवे० राहुमा० ॥८॥ वायव्यां खड्गाकार मण्डले धूम्रपुष्पाक्षतैः । ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्याऽअपे-शसे । समुद्भिरजायथाः । ॐ भू० केतवे० केतुमा० ॥९॥

॥ दक्षिण पार्श्वे अधिदेवता स्थापनम् ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् । ऊर्व्वारुक-मिव बन्धनान्न्मृत्योर्म्मुक्षीयऽमातृतात् । ॐ भू० ईश्वराय० ईश्वरमा० ॥१॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप-मश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषामुँ मइषाण सर्व्वलोकं मऽइषाण । ॐ भू० उमायै० उमामा० ॥२॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरी-षात् । श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातं तेऽअर्व्वन् । ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्द० ॥३॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्त्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्द्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवेत्त्वा । ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥४॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योति व्याधि महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माशुः सप्तिःपुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमो नः कल्पताम् । ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥५॥

ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव व्वृत्रहा शूर व्विद्वान् । जहि शत्रूँ२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः । ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥६॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्माः पित्रे । ॐ भू० यमाय० यममा० ॥७॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्त्वाक्षित्याऽउन्नयामि । समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः । ॐ भू० कालाय० कालमा० ।८।

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय । ॐ० भू० चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तमा० ॥९॥

॥ वाम भागे प्रत्यधिदेवता स्थापनम् ॥

ॐ अग्निन्दूतं पुरो दधे हव्व्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ२॥ आसादयादिह । ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥१॥

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्ज्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे । ॐ भू० अद्भयो० अपः आ० ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः । ॐ भू० पृथिव्यै० पृथिवीमा० ॥३॥

ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाᳬं सुरे स्वाहा । ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥४॥

ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभि भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम् । ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥५॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः । पूषासि घर्म्माय दिष्व । ॐ भू० इन्द्राण्यै० इन्द्राणीमा० ॥६॥

ॐ प्रजापते न त्वदेता न्यन्यो व्विश्वा रुपाणि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु व्वयᳬं स्याम पतयो रयीणाम् । ॐ भू० प्रजापतये० प्रजापतिमा० ॥७॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ भू० सर्पेभ्यो० सर्पाना० ॥ ८ ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरूचो व्वेनऽ आवः । सबुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः । ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ उत्तरे पंचलोक पालानां स्थापणम् ॥

ॐ गणानांत्त्वा० । ॐ भू० गणपतये० गणपतिमा० ॥१॥

ॐ अम्बेऽअम्बिके० । ॐ भू० दुर्गायै० दुर्गामा० ॥२॥

ॐ व्वायो येते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोम पीतये । ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥३॥

ॐ घृतं घृत पावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। ॐ भू० आकाशाय० आकाशमा० ॥४॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षताम् । ॐ भू० अश्विभ्यां० अश्विनौ आ० ॥५॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे । ॐ भू० वास्तोष्पतये० वास्तोष्पति० ॥६॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्न्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं व्वैश्वानरं क्षैत्रजित्त्याय देवाः। ॐ भू० क्षेत्राधिपतये० क्षेत्राधिपति० ॥७॥

॥ मण्डलस्य वाह्ये दशदिक् पालानामावाहनम् ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳫं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः । ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥१॥

ॐ त्वं नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्न्वश्च-व्वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषᳫं रक्षमाणस्तव-व्रते । ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥२॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे । ॐ भू० यमाय० यममा० ॥३॥

ॐ असुन्न्वन्न्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्क-रस्य । अन्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्य-मस्तु । ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ॥४॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणे ह बोद्ध्युरुशᳫं समानऽआयुः प्प्रमोषीः । ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥५॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरᳫं सहस्रिणीभिरुप-याहि यज्ञम् । वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयंपात स्वस्तिभिः सदानः । ॐ भू० वायवे० वायुमा० ॥६॥

ॐ व्वयᳫं सोमव्व्रते तवमनस्तनूषु विब्भ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ भू० सोमाय० सोममा० ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसाम सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। ॐ भू० ईशानाय० ईशानमा० ॥८॥

ॐ अस्मेरुद्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳ सते स्तुवते धायि पज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँ२॥ ऽ अवन्तु देवाः। ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥९॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म्म सप्रथाः। ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तमा० ॥१०॥

हस्ते पुष्पाण्यादाय—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादि ग्रहेभ्यः अधिदेवेभ्यः प्रति—अधिदेवेभ्य सलोकपालेभ्यः सदिक् पालेभ्यो नमः आवाहिता सर्वे यथा यथा स्थानमागत्य सुप्रतिष्ठिताः सन्तो वरदा भवन्तु इति षोडशोपचारैः पूजयेत्। ईशाने कलश स्थापन—विधिना रुद्र कलशं संस्थाप्य तत्र ॐ असंख्याता सहस्राणि—मंत्रेण असंख्यात रुद्रानावाह्य पूजयेत्। तदनन्तरम्—॥ प्रार्थनां कुर्यात् ॥

ॐ ग्रहाऽऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्प्रियाणां वोहमिषमूर्जꣳ समग्रभसुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहाणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्ट तमम् ।

यत्कृतं पूजनं देव भक्ति श्रद्धा विवर्जितम्
परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायकाः ॥१॥
आदित्यादि ग्रहाः सर्वे नाना वर्णा पृथग्विधाः
सुप्रसन्ना प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा ॥२॥
आयु र्विद्यां धनं सौख्यं यशः शौर्यं च पुष्कलम्
ददतु धन पुत्रान्मे सर्वान्कामांश्च वै सदा ॥३॥
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वराः
यत्पूजितं मया देवाः परिपूर्णं तदस्तु मे ॥४॥

ब्रह्मामुरारि स्त्रिपुरान्त—

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरूच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः
सद्बुद्धिश्च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ॥
राहुर्वाहुवलं करोतु सततं केतुंः कुलस्योन्नतिम्
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूलाग्रहाः ॥

आयुश्च वित्तं च तथा सुखं च धर्मार्थ लाभौ बहु पुत्रतां च ।
शत्रुक्षयं राजसुपूज्यतां च तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु ॥
बृहस्पतिं दैत्य गुरुं महीजम्—शनैश्चरं चन्द्रसुतं च राहुम् ।
दिवाकरं चन्द्रमसं सुकेतुं विभूति यज्ञे सततं नमामि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनया पूजया आवाहिता देवाः प्रीयन्ताम्—इति जलं क्षिपेत्।

विशेषार्घ—आदित्यादि ग्रहा सर्वे पीठे चात्र प्रतिष्ठिताः
ते गृह्णन्तु मयादत्तं इदमर्घ्यं नमोऽस्तु वः
विशेषार्घं समर्पयामि ॥

ॐ एतद् ग्रहाद्यर्चनं परिपूर्णमस्तु। अस्तु परिपूर्णम् इति विप्राः।

॥ आग्नेयां पीठे योगिनी पूजनम् ॥

हस्ते जलमादाय—ॐ अमुकोऽहं अमुक कर्मणि शुभता प्राप्त्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती आदि पूर्वकं चतुःषष्टिः योगिनी पूजनं करिष्ये।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषानो यथा व्वेदसामसद् वृधे रक्षितापायुर दब्धः स्वस्तये। ॐ भू० दिव्य योगिन्यै० दिव्य योगिनीमा० ॥१॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्न्यः शूरऽइषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढा नड्वा नाशुः सप्तिः पुरन्धि र्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ भू० महायोगिन्यै० महायोगिनी० ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ महाँ२।। इन्द्रो व्वज्र हस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयाम गृहीताऽसि महेन्द्राय त्त्वेषते योनिर्महेन्द्रायत्त्वा। ॐ भू० सिद्धयोगिन्यै० सिद्ध-योगिनी० ।।३।। ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः। ॐ भू० माहेश्वर्यै० माहेश्वरीमा० ।।४।। ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्प्रतिमां व्विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसामाभि मᳬस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः। ॐ भू० प्रेताक्ष्यै० प्रेताक्षी० ।।५।।

ॐ स्वर्ण्णघर्म्मः स्वाहा स्वर्ण्णार्क्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्ज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्यः स्वाहा। ॐ भू० डाकिन्यै० डाकिनी० ।।६।। ॐ सत्यञ्चमे श्रद्धा चमे जगच्चमे धनञ्च मे व्विश्वञ्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। ॐ भू० काल्यै० कालीमा० ।।७।। ॐ भायै दार्व्वाहारं प्रभायाऽअग्न्येघं ब्रध्नस्य व्विष्टपायाभिषेक्तारं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्पलोकाय प्प्रकरितारᳬ सर्व्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यै व्वधायोपमन्थितारं मेधाय व्वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रिम्। ॐ भू०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कालरात्र्यै० कालीरात्रीमा० ॥ ८ ॥ (प्रथमाष्टपंक्ति)

(द्वितीय पंक्ति) ॐ जिह्वा मे भद्द्रं व्वाङ्महो मनो मन्न्युः स्वराड् भामः । मोदाः प्प्रमोदाऽअङ्गुलीरंगानि मित्रं मे सहः । ॐ भू० निशाकर्यै० निशाकरीमा० ॥१॥ ॐ हिङ्का-राय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रदन्ते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रपोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सꣳ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा । ॐ भू० हुंकार्यै० हुंकारी-मा० ॥२॥ ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मेऽर्क्कश्च मे सूर्य्यश्च मे प्प्राणश्च मे ऽ श्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चमेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । ॐ भू० सिद्धिवैतालिकायै० सिद्धिवैतालिकामा० ॥३॥ ॐ पूषन् तव व्व्रते व्वयं न रिष्येम कदाचन । स्तोतारस्तऽइह स्म्मसि ॐ भू० ह्रींकार्य्यै० ह्रींकारीमा० ॥४॥ ॐ व्वेद्या व्वेदिः समाप्यते बर्हिषा वर्हिरिन्द्रियम् । यूपेन यूपऽआप्प्यते प्प्रणीतोऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्निरग्निना। ॐ भू० भूतडामरायै० भूतडामरामा० ॥५॥ ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो व्वाजस्य शतिनस्प्पतिः। मूर्द्धा कवो-रयीणाम्। ॐ भू० उर्ध्वकेश्यै० उर्ध्वकेशीमा० ॥६॥ ॐ इमं मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्यु राचके। ॐ भू० विरूपाक्ष्यै० विरूपाक्षीमा० ॥७॥ ॐ यमाय यम सूम-थर्व्वभ्योऽवतोकाऽ संव्वत्सराय पर्य्यायिणीं परिवत्सराया विजाशामिदा वत्सराया तीत्वरीमिद्द्वत्सरायातिष्क द्वरीं व्वत्स-राय व्वि जर्ज्जराऽ संवत्सराय पलिक्नीमृभुभ्योऽजिनसन्धऽ साद्धयेभ्यश्चर्म्मम्नम्। ॐ भू० शुष्कांग्यै० शुष्कांगीमा० ।८।

(द्वितीयाष्ट पंक्तिः) तृतीय पंक्तिः ॥

ॐ असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्व्वं वसि त्रितो गुह्येन व्व्रतेन। असि सोमेन समया व्विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि। ॐ भू० नरभोजिन्यै० नरभोजनीमा० ॥१॥ ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युग्नं चित्र श्रवस्तमम्। ॐ भू० फेत्कार्यै० फेत्कारीमा० ॥२॥ ॐ अग्ने बृहन्नुष सामूर्द्ध्वोऽअस्थान्निर्ज्जगन्वान् तमसो ज्ज्योतिषागात्। अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्गऽआजातो व्विश्वा सद्मान्यप्राः। ॐ भू० वीरभद्रायै० वीरभद्रामा० ॥३॥ ॐ भग प्रणेतर्भग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्यराधो भगे मान्धियमुदवा ददन्नः। भग प्रनो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्न्नृ चन्तः स्याम। ॐ भू० धूम्राक्ष्यै० धूम्राक्षीमा० ॥४॥ ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मां स्त्रिवृते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृ हद्द्रथन्तरे पक्षौ स्तोमऽआत्मा छन्दाꣳ स्यङ्गानि यजूꣳषि नाम। साम ते तनूर्व्वाम देव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छं घिष्ण्णपाः शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छस्व पतः। ॐ भू० कलह-प्रियायै० कलहप्रियामा० ॥५॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपिता-महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्न्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्। ॐ भू० राक्षस्यै० राक्षसीमा० ॥६॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भ-सर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदनन्न्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद। ॐ भू० घोररक्ताक्ष्यै० घोररक्ता-क्षीमा० ॥७॥ ॐ व्वरुण प्राविता भुवन्न्मित्रो व्विश्वाभि-रूतिभिः। करतान्नः सुराधसः। ॐ भू० विशालाक्ष्यै० विशा-लाक्षीमा० ॥८॥ इति तृतीयाष्ट पंक्तिः॥ (चतुर्थ पंक्ति)

ॐ हꣳ सः शुचिषद्व सुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्द्दु-रोणसत्। नृषद्वर सदृत सद्व्योम सदब्जा गोजाऽऋतजाऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अद्रिद्रजाऽऋृतम्बृहत् । ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥१॥
ॐ सुसन्दृशन्त्वा व्वयं मघवन् वन्दिषीमहि । प्र नूनं पूर्णवन्धु-
रस्तुतो यासि व्वशाँ२॥ ऽअनु योजान्विन्द्रते हरी । ॐ भू०
चण्ड्यै० चण्डीमा० ॥२॥ ॐ प्प्रतिपदसि प्प्रतिपदेत्त्वानु-
पदस्यनुपदे त्त्वा सम्पदसि सम्पदे त्त्वा तेजोऽसि तेजसे त्त्वा ।
ॐ भू० वाराह्यै० वाराहीमा० ॥३॥ ॐ देवीरापोऽअपान्न-
च ऽ ऊर्म्मिर्हविष्ष्यइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तं देवेब्भ्यो देवत्त्रा
दत्त शुक्क्रपेब्भ्यो येषां भागस्थ स्वाहा। ॐ भू० मुण्डधारिण्यै०
मुण्डधारिणीमा० ॥४॥ ॐ देवीर्द्वारोऽअश्विना भिषजेन्द्रे
सरस्वती। प्प्राणं न व्वीर्य नसिद्वारो दधुरिन्द्रियं व्वसुवने व्वसु-
धेयस्य व्यन्तु यज । ॐ भू० भैरव्यै० भैरवीमा० ॥५॥ ॐ
ॐ देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्र मवर्द्धयन् । श्रोत्त्रं न कर्ण्ण-
योर्य्यशो जोष्ट्रीब्भ्यां दधुरिन्द्रियं व्वसुवने व्वसुधेयस्य व्यन्तु
यज । ॐ भू० वीरायै० वीरामा० ॥६॥ ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः
प्रसवेऽश्विनो र्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम् । अश्विनो र्भैष-
ज्ज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाऽभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन
वीर्य्यायान्नाद्यायाऽ भिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण वलाय श्रियै
यशसेऽभिषिञ्चामि : ॐ भू० भयंकर्यै० भयंकरीमा० ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोयेन्नु मघवन्नभूयऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते। ॐ भू० वज्रधारिण्यै० वज्रधारिणीमा० ॥७॥ इति चतुर्थाष्टक पंक्तिः। (पंचमपंक्ति)

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। ॐ भू० क्रोधायै० क्रोधामा० ॥१॥ ॐ इषे त्त्वोर्ज्जे त्त्वा व्वायव स्थ देवोवः सविता प्प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआप्यायद्ध्व मग्घ्न्याऽइन्द्राय भागं प्प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्ममामा वस्तेन ऽ ईशत माघशꣳ सोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यात् बह्वी र्य्यजमानस्य पशून्पाहि। ॐ भू० दुर्मुख्यै० दुर्मुखीमा० ॥२॥ ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राद्ध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्त्वा मखस्य त्त्वा शीर्ष्णे। ॐ भू० प्रेतवाहिन्यै० प्रेतवाहिनीमा० ॥३॥ ॐ व्विश्वानि देव सवित दुरितानि परासुवः। यद्भद्रं तन्नऽआसुव। ॐ भू० कर्कायै० कर्कामा० ॥४॥ ॐ असुन्न्वन्तम यजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्न्यमस्म्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु। ॐ भू० दीर्घलंबोष्ठ्यै: दीर्घलंबोष्ठीमा० ॥५॥ ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्य्यश्च मे प्प्राणश्च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे क्षितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। ॐ भू० मालिन्यै० मालिनीमा० ॥६॥

ॐ बह्वीनां पिताब्बहुरस्य पुत्र श्चिश्चा कृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्पसूतः। ॐ भू० मंत्रयोगिन्यै० मंत्रयोगिनीमा० ॥७॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुतते नमः। ॐ भू० कालाग्नि मोहिन्यै० कालाग्नि मोहिनीमा० ॥ ८ ॥ इति पंचमाष्ट पंक्तिः ॥ (षष्ठ पंक्ति)

ॐ ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्त्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयञ्च मे सुखं च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिन ञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। ॐ भू० मोहिन्यै० मोहिनीमा० ॥१॥ ॐ तेऽआचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्त्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून् व्विदूध्यताᳬ सम्विदानेऽआर्त्नीऽइमे व्विष्फ्फुरन्तीऽअमित्रान्। ॐ भू० चक्रायै० चक्रामा० ॥२॥ ॐ वेद्या व्वेदिः समाप्यते बर्हिषारिन्द्रियम्। यूपेनयूपऽआप्प्यते प्प्रणीतोऽअग्निरग्निना। ॐ भू० कुण्डलिन्यै० कुण्डलिनीमा० ॥३॥ ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भिर्व्वाजिनीवती। यज्ञंव्वष्टु धियाव्वसुः। ॐ भू० वालुकायै० बालुकामा० ॥४॥ ॐ अस्कन्नमद्य देवेब्भ्यऽआज्यᳪ संभ्रिया समङ्घ्रिणा व्विष्णो मात्त्वा वक्क्रमिषं व्वसुमतीमग्ने ते च्छाया-मुपस्त्थेषं व्विष्णोः स्त्थानमसीतऽइन्द्रोव्वीर्यमकृण्णो दूद्ध्वर्वोऽद्ध्वर ऽआस्त्थात्। ॐ भू० कौबेर्यै० कौबेरीमा० ॥५॥ ॐ तेऽ आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं व्विब्भृतामुपस्थे। ऽअप शत्रून् व्विद्ध्यताᳪ सं व्विद्वानेआर्त्निऽइमे विष्फुरन्तीऽअमि-त्त्रान्। ॐ भू० यमदूत्यै० यमदूतीमा० ॥६॥ ॐ मही द्यौः चनऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नोभरीमभिः। ॐ भू० करालिन्यै० करालिनीमा० ॥७॥ ॐ उपयाम गृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधाऽअसि च नो मयिधेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवायत्त्वा सवित्रे। ॐ भू० कौशिक्यै० कौशिकीमा० ॥८॥ इति षष्ठपंक्ति। (सप्तम पंक्ति)

ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम्। भवा-षाजस्य सङ्गथे। ॐ भू० यक्षिण्यै० यक्षिणीमा० ॥१॥ ॐ कार्षीरसि समुद्द्रस्य त्त्वाक्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भि-रग्मत समोष धीभिरोषधीः। ॐ भू० भक्षिण्यैः भक्षिणीमा० ॥२॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पतिवेदनम्। उर्व्वारुक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिवबन्धनादितो मुक्षीय मामुतः। ॐ भू० कौमार्यै० कौमारी-मा० ॥३॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्व्वलोकं मऽइषाण। ॐ भू० मंत्रवाहिन्यै० मंत्रवाहिनीमा० ॥४॥ ॐ व्विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रे स्त्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोऽसि। व्वैष्णवमसि व्विष्णवेत्त्वा। ॐ भू० विशालायै० विशालामा० ॥५॥ ॐ ब्राह्मण प्रद्य व्विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयᳬं सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्द्राता देवत्रा गच्छत प्प्रदातारमाविशत। ॐ भू० कार्मुक्यै० कार्मु-कीमा० ॥६॥ ॐ या व्याघ्रं व्विषूचिकोभौ व्वृकं च रक्षति। श्येनं पतत्रिणᳬं सिᳬं हᳬं सेमं पात्वᳬं हसः। ॐ भू० व्याघ्र्यै० व्याघ्रीमा० ॥७॥ ॐ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽएकादश च मऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नव-दश च मे नवदश च मऽएकविᳬं शतिश्च म एकविᳬं शतिश्च मे त्रयोविᳬं शतिश्च मे त्रयोविᳬं शतिश्च मे पंचविᳬं शतिश्च मे पंचविᳬं शतिश्च मे सप्तविᳬं शतिश्च मे सप्तविᳬं शतिश्च मे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवविंᳬ शतिश्च मे नवविंᳬ शतिश्च मे ऽ एकत्रिंᳬ शच्च म एकत्रिंᳬ शच्च मे त्रयस्त्रिंᳬ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । ॐ भू० महाराक्षस्यै० महाराक्षसीमा० ॥८॥ इति सप्तम पंक्तिः ॥

(अष्टम पंक्तिः) ॐ प्रेता जयतानरऽइन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु । उग्राव: सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ । ॐ भू० प्रेतभक्षिण्यै० प्रेतभाक्षिणीमा० ॥१॥ ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्राऽअधिभूम्याम् । तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ॐ भू० धूर्जट्यै० धूर्जटीमा० ॥२॥ ॐ सुपर्णोऽसि गरूत्मां स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृ ह द्द्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽ आत्मा छन्दाᳬ स्यङ्गानि यजूᳬ षि नाम । साम ते तनूर्व्वाम देव्यं यज्ञा यज्ञियं च्छं धिष्णयाः शफाः सुपर्णोऽसि गरूत्मान्दिवं गच्छ स्वः एत । ॐ भू० चिकटायै० विकटामा० ॥३॥ ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्तभिचाकशीहि । ॐ भू० घोररूपायै० घोररूपामा० ॥४॥ ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वाम्रद्यशिरो सद्ध्यासं देवयजने पृथिव्व्याः । मखाय त्त्वा मखस्य त्त्वा शीर्ष्णो। ॐ भू० कपालिकायै० कपालिकामा० ॥५॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे० । ॐ भू० निकलायै नमः निकलामा० ॥६॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वृष्णऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा व्वृष्णऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्म्मै देहि व्वृषसे नोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा व्वृषसे नोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्म्मै देहि। ॐ भू० आमलायै० अमलामा० ॥७॥ ॐ भायै दार्व्वाहारं प्प्रभायाऽ अग्न्येधं ब्रध्नस्य व्विष्टपायाभिसेक्तारं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्प्रकरि तारᳬं सर्व्वेब्भ्यो लोकेब्भ्यऽउपसे क्तारमवऽऋत्यै व्वधायोपमन्थितारं मेधाय व्वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रिम्। ॐ भू० सिद्धिप्रदायै० सिद्धिप्रदामा० ॥८॥ इति अष्ट पंक्तिः ॥

ईशाने० जयायै नमः। पूर्वे० विजयायै नमः। आग्नेये० अजितायै नमः। अजितामा०। दक्षिणे० अपराजितायै नमः। अपराजितामा०। नैऋत्ये० क्षेमकर्त्र्यै० क्षेमकर्त्रीमा०। पश्चिमे० लक्ष्म्यै० लक्ष्मीमा०। वायव्ये० वैष्णव्यै० वैष्णवीमा०। उत्तरे० पार्वत्यै० पार्वतीमा० ॥

हस्ते पुष्पाण्यादाय—ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये। ॐ चतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि षोडशोपचारैः पूजयेत्।

पश्चात् कलश विधिना त्रीन् कलशान् संस्थाप्य पूजयित्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदुपरि सुवर्णमयीं अग्न्युत्तारण पूर्वकं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीमावाहयेत् पूजयेत्। तद्यथा—हस्ते पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा—ॐ यथेमां व्वाचं कल्याणी० ॥१॥ ॐ भू० महाकाल्यै० आ० स्था० ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या० ॐ भू० महालक्ष्म्यै० आ० स्था० ॥२॥ ॐ पावकानः सरस्वती० ॐ भू० महासरस्वत्यै० आ० स्था० ॥३॥ षोडशोपचारैः संपूज्य प्रार्थनां कुर्यात्। ॐ खड्गं चक्र गदेषु० अक्षस्रक् परशुं० घंटाशूलहला०। यथेमां व्वाचं० श्रीश्चते लक्ष्मी० पावकानः सर० ॥

ॐ दिव्ययोगी महायोगी सिद्धयोगी गणेश्वरी
प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्री निशाचरी ॥१॥
हुंकारी सिद्ध वेताली खर्परी भूतगामिनी
उर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांस भोजिनी ॥२॥
फूत्कारी वीर भद्राक्षी धूम्राक्षी कलह प्रिया
रक्ता च घोर रक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी ॥३॥
चौरिका मारिका चण्डी वाराही मुण्ड धारिणी
भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेत वासिनी ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कालाक्षी मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी
कुण्डला ताल कौमारी यमदूती करालिनी ॥५॥
कौशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी यन्त्र वाहिनी
दुर्घटे विकटे घोरे कपाले विष लंघने ॥६॥
चतुः षष्टिः समाख्याता योगिन्योहि वरप्रदाः
त्रैलोक्य पूजिता नित्यं देव मानुष योगिभिः ॥७॥
पूजिताऽहं महादेवीं योगिनीं परमेश्वरीम्
योगाभ्यासेन सन्तुष्टा परं ध्यान समन्विता ॥८॥
दिव्य कुण्डल संकाशा दिव्य ज्वाला त्रिलोचना
मूर्तिमती ह्यमूर्ता च उग्राचैवोग्र रूपिणी ॥९॥
अनेक भाव संयुक्ता संसारार्णव तारिणी
यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥१०॥ इति अनया पूजया श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिता चतुःषष्टिः योगिन्यः प्रीयन्ताम् ।

॥ वायव्यां क्षेत्रपाल पूजनम् ॥

श्वेतवस्त्राच्छादिते पीठे आवाहयेत् । संकल्पः—अस्मिन्कर्मणि एकोनपंचाशत् क्षेत्रपालानां पूजनं करिष्ये ।

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणो याभ्याᳪं रक्षाᳪं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्यपहꣳ स्यग्ग्ने। ताब्भ्यां पतेम सुकृताम्मु लोकं य्यत्रऽऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः। ॐ भू० अजराय० अजरमा० ॥१॥ ॐ प्रथमा वाꣳ सरथिना सुवर्ण्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि व्विश्वा। अपिप्प्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्ज्योतिः प्प्रदिशा दिशन्ता। ॐ भू० व्यापकाख्याय० व्यापकाख्यमा० ॥२॥ ॐ इन्द्रस्य व्वज्ज्रोऽसि मित्त्रावरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा युनज्मि। अव्यथायै त्त्वा स्वधायै त्त्वाऽरिष्टोऽअर्ज्जुनो मरुतां प्प्रसवेन जयायाम मनसा समिन्द्रियेण। ॐ भू० इन्द्रचौराय० इन्द्रचोरमा० ॥३॥ ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं व्वज्रबाहुं व्वसिष्ठासोऽअब्भ्यर्च्चन्त्यर्क्कैः। स न स्तुतो व्वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ भू० इन्द्रमूर्तये० इन्द्रमूर्तिमा० ॥४॥ ॐ उक्षा समुद्द्रोऽअरुणः सुपर्ण्णः पूर्व्वस्य योनिं पितुरा विवेश। मद्ध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्म्मा व्विचक्क्रमे रजसप्पात्यंतौ। ॐ भू० उक्षाभिधाय० उक्षाभिधमा० ॥५॥ ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमाव्वयम्। अग्निर्म्मा तस्म्मादेनसो व्विश्श्वानुञ्चत्वꣳहसः। ॐ भू० कूष्माण्डाय० कूष्माण्डमा० ॥६॥ ॐ स नऽइन्द्राय यज्ज्यवे व्वरुणायमरुद्भ्यः। व्वरिवोवित्परि स्रव। ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥७॥ ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म व्वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम। ॐ भू० बाहुकाख्याय० बाहुकाख्यमा० ॥८॥ ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो व्वरुण्यादुत। अथो यमस्य षड्वीशात्सर्व्वस्म्माद्देव किल्विषात्। ॐ भू० विमुक्ताय० विमुक्तमा० ॥९॥ ॐ कुर्व्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजिविषेच्छतꣳ समाः। एवं त्वयि नान्न्यथेतोऽस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे। ॐ भू० लिप्तकाय० लिप्तकमा० ॥१०॥ ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्द्रोऽभ्य वहि यमाणः सलिल प्प्रप्लु तो ययो रोजसास्कभिता रजाꣳ सि व्वीर्येभिर्व्वीरतमा शविष्ठा। या पत्त्येतेऽअप्प्रतीता सहोभिर्व्विष्णूऽअगन्वरुणा पूर्व्वहूतौ। ॐ भू० लीलालोकाय० लीलालोकमा० ॥११॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः। ॐ भू० एकदंष्ट्राय० एकदंष्ट्रमा० ॥१२॥ ॐ अर्म्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं व्वीर्यायाविपालं तेजसे ऽ जपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्द्राय गृहपꣳ श्रेयसे व्वित्तध माद्ध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्। ॐ भू० ऐरावताख्याय० ऐरावताख्यमा० ॥१३॥ ॐ या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऽओषधीः पूर्व्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामह ᳪ शतं धामानि सप्त च। ॐ भू० ओषधीघ्नाय० ओषधीघ्नमा० ॥१४॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०। ॐ भू० बन्धनाख्याय० बन्धनाख्यमा० ॥१५॥ ॐ देव सवितः प्प्रसुव यज्ञं प्प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्व्वः केतपूः। केतं नः पुनातु व्वाचस्पतिर्व्वाचं नः स्वदतु। ॐ भू० दिव्यकायाय० दिव्यकायमा० ॥१६॥ ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणःऽऊर्णासूत्रेण कवयो व्वयन्ति। अश्विना यज्ञ ᳪ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणो भिषज्ज्यन्। ॐ कम्बलाख्याय० कंबलाख्यमा० ॥१७॥ ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शत ᳪ सेनाऽजयत्साकमिन्द्रः। ॐ भू० क्षोभणाख्याय० क्षोभणाख्यमा० ॥१८॥ ॐ इम ᳪ साहस्त्र ᳪ शतधारमुत्सं व्यच्च्यमानः सरिरस्य मद्ध्ये। घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने माहि ᳪ सीः परमे व्योमन्। गवयमारण्यमनुते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्न्वो निषीद। गवयं ते शुगृच्छतु। ॐ भू० गवे० गवामा० ॥१९॥ ॐ कुम्भो व्वनिष्ठुर्ज्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्ग्रे योन्न्यां गर्ब्भोऽअन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः। ॐ भू० घण्टाभिधाय० घंटाभिधमा० ॥२०॥ ॐ आक्रन्दय बलभोजो नऽआधा निष्टनिहि दुरिता बाधमानः। अप प्प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुनाऽइत इन्द्रस्य मुष्टिरसि व्वीडयस्व। ॐ भू० व्यालाय० व्यालमा० ॥२१॥ ॐ इन्द्रायाहि तू तुजानऽउप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः। ॐ भू० अनुस्वरुपाय० अनुस्वरुपमा० ॥२२॥ ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत्। ॐ भू० चन्द्रवारुणाय० चन्द्रवारुणमा० ॥२३॥ ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽअर्त्तनं घोषाय भयमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं महसे व्वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शंखध्मं व्वनाय व्वनपमन्न्यतोऽरण्याय दावपम्। ॐ भू० फटाटोपाय० फटाटोपमा० ॥२४॥ ॐ उग्रं लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्प्रमुदा। भवस्य कंठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्। ॐ भू० जटालाय० जटालमा० ॥२५॥ ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँर॥ रनु। ॐ भू० क्रतवे० क्रतुमा० ॥२६॥ ॐ आजिघ्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कलशं०। ॐ भू० घंटेश्वराय० घंटेश्वरमा० ॥२७॥ ॐ व्वायो शुक्रोऽअयामि ते मद्ध्वोऽअग्ग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्प्पार्होदेव नियुत्वता। ॐ भू० विटंकाय० विटंकमा० ॥२८॥ ॐ दैव्या होतारा ऽऊर्द्ध्वं मद्ध्वरं नोऽग्नेर्ज्जिह्वामभि गृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम्। ॐ भू० मणिमतये० मणिमतिमा० ॥२९॥ ॐ त्रीणि तऽआहुर्द्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्प्सु त्रीण्यन्तः समुद्द्रे। उतेव मे व्वरुणश्छन्त्स्यर्व्वन्न्यत्त्रातऽआहुः परमं जनित्त्रम्। ॐ भू० गणबन्धाय० गणबन्धमा० ॥३०॥ ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽअर्त्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकᳬं शब्दायाडम्बराघातं महसे व्वीणावादं क्रोशाय तूणवद्ध्म मवरस्यराय शंखद्ध्मं व्वनाय व्वनपमन्न्यतोऽरण्याय दावपम्। ॐ भू० डामराय० डामरमा० ॥३१॥ ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभो रूपाः पार्ज्जन्न्याः। ॐ भू० ढुण्ढिकर्णाय० ढुण्ढिकर्णमा० ॥३२॥ ॐ व्वनस्प्पते व्वीड्वंगो हि भूया अस्म्मत्सखा प्प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धोऽअसि व्वीडयस्वास्त्था ते जयतु जेत्त्वानि। ॐ भू० स्थविराय० स्थविरमा० ॥३३॥ ॐ सुपर्ण्णं व्वस्ते मृगोऽअस्या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्प्रसूता । यत्त्रा नरः सं च व्वि च द्रवन्ति दत्त्रस्म्मब्भ्यमिषवः शर्म्म यᳬसन्। ॐ भू० दन्तुराय० दन्तुरमा० ॥३४॥ ॐ अग्ग्नेऽअक्छाव्वदेह नः त्प्रतिनः सुमना भव । प्प्र नो यच्छ सहस्त्रजित् त्वᳬ हि धनदाऽअसि स्वाहा । ॐ भू० धनदाय० धनदमा० ॥३५॥ ॐ भद्रं कर्णेभि शृणु । ॐ भू० नागकर्णाय० नागकर्णमा० ॥३६॥ ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियᳬ हस्तौ मे कर्म्म व्वीर्यम् । आत्माक्षत्त्रमुरो मम । ॐ भू० मारीगणाय० मारीगणमा० ॥३७॥ ॐ अपां फेनेन नमुचे शिरऽइन्द्रो दवर्त्तयः । व्विश्वा यजजयः स्पृधः । ॐ भू० फेत्काराय० फेत्कारमा० ॥३८॥ ॐ इदᳬ हविः प्रजननं मेऽ अस्तु दशवीरᳬ सर्वगणᳬ स्वस्तये । आत्मसनि प्प्रजासनि पशुशनि लोकसन्न्यभयसनि । अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽअस्म्मासुधत्ता । ॐ भू० चीकराय० चीकरमा० ॥३६॥ ॐ या व्याग्घ्रं व्विषूचिकोभौ व्वृकं च रक्षति । श्येनं पतत्त्रिणᳬ सिᳬ सेमं पात्त्वᳬ हसः । ॐ भू० सिंहाकृतये० सिंहाकृतिमा० ॥४०॥ ॐ मृगो न भीमो कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः । सृकᳬ सᳬ शाय पविमिन्द्रतिग्मं व्वि शत्रून् ताढ़ि व्वि मृधोनुदस्व । ॐ भू० मृगाय० मृगमा०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥४१॥ ॐ इन्दुर्दक्षः श्येनऽऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः। महान्त्सधस्थे ध्रुवऽआ निषत्तोऽनमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः। ॐ भू० यक्ष्मप्रियाय० यक्ष्मप्रियमा० ॥४२॥ ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्म्मी याति समदामुपस्थे अनाविद्धया तन्वा जय त्वꣳ सत्वा व्वर्म्मणो महिमा पिपर्त्तु। ॐ भू० मेघवाहनाय० मेघवाहनमा० ॥४३॥ ॐ तीव्रान् घोषान् कृण्वते व्वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह व्वाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदै रमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूँ२॥ ऽ रनपव्ययन्तः। ॐ भू० तीक्ष्णोष्ट्राय० तीक्ष्णोष्ट्रमा० ॥४४॥ ॐ व्वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्व्वृद्ध्या। एषस्य राथ्यो व्वृषा षड्भिश्चतुर्भिरेदगन्ब्रह्माऽकृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये। ॐ भू० अनलाय० अनलमा० ॥४५॥ ॐ आदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्म्यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं व्विष्टम्भनी दिशामधिपत्नीं भुवनानाम्। ऊर्म्मिर्द्रप्सोऽअपामसि व्विश्वकर्म्मा तऽऋषिरश्विनाद्ध्वर्य्यू सादयतामिहत्त्वा। ॐ भू० शुक्रतुण्डाय० शुक्रतुण्डमा० ॥४६॥ ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं व्वायुश्छिद्रं पृणातु ते। सूर्य्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया। ॐ भू० अन्तरिक्षाय० अन्तरिक्षमा० ॥४७॥ ॐ सं बर्हिरङ्क्ताꣳ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हविषा घृतेन समादित्यैर्व्वसुभिः सम्मरुद्भिः। ससिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत्स्वाहा। ॐ भू० बर्बरकाय० बर्बरकमा० ॥४८॥ ॐ पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण व्विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा। ॐ भू० पावनाय० पावनमा० ॥४९॥

हस्ते पुष्पाण्यादाय—ॐ अजरादि एकोनपंचाशत् क्षेत्रपालेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि। षोडशोपचारैः संपूज्य—मध्ये ताम्र कलशं कलश विधिना—संस्थाप्य पूर्णपात्रे सौवर्ण क्षेत्रपालं ॐ नहि स्पशमविदन्नन्न्यमस्माद्वै श्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः। इत्यावाह्य पूजयेच्च। हस्ते पुष्पाण्यादाय प्रार्थनां कुर्यात्।

कर कलित कपालः कुण्डली दण्ड पाणिः
अरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती
क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतु
र्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

भ्राजद्वक्र जटाधरं त्रिनयनं नीलांजनाद्रि प्रभम्
दोर्दण्डान्तगदा कपालमरुणं श्रग्गन्ध वस्त्रावृतम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घंटाघुर्घुर मेखला ध्वनि मिलद् धुंकार भीमं प्रभुम्
वन्दे संहित सर्पकुण्डलाधरं श्रीक्षेत्रपालं सदा ॥२॥
चण्डं प्रति चण्डं करधृत दण्डं कृतरिपु खण्डं सौख्यकरम्
लोकं सुखयन्तं विलसितवन्तं प्रकटित दन्तं नृत्यकरम् ॥
डमरूध्वनिसंवं तरलवतंसं मधुर हसन्तं लोकभरम्
भज भज भूतेशं प्रकट महेशं भैरववेषं कष्ट हरम् ॥३॥
यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमि कम्पायमानम्
सं सं संहारमूर्तिं शिरमुकुटजटा शेखरंचन्द्रविम्बम् ।
दं दं दं दीर्घकेशं विकृत नखमुखं चोर्ध्व रेखा कपालम्
पं पं पं पाप नाशं प्रणत पशुपतिं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥
अनेन पूजनेन क्षेत्रपालाः प्रीयन्ताम् ॥ इति ॥

॥ अथ कुशकण्डिका ॥

अग्नेः दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा तदुपरि प्राग्ग्रान् कुशानास्तीर्य अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव कुशोपरि निदध्यात् । अग्नि परिक्रमेण प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदद्ध्यात् । ततः परिस्तरणम् । आग्नेयादीशानान्तम् । ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम् । नैर्ॠत्याद्वापव्यान्तम् । अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम् । अग्नेरुत्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रतः पश्चिमदिशि पवित्र छेदनार्थं कुशत्रयं। पवित्रकरणार्थं साग्र-मनन्तगर्भं कुशपत्र द्वयम्। प्रोक्षणी पात्रं। आज्य स्थाली। चरू स्थाली। सम्मार्जनार्थं पंच कुशाः। वेणीरूपं कुशत्रयं। खमिधतिस्रः। श्रुवः। आज्यम्। चर्वर्थं तण्डुलाः। षट् पंचाशदुत्तरशतद्वयावच्छिन्नमित तण्डूल पूर्णपात्रम्। दक्षिणा वरो वा। पवित्र च्छेदन कुशैः पवित्रे छित्वा दक्षिणावर्तं ग्रंथिं दत्वा सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निःक्षिप्य अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षणी पात्रस्य सव्य हस्ते करणम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षणी जलेन यथा सादित वस्तु सेचनम्। अग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्। आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदक मासिच्य आसादितांस्तंडुलान् प्रक्षिप्य। आज्यं ब्रह्माधिश्रयति। तदुत्तरतः स्वयं चरुमेव युगपदग्नौ आरोपयेत्। इषच्छृते चरौ ज्वलदुल्मुकं प्रदक्षिणमाज्यचर्वोः समन्ताद् भ्रामयेत् दक्षिण पाणिना श्रुवसादाय अधोमुखमग्नौ तापयित्वा सव्ये पाणौ कृत्वा दक्षिणेन सम्मार्जनाग्रेण मूलतोऽग्रपर्यन्तं मूलैरग्रमारभ्य अधस्तान्मूलपर्यन्तं सम्मृज्य प्रणीतोदकेनाभिषिच्य पुनः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात्—पूजयेत्० ॐ आवाहयाम्यहं देवम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रुवं शेवधिमुत्तमम्। स्वाहाकार स्वधाकार वषट्कार समन्वितम्। इत्यनेन संपूज्य कंकण रक्तसूत्रं बध्नीयात्। आज्यमुत्थाप्य चरोः पूर्वेण नीत्वाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयित्वा चरुमुत्थाप्य आज्यस्य पश्चिमतो नीत्वा ज्यस्योत्तरतः स्थापयित्वा आज्यमग्नेः पश्चादानीय चरुम् चानीय आज्यस्योत्तरतः निदध्यात्। पूर्ववत्पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूय अवलोक्य तस्मादप द्रव्य निरसनं पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। उपयमन कुशानादाय उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधः तिस्रः प्रक्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन चुलुक गृहीतेन ईशानादि उत्तरपर्यन्तम् संप्रोक्ष्य इतरथा वृत्तिं कुर्यात्। ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ श्रुवेणाज्याहुतिः जुहोति। तत्तदाहुत्यनन्तरं श्रुवावस्थित शेष घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। इति॥

पातित दक्षिण जानुः। अथाहुतयः। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये (इति मनसा) ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय (इत्याज्य भागौ) ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। एता महाव्याहृतयः। यथा वाणप्रहाराणाम्। शान्ति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रस्तु—पुष्टिरस्तु—तुष्टिरस्तु सुशान्तिर्भवतु। सर्वप्रायश्चित संज्ञकं चवारुणी होमः। ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसिष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाᳬसि प्प्र मुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ स त्वन्नोऽअग्नेऽवमोभवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो व्वरुणᳬ रराणो व्वीहि मृडीकᳬ सुहवो नऽएधि स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां नमः ॥२॥ ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्तिपाश्च सत्यमित्व मयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषजᳬ स्वाहा ॥३॥ इदमग्नये अयसे न मम ॥३॥ ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः। तेभिर्न्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥४॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमᳬ श्रथाय। अथा व्वयमा दित्यव्रते तवा नागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यादितये न मम ॥५॥ एताः सर्वप्रायश्चित संज्ञकाः। उदक स्पर्शः। गन्धाक्षतपुष्पैः वायव्यकोणे वह्नि रग्निः। ॐ चत्वारिशृंगा— इति मंत्रेण संपूज्य। ग्रहहोमपुरः सरं प्रधान होमं कुर्यात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वम्—गणेशाम्बिका—सूर्यादिग्रहाणां—अधिदेवता — प्रत्यधिदेवता—पंचलोकपालानां—दशदिक्पालानां च समित्तिलचर्वाज्य द्रव्यैः अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात्। पश्चात्—सर्वतोभद्र वास्तु चतुःषष्टीः योगिनीनां क्षेत्रपालानां च ब्रह्मादि मण्डल देवतानां च तत्तन्मंत्रैराज्यहोमः। पुनरपि अग्नि पूजनम् कुर्वन्ति—ॐ स्वाहा स्वधा युताग्नये वैश्वानराय नमः इति पंचोचारैः संपूज्य अनया पूजया स्वाहा स्वधा युतोग्निः प्रीयताम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

॥ अथ वलिदानम् ॥

ॐ गणपतये नमः भोगणपते इमं सदीपं दधिभाष भक्त वलिं समर्पयामि मम सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।

ॐ अम्बिकायै नमः भो अम्बिके इमं० समर्पयामि० ममगृहे सकुटुंबस्य आयुकर्तृ क्षेमकर्तृ० वरदा भव ॥२॥

पृथक् पृथक् दशदिक्पालेभ्यः अथवा एकतंत्रेण यथा—ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा र्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा र्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहा र्वाच्यै दिशे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहोदिच्यै दिशे स्वाहा र्वाच्यै दिशे स्वाहोद्ध्वायै दिशे स्वाहा र्वाच्यै दिशे स्वाहा र्वाच्यै दिशे स्वाहा। दशदिक् पालेभ्य इमं सदीपं० भो इन्द्रादि दशदिक्पाला—ममगृहे० आयुकर्तार क्षेमकर्तार वरदा भवन्तु ॥३॥

नवग्रहान् पृथक् पृथक् वा एकतंत्रेण—ॐ ग्रहाऽउर्ज्जा हुतयो ॥४॥

वास्तु वलि मंत्रः ॐ वास्तोष्पते प्रति० इति ॥५॥

योनिनी वलिदानमंत्रः। ॐ योगे योगे तवस्तरम् इति।६।

प्रधान देवता—ॐ इदं विष्णु० अथवा नमस्ते० इति ।७।

क्षेत्रपाल—ॐ नहि स्पशमवि—इति ॥८॥

जलप्रक्षेपः ॐ द्यौ० हिङ्कराय स्वाहा इति ॥

॥ पूर्णाहुति होमः ॥

संकल्पः अमुक गोत्रोमुक शर्माहं परिपूर्णता सिद्धये वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होम महं करिष्ये। नारिकेल घृतपुरितं कौशेय पट्ट कौसुभंसूत्र पुष्पमालादिभिः वेष्टितं कुंकुमादिभिः सिक्त्वा ॐ पूर्णाहुत्यै नमः इति पंचोपचारै संपूज्य श्रुवपात्रे संस्थाप्य सपत्नीको यजमान आचार्येण सह जगदीश्वरं मनसा ध्यायन् पूर्णाहुतिं जुहुयात्। तत्र मंत्राः। ॐ समुद्द्रादूर्म्मि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र्मधुमाँ२॥ उदारदुपाऽं शुना सममृत्वमानट् । घृतस्य नाम गृह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्यनाभिः ॥१॥ ॐ व्वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मि न्यज्ञे धारयामा नमोभिः उपब्रह्मा श्रृणवच्छस्यमानं चतुः श्रृङ्गोऽवमीद् गौर ऽ एतत् ॥२॥ ॐ चत्वारि श्रृङ्गा० ॥३॥ ॐ त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृत मन्वविन्दन् । इन्दुऽएकऽं सूर्यऽएकञ्जजानव्वेनादेकऽं स्वधया निष्टतक्षुः ॥४॥ ॐ एताऽअर्षन्ति ह्यद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजा रिपुणा नावचक्षे । घृतस्य धाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्यऽआसाम् ॥५॥ ॐ सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः । एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगाऽइव क्षिपणोरीयमाणाः ॥६॥ ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः । घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥ ७ ॥ ॐ अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो ऽ अग्निम् । घृतस्य धाराः समिधो नसन्तता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः ॥८॥ ॐ कन्याऽइव व्वहतुमेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि । यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धाराःऽअभितत्पवन्ते ॥९॥ ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मस्मासु भद्द्रा द्रवणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवतानो घृतस्य धाराः मधुमत्पवन्ते ॥१०॥ ॐ धामन्ते व्विश्वं भुवनमधि श्रितवन्तः समुद्रे ह्यद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे यऽआभृ-तस्तमश्याम मधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम् ॥११॥ ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्द्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥१२॥ ॐ सप्तते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधाम प्प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधात्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥१३॥ ॐ मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम्। कविᳬ सम्म्राजमतिथिं जना-नामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१४॥ ॐ पूर्ण्णा दर्व्वि परा-पत सुपूर्ण्णा पुनरापत। व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जᳬ शतक्क्रतो स्वाहा ॥१५॥ इदमग्नये वैश्वानराय वसुरूद्रा-दित्येभ्यः शतक्रतवे शतवते अग्नये अद्भ्यः पुरुषाय श्रियै च न मम ॥ इति त्यागः ॥

॥ वसोर्द्धारा मंत्राः (घृतधारा) ॥

ॐ सप्तते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वा सप्तऽऋषयः सप्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धाम प्प्रियाणि। सप्तहोत्राः सप्तधात्त्वा यजन्ति सप्त योनी-राप्पृण स्वा घृतेन स्वाहा ॥१॥

ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्माँश्च। शुक्कश्चऽऋतपाश्चात्यᳬं हाः ॥२॥

ॐ ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च। मितश्च सम्मितश्च सभराः ॥३॥

ॐ ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनाजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्रश्चगणः ॥४॥

ॐ ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च व्विधर्ता च व्विधारय ॥५॥

ॐ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषुणः सदृक्षासः प्प्रतिसदृक्षासऽ एतेन। मितासश्च सम्मितासो नोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽ अस्मिन् ॥६॥

ॐ स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥७॥

ॐ इन्द्रं दैवीर्व्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्न्यथेन्द्रं दैवी-र्व्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एव मिमं यजमानं दैवी च व्विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ इमᳪं स्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयायां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मद्ध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रियᳪं सदनमाविशस्व ।९।

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षिहव्यम् ।१०।

ॐ व्वसोः पवित्रमसि० स्वाहा।

ॐ व्वातश्च मे इत्यारभ्य वेट् स्वाहा इत्यन्तम्। तथा नमस्ते रुद्र—तथा हिरण्य वर्णम् तथा सहस्रशीर्षा इत्यन्तम्। इदं वाजादिभ्योऽग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम। इति घृतधारा होमः।

॥ अग्नि प्रार्थना ॥

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्। तेजः आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन। भो भो अग्ने महाशक्ते सर्व कर्म प्रसाधन। कर्मान्तरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा। भस्म वन्दन—त्र्यायुष करणम्। श्रुवबिल पुष्टेन विभूतिमादाय दक्षिणाऽनामिकया तिलकधारणामित्याचार्यः पूर्वमात्मनः पश्चात् यजमानस्य भस्मांकयेत्। ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने रिति ललाटे। कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे बाहुमूले। तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि वामस्कन्धे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च। यजमान पक्षे तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति वाच्यम्। संश्रव पाशनम्—प्रोक्षिणी पात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानेन अनामिकांगुष्ठाभ्यां प्राशनं कार्यम्—तत्र मंत्रः ॐ यस्माद्यज्ञ पुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्म रूपिणः। तं संश्रव पुरोडाशं प्राश्नामि सुख पुण्यदम्। ततः आचम्य प्रणीता पात्रे निहिते पवित्रे आदाय ग्रंथि मुक्त्वा ताभ्यां शिरः सम्मृज्य ते पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत्। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—ॐ कृतैतत् हवन कर्मणः प्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं प्रजापति दैवतम् ब्रह्मणे तुभ्य-महं संप्रददे। ॐ स्वस्तीति प्रति वचनम्। ततो ब्रह्मग्रंथि विमोकः। प्रणीता जलेन ॐ सुमित्रियान आपः ओषधयः सन्तु ॐ आपः शिवाशिव—शिरसि अभिसिच्य। ॐ दुर्मि-त्रिया स्तस्मै सन्तु योऽस्माद्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां न्यूब्जी कुर्यात्। उपयनम कुशानग्नौ प्रहरेत्। अथ वर्हि होमः। आस्तृत क्रमेण वर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातु विदो गातु वित्वा गातु मित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा। हस्तेनैव जुहुयात्। ततो यजमानः आचार्यादीन् ब्राह्मणान् संपूज्य तेभ्यो दक्षिणां दद्यात्। आरार्तिं कुर्यात्—ॐ ये देवासो दित्येकादशस्थ पृथिव्या मध्येकादशस्थ। अप्सु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षितौ महिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् । ॐ इदᳬं हविः प्प्रजननं मेऽअस्तु दश वीरᳬं सर्व्वंगणᳬं स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽस्मासुधत्ता । ॐ आरात्रि पार्थिवᳬं रजः पितुरप्प्रायिधामभिः । दिवः सदाᳬंसि बृहती व्वि तिष्ठसऽआ त्त्वेषं वर्तते तमः । ॐ अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो० ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारम्० । पुष्पांजलि० ॐ यज्ञेन यज्ञमय सभासद इति । ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतो मुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्यात् सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नोः विष्णुः प्रचोदयात् । इतिदिक्—प्रदक्षिणा—यानि कानि च ।

॥ अभिषेकः ॥

ग्रहवेदी कलशैः प्रधान देवता कलशानामुदकमेकस्मिन्पात्रे एकीकृत्य दूर्वाकुशाग्र पल्लवैः उदङ्मुखाचार्य स्तिष्ठन् जापकाश्च—पत्नी परिवारं च वामतः कृत्वा यजमान प्राङ्मुख मुपविष्टमभिषिं चेयुरेभिः मंत्रैः ।

ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पते-ष्ट्वा साम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥१॥

ॐ देवस्य त्त्वा० सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्रा-ज्येनाभिषिञ्चामि ॥२॥

ॐ देवस्य त्त्वा० अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि। सरस्वत्यै भैषज्येन व्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चा-मीन्द्रस्येन्द्रियेणा बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥३॥

ॐ जिह्वामे भद्द्रं व्वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्प्रमोदाऽअंगुली रङ्गनानि मित्रं मे सहः ॥४॥

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म व्वीर्य्यम्। आत्मा क्षत्त्रमुरो मम ॥५॥

ॐ पयः पृथिव्यां पय० ॥६॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती ॥७॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि० ॥८॥ ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्प्रपितामहाः। पवित्त्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्प्रपितामहाः। पवि-त्त्रेण शतायुषा व्विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥९॥

ॐ अग्नऽआयूꣳषि पवसऽआसुव्वोर्ज्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः । पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥११॥

ॐ पवित्त्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् । अग्ने क्त्वा क्रतूँ२॥ रनु ॥१२॥

ॐ यत्ते पवित्रमर्च्चिष्यग्ने व्वितमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥१३॥

ॐ पवमानः सोऽअद्यनः पवित्त्रेण व्विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा ॥१४॥

ॐ उभाब्भ्यां देव सवितः पवित्त्रेण सवेन च । मां पुनीहि व्विश्वतः ॥१५॥

ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥१६॥

ॐ व्विश्वानि देव सवितदुरितानि परासुव । यद् भद्द्रं तन्न ऽ आ सुव ॥१७॥

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । स चेतसो व्विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥१८॥

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणु धी गिरः । रक्षा तोकमुतत्मना ॥१९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ आपो हिष्ठामयो० ॥२०॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्त-रिक्षᳬं ॥२१॥ ॐ यतोयतः समी० अमृताभिषेकोऽस्तु ॥२२॥

॥ पुराणोक्तश्लोकाअभिषेके ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः
वासुदेवो जगन्नाथ स्तथा संकर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमोवै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षः तथा शिवः
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्ति लंक्ष्मी धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥४॥
एतास्त्वामभिषिंचन्तु देवपत्न्यः समागताः
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध जीव सितार्कजाः ॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिंचन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देवदानव गन्धर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः ॥६॥
ऋषयोः मुनयो गावो देव मातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमानागा दैत्याश्चप्सरसां गणाः ॥७॥
अस्त्राणि सर्व शस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥८॥
सरितः सागराः शैलाः तीर्थानि जलदा नदाः
एते त्वामभिषिंचन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥९॥
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
अभिषिंचतु ते सर्वे धर्मकामार्थ सिद्धये ॥१०॥ इति अमृताभिषेकोऽस्तु । इति अभिषेकः । मंगल स्नानम् । दक्षिणा दानम् । ॐ कृतस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं अमुक मंत्र जापकाय स्तोत्र पाठकाय वा यथोक्त दक्षिणां यथाशक्त्या तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

ॐ कृतस्यामुक कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तत्संपूर्ण फल प्राप्तये च ऋत्विग्भ्यः सूक्त पाठकेभ्योऽमुक मंत्र जापकेभ्यो हवन कर्तृभ्यो अन्येभ्यो नाना गोत्रेभ्यो नाना शर्म्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोक्त दक्षिणां विभज्याहं सम्प्रददे । ॐ कृतानां अमुकामुक कर्मणां सांगता सिद्ध्यर्थं अमुकामुक गोत्रेभ्यः अमुकामुक शर्म्मभ्यः ब्राह्मणेभ्यः युस्मभ्यमहं सम्प्रददे ।

ॐ कृतस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां हवनकर्त्रे ऋत्विजे तुभ्यमहं सम्प्रददे । वा ऋत्विग्भ्यां दातुमहमुत्सृजे वा यथा संख्याम् ऋत्विग्भ्यो दातुमहमुत्सृजे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मण भोजन संकल्पः—ॐ कृतस्यामुक कर्मणः संपूर्णता सिद्धये यथा संख्याकान् नानागोत्रान् नानाभिधान् ब्राह्मणान् (वा कन्या वटुकादीन्) भोजयिष्ये दक्षिणां च दास्ये। गोदान संकल्पः ॐ गोत्र शर्माहं अमुक कर्म सांगता सिद्धयर्थं अमुकगोत्रायामुक शर्मणे ब्राह्मणाय यथा शक्ति अलंकृतां इमां सवत्सां गां रूद्र दैवत्यां तुभ्यमहं सम्प्रददे गौरभवे तन्निष्क्रयं निष्कु परिमितं तदर्द्धं तदर्द्धंवा हिरण्यं दद्यात् गो निष्क्रय भूतं इदं हिरण्यं अग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे। (भूयसी दक्षिणा) ॐ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति पूर्वक कृतेऽस्मिन् कर्मणि न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थं नाना गोत्रेभ्यो नाना शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो अन्ध पंगुभ्यश्च यथा शक्ति यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॐ तत्सत्। (छाया पात्रदानम्) छायापात्रं स्वपुरतः संस्थाप्य गोघृतं पूरयेत् ततः सपत्नीको यजमानः स्वमुखमवलोकयेत् मंत्रः ॐ आज्यंसुराणामाहार आज्यं पापहरं परम्। आज्य मध्ये मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैःप्रमुच्यते। घृतं नाशयतेव्याधिं घृतं च हरते रूजम्। घृतं तेजोधिपूरणम् घृतमायुः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रवर्द्धते। ॐ रुपेण वो रूपमभ्यागांतुथो वो व्विश्ववेदा व्विभजतु। ऋतस्य पथा प्प्रेत चन्द्र दक्षिणा व्विस्वः पश्य व्यन्तरिक्ष षतस्त सदस्यैः। अमुकामुक शर्माहं सकल कष्ट निवृत्तिपूर्वक आयुरारौग्यैश्वर्यामिवृद्धयर्थं शरीर छायाव लोकित घृत भरितंकास्य पात्रं हिरण्य सहितं श्री महा मृत्युंजय देवता प्रीत्यर्थं चन्द्रमा प्रजापति बृहस्पति दैवतं यथा नामगोत्राय (डाकिंस० डाकोत) ब्राह्मणाय दातु-महमुत्सृजे। दक्षिणा—अद्य कृतैतच्छायापात्र दान प्रतिष्ठार्थं मेतद् द्रव्यं अमुक दैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। प्रार्थयेत्—पानि कानि च पापानि मया कामं कृतानिच। छायापात्र प्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा। इति। आशीर्वाद दानम्। अक्षत फलफूल प्रसाद सहिताभिः ब्राह्मणाः। ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो० श्रीर्वर्च्चस्व० पुन स्त्वादित्या० दीर्घायुस्तऽऔषधे० ॐ व्विवस्वन्नादित्यैषते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व। श्रदस्मै नरो व्वर्चसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती व्वाभमश्नतः पुत्रो जायते व्विन्दते धस्वधा व्विश्वहारयऽएधते गृहे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शान्तिरस्तु शिवंचास्तु शुभं चास्तु धनं तथा
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥१॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः
निर्धना सधना सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥२॥
मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः
शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥३॥
आयुष्कामो यशस्कामः पुत्रपौत्रस्तथैव च
आरोग्यं धन कामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते ॥४॥ इति
विप्रहस्ताल्लब्धानि फलादीनि स्वपत्न्या अंचले निदध्यात् ॥

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

पापोऽहं पाप कर्माऽहं पापात्मा पाप संभवः
त्राहि मां पुण्डरीक्ष सर्व पाप हरो हरिः ॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरः
(क्षमस्व परमेश्वरी) ॥२॥
यत्पूजनं कृतं देव भक्ति श्रद्धा विवर्जितम्
तत्सर्वं परिगृह्णन्तु विष्ण्वाद्या सर्व देवताः ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञ कर्मणि
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानाम् प्रसादतः ॥४॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम
तस्मात्कारुण्य भावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥५॥
यश्चापराधं कृतवान् अज्ञानात्पुरुषोत्तम
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥६॥
द्रव्यहीनं तु यत्किंचित् विधिहीनं तु यत्कृतम्
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु सर्वे ऽभीष्टा भवन्तु मे ॥७॥
ज्ञानतो ऽज्ञानतोवा ऽपि यन्न्यूनमधिकं कृतम्
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥८॥
कर्मणा मनसा वाचा स्वल्प बुद्ध्या च यत्कृतम्
तत्सर्वं सफलं भूयात् त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ॥९॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

॥ अथ देवाग्नि विसर्जनम् ॥

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्रप्राशूर्भवासचा । ॐ यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा । एषते यज्ञो यज्ञपते सह सूक्त वाकः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्व्ववीरस्त ज्जुषस्व स्वाहा ॥२॥ ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहा ऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवꣳसवितारं गच्छ स्वाहा मित्रा वरुणौ गच्छ स्वाहा ऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नमो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवंते धूमो गच्छतु स्वर्ज्ज्योतिः पृथिवी भस्मनापृण स्वाहा । यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्

इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु
न्यूनं सम्पूर्णतां पाति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

श्री गणपतिं लक्ष्म्यौ यजमानगृहे तिष्ठतम्—गणपति पीठस्थ पूगीफलंगृहे स्थापयेत् ॥ इति दिक् ॥

ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ पुरूष सूक्तेनांगन्यासः। पूजनंच ॥

देशकालौ संकीर्त्य—अमुकगोत्र अमुकशर्माहं विष्णोः षोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये विष्णु पूजनांगत्वेन षोऽषांग करिष्ये।

वामकरे	ॐ सहस्रशीर्षा—	१	आवाहनम्	सम०
दक्षिणकरे	ॐ पुरूषः—	२	आसनम्	सम०
वाम पादे	ॐ एतावान—	३	पाद्यम्	सम०
दक्षिण पादे	ॐ त्रिपादूर्ध्व—	४	अर्घ्यम्	सम०
वाम जानौ	ॐ ततो व्विरा—	५	आचमनी	सम०
दक्षिण जानौ	ॐ तस्माद्य—	६	स्नानम्	सम०
वामकट्याम्	ॐ तस्माद्यज्ञात्—	७	वस्त्रम	सम०
दक्षिण कट्याम्	ॐ तस्मादश्वा—	८	यज्ञोप	सम०
नाभौ	ॐ तं यज्ञम्—	९	चन्दनम्	सम०
हृदये	ॐ यत्पुरूषम्—	१०	पुष्पम्	सम०
वाम कुक्षौ	ॐ ब्राह्मणोस्य—	११	धूपम्	सम०
दक्षिण कुक्षौ	ॐ चन्द्रमा—	१२	दीपम्	सम०
कंठे	ॐ नाभ्या—	१३	नैवेद्यम्	सम०
वक्रे	ॐ यत्पुरूषे	१४	दक्षिणायुत ताम्वूलं	सम०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अक्ष्णोः ॐ सप्तास्या १५ आरार्ति पूर्वक प्रदक्षिणा सम०
मूर्ध्नि ॐ यज्ञेन १६ नमस्कार सम०

एवं देह न्यासान्कृत्वा पुष्पेण देवं स्पृष्ट्वा देव न्यासान् कुर्यात् ।
अनेन षोऽशोपचारैः कृतेन पूजनेन भगवान् महाविष्णुः प्रीयताम् ॥

॥ अथ श्री सूक्तेनांगन्यासः पूजनंच ॥

शिरसि ॐ हिरन्यवर्णा—१ ध्यानम् सम०
नेत्रयोः ॐ तां आवह—२ आवाहनम् सम०
कर्णयोः ॐ अश्वर्वाम्— ३ आसनन सम०
घ्राणयोः ॐ कांसोसि— ४ पाद्यम् सम०
मुखे ॐ चन्द्रांप्रभा— ५ अर्घ्यम् सम०
ग्रीवायाम् ॐ आदित्य— ६ आचमनं पंचामृतंस्नानम्
पुनः हिरन्यवर्णा आभिषेकः
करयोः ॐ उयैतुमां— ७ वस्त्रयुगम सम०
हृदिः ॐ क्षुत्पिपासा—८ आभरणम् सम
नामौ ॐ गन्धद्वारा— ९ रक्तचन्दन सौभाग्यद्रव्य
सुगन्ध कुंकमं पुष्य दूर्वांकुरू सम०
लिंगे ॐ मनसः— १० पुष्पमालाम् अंगपूजा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गुदे ॐ कर्दमेन— ११ धूपम् सम०
ऊर्वोः ॐ आपःसृ— १२ दीपम् सम०
जानुनोः ॐ आर्द्रापु—१३ नैवेद्यं आचमनम् ऋतुफलं सम०
जंघयोः ॐ आर्द्रायः करि—१४ ताम्बूलम् सम०
चरणयोः ॐ ताम आवह—१५ दक्षिणाम् नीराजनं प्रदक्षिणां सम०
सर्वांगे ॐ यः शुचि— १६ पुष्पांजलिं सम०

एवं स्वशरीरे कुर्यात् । पश्चादेकं पुष्पं गृहीत्वा मूर्त्युपरि न्यासान् कुर्यादितिदिक् ।

॥ अथ रक्षोघ्नसूक्तम् ॥

ॐ कृणुष्व पाजः प्प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२॥ इभेन । तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोस्तासि व्विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥१॥ तवभ्रमासऽआशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः । तपूᳬंष्यग्ग्ने जुह्वा पतङ्गान सन्दितो व्विसृज व्विष्वगुल्कक्काः ॥२॥ प्रतिस्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशोऽअस्याऽअदब्धः । योनो दूरेऽअघशᳬंसो योऽअन्त्यग्ग्ने माकिष्ट्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥३॥ उदग्ने तिष्ठ प्प्रत्यातनुष्व न्न्यमित्राँ२॥ऽओषतात्तिग्ग्महेते । योनोऽअरातिᳬं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समिधान चक्रे नीचातं धक्ष्यत सं न शुष्कम् ॥४॥ उर्ध्वो भव प्प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्व्यान्न्यग्ने। अवस्थिरा तनु हि यातुजूनां जामिमजामिम प्रमृणीहि शत्रून्। अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ॥५॥ सूक्तम्।

॥ अथ पवमान सूक्तम् ॥

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा व्विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥१॥ अग्नऽआयूᳪ षि पवसऽआसुवो र्ज्जमिषंचनः। आरेबाधस्व दुच्छुनाम् ॥२॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥३॥ ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२॥ रनु ॥४॥ यत्ते पवित्रमर्च्चिष्यग्ने व्विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥५॥ पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण व्विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा ॥६॥ उभाब्भ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि व्विश्वतः ॥७॥ व्वैश्वदेवी पुनती देव्व्यागाद्यस्यामिमा बह्वयस्तन्न्वो व्वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु व्वयᳪ स्याम पतयो रयीणाम् ॥८॥ इति सूक्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ नाम मंत्रेण पूजनम् ॥

॥ गणपति ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः
,, अम्बिकायै नमः
,, वरुणाय नमः

——

(षड् विनायक)

ॐ मोदाय नमः
,, प्रमोदाय नमः
,, सुमुखाय नमः
,, दुर्मुखाय नमः
,, अविघ्नाय नमः
,, विघ्नहर्त्रे नमः

——

(मातृका १६)

ॐ गणपतये नमः १
,, गौर्यै नमः २
,, पद्मायै नमः ३
,, शच्यै नमः ४
,, मेधायै नमः ५
,, सावित्र्यै नमः ६
ॐ विजयायै नमः ७
,, जयायै नमः ८
,, देवसेनायै नमः ९
,, स्वधायै नमः १०
,, स्वाहायै नमः ११
,, मातृभ्यो नमः १२
,, लोकमातृभ्यो नमः १३
,, हृष्ट्यै नमः १४
,, पुष्ट्यै नमः १५
,, तुष्ट्यै नमः १६
,, कुलदेवतायै नमः १७

——

(सप्तघृतमातृका)

ॐ श्रियै नमः
,, लक्ष्म्यै नमः
,, धृत्यै नमः
,, मेधायै नमः
,, स्वाहायै नमः
,, प्रज्ञायै नमः
,, सरस्वत्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(वास्तु पूजने)

ॐ शिखिने नमः १
,, पर्जन्याय नमः २
,, जयन्ताय नमः ३
,, कुलिशायुधाय नमः ४
,, सूर्याय नमः ५
,, सत्याय नमः ६
,, भृशाय नमः ७
,, आकाशाय नमः ८
,, वायवे नमः ९
,, पूष्णे नमः १०
,, वितथाय नमः ११
,, गृहक्षताय नमः १२
,, यमाय नमः १३
,, गन्धर्वाय नमः १४
,, भृंगराजाय नमः १५
,, मृगाय नमः १६
,, पितृभ्यो नमः १७
ॐ दौवारिकाय नमः १८
,, सुग्रीवाय नमः १९
,, पुष्पदन्ताय नमः २०
,, वरुणाय नमः २१
,, असुराय नमः २२
,, शेषाय नमः २३
,, पापाय नमः २४
,, रोगाय नमः २५
,, अहये नमः २६
,, मुख्याय नमः २७
,, भल्लाटाय नमः २८
,, सोमाय नमः २९
,, सर्पेभ्यो नमः ३०
,, अदित्यै नमः ३१
,, दित्यै नमः ३२
,, अद्भ्यो नमः ३३
,, सावित्राय नमः ३४
,, जयाय नमः ३५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ रुद्राय नमः ३६
,, अर्यम्णो नमः ३७
,, सवित्रे नमः ३८
,, विवस्वते नमः ३९
,, विबुधाधिपाय नमः ४०
,, मित्राय नमः ४१
,, राजयक्ष्मणे नमः ४२
,, पृथ्वीधराय नमः ४३
,, आपवत्साय नमः ४४
,, ब्रह्मणे नमः ४५
,, चरक्यै नमः ४६
,, विदार्यै नमः ४७
,, पूतनायै नमः ४८
,, पापराक्षस्यै नमः ४९
,, स्कन्दाय नमः ५०
,, अर्यम्णे नमः ५१
,, जृंभकाय नमः ५२
,, पिलिपिच्छाय नमः ५३

ॐ इन्द्राय नमः ५४
,, अग्नये नमः ५५
" यमाय नमः ५६
" नैऋतये नमः ५७
" वरुणाय नमः ५८
" वायवे नमः ५९
" सोमाय नमः ६०
" ईशानाय नमः ६१
" ब्रह्मणे नमः ६२
" अनन्ताय नमः ६३
" वास्तु पुरुषाय नमः ६४

॥ अथ सर्वतोभद्र पूजने ॥

ॐ ब्रह्मणे नमः १
" सोमाय नमः २
" ईशाशानाय नमः ३
" इन्द्राय नमः ४
" अग्नये नमः ५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ यमाय नमः ६

ॐ निर्ऋतये नमः ७

ॐ वरुणाय नमः ८

ॐ वायवे नमः ९

ॐ अष्टवसुभ्यो नमः १०

ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः ११

ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः १२

ॐ अश्विभ्यां नमः १३

ॐ सपैतृक विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः

ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः १५

ॐ भूतनागेभ्यो नमः १६

ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः १७

ॐ स्कन्दाय नमः १८

ॐ वृषभाय नमः १९

ॐ शूलाय नमः २०

ॐ महाकालाय नमः २१

ॐ दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः २२

ॐ दुर्गायै नमः २३

ॐ विष्णवे नमः २४

ॐ स्वधायै नमः २५

ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः २६

ॐ गणपतये नमः २७

ॐ अद्भ्यो नमः २८

ॐ मरुद्भ्यो नमः २९

ॐ पृथिव्यै नमः ३०

ॐ गंगादिनदीभ्यो नमः ३१

ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः ३२

ॐ मेरवे नमः ३३

ॐ गदायै नमः ३४

ॐ त्रिशूलाय नमः ३५

ॐ वज्राय नमः ३६

ॐ शक्तये नमः ३४

ॐ दण्डाय नमः ३८

ॐ खड्गाय नमः ३९

ॐ पाशाय नमः ४०

ॐ अंकुशाय नमः ४१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ गौतमाय नमः ४२

ॐ भरद्वाजाय नमः ४३

ॐ विश्वामित्राय नमः ४४

ॐ कश्यपाय नमः ४५

ॐ जमदग्नये नमः ४६

ॐ वसिष्ठाय नमः ४७

ॐ अत्रये नमः ४८

ॐ अरुन्धत्यै नमः ४९

ॐ ऐन्द्रयै नमः ५०

ॐ कौमार्यै नमः ५१

ॐ ब्राह्मयै नमः ५२

ॐ वाराह्यै नमः ५३

ॐ चामुण्डायै नमः ५४

ॐ वैष्णव्यै नमः ५५

ॐ माहेश्वर्यै नमः ५६

ॐ वैनायक्यै नमः ५७

(लिंगतो भद्रे विशेष)

ॐ असितांग भैरवाय नमः १

ॐ रूरूभैरवाय नमः २

ॐ चण्डभैरवाय नमः ३

ॐ क्रोधभैरवाय नमः ४

ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः ५

ॐ कपाल भैरवाय नमः ६

ॐ भीषण भैरवाय नमः ७

ॐ संहार भैरवाय नमः ८

(अथ ग्रहाणां पूजने)

१ ॐ सूर्याय नमः

२ ॐ चन्द्रमसे नमः

३ ॐ भौमाय नमः

४ ॐ बुधाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५ ॐ बृहस्पतये नमः
६ ॐ शुक्राय नमः
७ ॐ शनैश्चराय नमः
८ ॐ राहवे नमः
९ ॐ केतवे नमः

———

(अधिदेवता)

१ ॐ ईश्वराय नमः
२ ॐ उमायै नमः
३ ॐ स्कन्दाय नमः
४ ॐ विष्णवे नमः
५ ॐ ब्रह्मणे नमः
६ ॐ इन्द्राय नमः
७ ॐ यमाय नमः
८ ॐ कालाय नमः
९ ॐ चित्रगुप्ताय नमः

———

(प्रत्यधि देवता)

१ ॐ अग्नये नमः
२ ॐ अद्भ्यो नमः
३ ॐ पृथिव्यै नमः
४ ॐ विष्णवे नमः
५ ॐ इन्द्राय नमः
६ ॐ इन्द्राण्यै नमः
७ ॐ प्रजापतये नमः
८ ॐ सर्पेभ्यो नमः
९ ॐ ब्रह्मणे नमः

———

(पंचलोकपाल)

१ ॐ गणपतये नमः
२ ॐ अम्बिकायै नमः
३ ॐ वायवे नमः
४ ॐ आकाशाय नमः
५ ॐ अश्विभ्यां नमः

———

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ ॐ वास्तोष्पतये नमः
२ ॐ क्षेत्राधिपतये नमः

——

(दशदिक्पाल)

१ ॐ इन्द्राय नमः
२ ॐ अग्नये नमः
३ ॐ यमाय नमः
४ ॐ निर्ऋतये नमः
५ ॐ वरुणाय नमः
६ ॐ वायवे नमः
७ ॐ सोमाय नमः
८ ॐ ईशानाय नमः
९ ॐ ब्रह्मणे नमः
१० ॐ अनन्ताय नमः

——

(अथ योगिनी पूजने

१ ॐ गजाननायै नमः
२ ॐ सिंहमुख्यै नमः
३ ॐ गृध्रास्यायै नमः
४ ॐ काकतुण्डिकायै नमः
५ ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः
६ ॐ हयग्रीवायै नमः
७ ॐ वाराह्यै नमः
८ ॐ सरभाननायै नमः
९ ॐ उलूकिकायै नमः
१० ॐ शिवारावायै नमः
११ ॐ मयूरायै नमः
१२ ॐ विकटाननायै नमः
१३ ॐ अष्टवक्त्रायै नमः
१४ ॐ कोटराक्ष्यै नमः
१५ ॐ कुब्जायै नमः
१६ ॐ विकटलोचनायै नमः
१७ ॐ शुष्कोदर्यै नमः
१८ ॐ ललजिह्वायै नमः
१९ ॐ स्वदंष्ट्रायै नमः
२० ॐ वानराननायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२१ ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः
२२ ॐ केकराक्ष्यै नमः
२३ ॐ बृहत्तुण्डायै नमः
२४ ॐ सुराप्रियायै नमः
२५ ॐ कपाल हस्तायै नमः
२६ ॐ रक्ताक्ष्यै नमः
२७ ॐ शुक्यै नमः
२८ ॐ श्येन्यै नमः
२९ ॐ कपोति कायै नमः
३० ॐ पारा हस्तायै नमः
३१ ॐ दण्ड हस्तायै नमः
३२ ॐ प्रचण्डायै नमः
३३ ॐ चण्डविक्रमायै नमः
३४ ॐ शिशुहन्त्र्यै नमः
३५ ॐ पानहन्त्र्यै नमः
३६ ॐ काल्यै नमः
३७ ॐ रूधिरपायिन्यै नमः
३८ ॐ वसाधयायै नमः
३९ ॐ गर्भभक्षायै नमः
४० ॐ शवहस्तायै नमः
४१ ॐ आंत्रमालिन्यै नमः
४२ ॐ स्थूलकेश्यै नमः
४३ ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः
४४ ॐ सर्पास्यायै नमः
४५ ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः
४६ ॐ दन्तशूकरायै नमः
४७ ॐ क्रौंच्यै नमः
४८ ॐ मृगशीर्षायै नमः
४९ ॐ वृषाननायै नमः
५० ॐ व्यात्तासायै नमः
५१ ॐ धूमनिश्वासायै नमः
५२ ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः
५३ ॐ तापिन्यै नमः
५४ ॐ शोषिणी दृष्ट्यै नमः (यै)
५५ ॐ कोट्यै नमः
५६ ॐ स्थूलनासिकायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५७ ॐ विद्युत्प्रभायै नमः
५८ ॐ वलाकास्यै नमः
५९ ॐ मार्जायै नमः
६० ॐ कटपूतनायै नमः
६१ ॐ अट्टाट्टहासायै नमः
६२ ॐ कामाक्ष्यै नमः
६३ ॐ मृगाक्ष्यै नमः
६४ ॐ मृगलोचनायै नमः

॥ अथ क्षेत्रपाल पूजने ॥

१ ॐ अजराय नमः
२ ॐ व्यापकाय नमः
३ ॐ इन्द्रचोराय नमः
४ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः
५ ॐ उक्ष्णे नमः
६ ॐ कूष्माण्डाय नमः
७ ॐ वरुणाय नमः
८ ॐ वटुकाय नमः
९ ॐ विमुक्ताय नमः
१० ॐ लिप्तकाय नमः
११ ॐ नीललोकाय नमः
१२ ॐ एकदंष्ट्राय नमः
१३ ॐ ऐरावताय नमः
१४ ॐ ओषधीघ्नाय नमः
१५ ॐ बन्धनाय नमः
१६ ॐ दिव्यकराय नमः
१७ ॐ कम्बलाय नमः
१८ ॐ भीषणाय नमः
१९ ॐ गवयाय नमः
२० ॐ घण्टाय नमः
२१ ॐ व्यालाय नमः
२२ ॐ अंशवे नमः
२३ ॐ चन्द्रवारुणाय नमः
२४ ॐ घटाटोपाय नमः
२५ ॐ जटिलाय नमः
२६ ॐ क्रतवे नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२७ ॐ घण्टेश्वराय नमः
२८ ॐ विकटाय नमः
२९ ॐ मणिमानाय नमः
३० ॐ गणबन्धाय नमः
३१ ॐ मुण्डाय नमः
३२ ॐ बर्बूकराय नमः
३३ ॐ सुधायाय नमः
३४ ॐ वैनाय नमः
३५ ॐ पवनाय नमः
३६ ॐ ढुंढीकरणाय नमः
३७ ॐ स्थविराय नमः
३८ ॐ दन्तुराय नमः
३९ ॐ धनदाय नमः
४० ॐ नागकर्णाय नमः
४१ ॐ महाबलाय नमः
४२ ॐ फेत्काराय नमः
४३ ॐ सिंहाय नमः
४४ ॐ मृगाय नमः
४५ ॐ यक्षाय नमः
४६ ॐ मेघवाहनाय नमः
४७ ॐ तीक्ष्णाय नमः
४८ ॐ असलाय नमः
४९ ॐ शुक्राय नमः

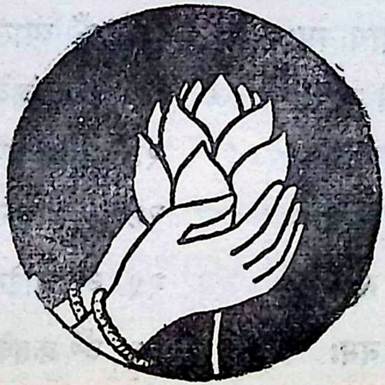

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री जगदम्बायै नमः ॥

॥ श्री शतचण्डी विधानम् ॥

श्री दुर्गा पूजा प्रयोगः। तत्र कर्ता कृत मंगल स्नानः नित्य क्रियां कृत्वा नवे वाससी परिधाय चन्दन मृगमद कुंकुमैः तिलकं कुर्यात्। पूर्वाभिमुखो देवी मुखो वा समुपविश्य तद्दक्षिणतः पत्नीं चोपवेश्य—ग्रंथि बन्धनं कृत्वा मंगलं भगवानिति श्लोकेन आचम्य प्राणानायम्य—आत्मानं प्रोक्षयेत्। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा इति। ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। ॐ पृथ्वी त्वयाधृता। मानस्तो के तनयेति मंत्रेण शिखां बद्धवा पवित्रं परिधाय हस्ते पुष्पाक्षतानादाय स्वस्तिवाचनं कुर्यान्मंगल श्लोकानपि पठेत्। दक्षिण हस्ते गन्धाक्षतपुष्पपूगीफल द्रव्यण्यादाय० संकल्पं कुर्यात्० तद्यथा—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे एक पंचाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नो द्वितीय यामे तृतीय मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कल्पानां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलि संज्ञानां चतुर्युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे तथा पंचाशत्कोटियोजन विस्तीर्ण भूमण्डलांतर्गत सप्तद्वीप मध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे तत्रापि नव खण्डानां मध्ये नव-सहस्र योजन विस्तीर्णे भरतखण्डे तत्रापि परम पवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे अमुकक्षेत्रे श्रीगंगायमुनयोर्म-हानद्योरमुकदिग्भागे नर्मदाया अमुक प्रदेशे देव ब्राह्मणानां संनिधौ श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्य राज्यातीत अमुक संख्या परिमिते प्रवर्तमान संवत्सरे प्रभवादिषष्टि संवत्सराणां मध्ये अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशिस्थे चन्द्रे अमुक राशिस्थे सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोऽमुक शर्मा सपत्नीकोऽहं ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये अस्मिञ्छतचण्ड्याख्य यज्ञ कर्मणि पुण्याहे मम कलत्रादिभिः सह जन्म राशेः सकाशात् वा जन्म लग्नाद्वर्षलग्नात् गोचराद्वा ये केचिच्चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्ट स्थान स्थिताः क्रूर ग्रहाः तैः सूचितं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थम्—सर्वदा तृतीयैका दश शुभ स्थानस्थितवदुत्तम फल प्राप्त्यर्थं तथा दशान्तर्दशोपदशा मास दशादिनदशाजनित पीडाऽल्पायुराधिदैवाधि भौतिकाध्यात्मिक जनित क्लेश निवृत्ति पूर्वक शरीरारोग्यार्थं परमैश्वर्य प्राप्त्यर्थं—विपुलधनधान्यपुत्रपौत्रादि वृद्ध्यर्थं नानाविध कर्मोंपार्जित वन्धक विमोचनार्थम्—आजन्मोपार्जित सुकृतमंगलाभिवृद्ध्यर्थं सर्वत्र प्रख्यात कीर्ति शत्रु पराजय सद्भीष्ट सिद्ध्यर्थं—अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्मी चिरकाल संरक्षणार्थं व्यापारे बहु द्रव्य प्राप्त्यर्थं राजकृत पीडा निवारणार्थम्—राजद्वारे सभायां यशो विजयादि लाभार्थं च श्रीभगवति दुर्गा प्रीतये श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थम् श्रीशतचण्ड्याख्य यज्ञ कर्माहं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये। तदंगत्वेन निर्विघ्नता परिसमाप्त्यर्थम् आदौ श्री गणेशाम्बिकयोः पूजनम्—स्वस्तिपुण्याहवाचनम्—मातृका पूजनं—नान्दीश्राद्धम्—रक्षाभिधानम्—कलश पूजनम्—सूर्यादिग्रहाणां पूजनं—आचार्यादि वरणम्—भित्तौ दुर्गा स्थापनावाहनम् कलशस्थापनं तस्योपरि दुर्गापूजनं—ज्योति पूजनं—पुस्तक पूजनं ब्राह्मण पूजनं—नीराजनं चाहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ पूर्वभूत

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुद्धिः—ॐ ह्रौं इति अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ (अथस्व प्राण प्रतिष्ठा प्रकार) ॐ अस्य स्वप्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राण शक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं स्वशरीरे चण्डिका देवता प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ अथ ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ ब्रह्म विष्णुमहेश्वर ऋषिभ्यो नमः शिरसि । ॐ ऋग्यजु सामानि छन्दोभ्यो नमः मुखे । ॐ प्राण शक्त्यै नमोहृदि । ॐ आं बीजाय नमः गृह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । ॐ क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे । इति ऋष्यादि न्यासः ॥ अथाक्षर न्यासः ॥ ॐ ङं कं खं घं गं नमो वाय्वग्नि वाभूम्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः) ॐ ञं चं छं झं जं शब्दस्पर्श रूपरस गन्धात्मने नमः तर्जनीभ्याम् नमः ॥२॥ (शिरसे स्वाहा) ॐ णं टं ठं डं ढं श्रोत्रत्वङ् नयनजिह्वाघ्राणात्मने नमः मध्यमा-भ्याम् नमः ॥३॥ (शिखायै वषट्) ॐ नं तं थं धं दं वाङ्-पाणिपादपायूपस्थात्मने नमः । अनामिकाभ्याम् नमः ॥४॥ (कवचाय हुम्) ॐ मं पं फं भं वं वल न्यादान गमन विसर्गा-नन्दात्मने नमः कनिष्ठकाभ्याम् ॥५॥ (नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ शं यं रं वं लं हं षं क्षं सं लं वल विद्याबुद्धि मनोहंकारचितात्मने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करतल पृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ (अस्त्राय फट्) ॥६॥ एवं हृदयादि-कर षडंग न्यासान् कृत्वा। नाभेरारभ्यपादान्तम्। आं इति पाश बीजं स्मरेत्। हृदयादारभ्य नाभ्यन्तम् ह्रीं इति शक्ति वीजं स्मरेत्। मस्तकादारभ्य हृदयान्तम् क्रों इति सृणि वीजं स्मरेत्। हृदि विन्यसेत्। ॐ यं त्वगात्मने नमः। ॐ रं असृगात्मने नमः। ॐ लं मासात्मने नमः। ॐ सं शुक्रात्मने नमः। ॐ वं मेदात्मने नमः। ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः। ॐ षं मज्जात्मने नमः। ॐ सं शुक्रात्मने नमः। ॐ हौं ओजात्मने नमः। ॐ हं त्राणात्मने नमः। ॐ सं जीवात्मने नमः। इति दृष्टया हृदि चिन्यसेत्। ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं इति मूर्द्धादिचरणावधि व्यापकं कुर्यात्।

॥ ततः नमस्कारः ॥ ॐ मण्डूकादि परतत्वान्त पीठ देव-ताभ्यो नमः। ॐ जयादि शक्तिभ्यो नमः। इति नत्वा। ओं आं ह्रीं क्रों पीठाय नमः इति पीठे प्राण शक्ति देवीं ध्यायेत्। ध्यानम्० ॐ पाशं चा

इति ध्यात्वा हृदिकरं निधाय॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणा इह स्थिताः (प्राणा) ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हं सः ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः जीव इह स्थितः (जीव) ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाक्मनः चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राणपाणि पादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं च्चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥३॥ इति वारत्रयेण स्वशरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठाप्य ततः ॐ इति प्रणवेन १५ पंचदशावृत्ति कृत्वा अनेन मम देहस्था चण्डिकायाः गर्भाधानादि पंचदश संस्कारान्संपादयामि। एवं प्राणान् प्रतिष्ठाप्य० (देवी भूत्वा देवीं यजेत्—चण्डिका रूपमात्मानं भावयेत्)

ना देवी कीर्तयेद्देवी ना देवीं तां समर्चयेत्

न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवी भूत्वातु तां यजेत्। इति।

न्यासः। शिरसि ॐ हिरण्य वर्णाम् ॥१॥ नेत्रयोः ॐ तां आवह ॥२॥ कर्णयोः ॐ अश्वपूर्णा ३ घ्राणयोः ॐ कांसो-स्मिता० ॥४॥ मुखे० ॐ चन्द्रांप्रभा० ॥५॥ ग्रीवायाम्—ॐ आदित्य ॥६॥ करयोः—ॐ उपैतुमां० ॥७॥ हृदि ॐ क्षुत्पिपासा० ॥८॥ नाभौ० ॐ गन्धद्वारा० ॥९॥ लिंगे० ॐ मनसः ॥१०॥ गुदे० ॐ कर्दमेन० ॥११॥ उर्वोः ॐ आयः सृ० ॥१२॥ जान्वोः ॐ आर्द्रां पुष्क० ॥१३॥ जंघयोः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ आर्द्रां यः ॥१४॥ चरणयोः ॐ तां मआव ॥१५॥ सर्वांगे० ॐ यः शुचिः ॥१६॥ एवं स्वशरीरे मूर्त्युपरि च न्यासं कृत्वा। अग्न्युत्तारणम् कुर्यात्—कलशोपरि स्वर्णमयीं श्री दुर्गा प्रतिमां अग्न्युत्तारण पूर्वकं संनिधाय पट्टवस्त्रैराछाद्य पुरुष सूक्तेन श्री सूक्तेन पुराणोक्त मार्गेण वा षोडशोपचारैः यथोपचारैः वा सं पूजयेत्। तद्यथा० देशकालौ संकीर्त्य अस्याः स्वर्णमयी श्रीदुर्गा प्रतिमायाः घटनादि दोष परिहारार्थम् अग्न्युत्तारण पूर्वकं प्राण-प्रतिष्ठां करिष्ये। मूर्तिं घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धमिश्रित जल धारां पातयेत्। ॐ समुद्रस्येति मंत्रान् पठेत्। पश्चात् ॐ आं ह्रीं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणा। ॐ आं ह्रीं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वा प्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। संस्कार सिद्धये षोड़श प्रणवावृत्तिं कुर्यात्। अनेन अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः गर्भाधानादि षोड़श संस्कारान् संपादयामि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ वेदोक्त पूजन प्रकारः ॥

ध्यानम्—पुष्पं गृहीत्वा—ॐ अक्षस्रक्० घंटा० खड्गं० विद्युद्दाम०—

ओंकार मध्य निलयां कमलायताक्षीम्
पंचाननां वहुविधाऽऽयुध चापहस्ताम् ॥
तत्वर्थ वर्ण मय विग्रह भासमानाम्
ध्यायामि तां निगम मातरमादि शक्तिम् ॥१॥

ध्यायामि मनसा दुर्गाम्
नाभि मध्ये व्यवस्थिताम् ॥
आगच्छ वरदे देवि
दैत्य दर्प निपातिनि ॥२॥
पूजां गृहाण सुमुखि
नमस्ते शंकर प्रिये ॥
सर्व तीर्थमयं वारि
सर्व देव समन्वितम् ॥३॥
इमं घटं समागच्छ
तिष्ठ देवगणैः सह ॥
दुर्गे देवि समागच्छ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सान्निध्य मिह कल्पय ॥४॥
वलिं पूजां गृहाणत्वम्
अष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥
अस्मिन् घटे समागच्छ
स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥५॥
रक्षां कुरु सदा भद्रे
विश्वेश्वरि नमोस्तुते ॥
एह्येहि दुर्गे दुरतौघनाशिनि
प्रचण्ड दैत्यौघ विनाशकारिणी ॥
उमे महेशार्द्ध शरीर धारिणी
स्थिरा भवत्वं मम यज्ञ कर्मणि ॥६॥
एहि दुर्गे महा भागे रक्षार्थम् मम सर्वदा
आवाहयाम्यहं देवि सर्वकर्मार्थ सिद्धये ॥

इत्यनेन पुष्पांजलि कलशे निथाय आत्मानं देवीरुपं विभाव्य पूजयेत् ।

पूजने मंत्राः—आवाहनम्० ॐ हिरण्यवर्णा ॥१॥ आवाहयामि भवतीं भव तीव्रताय निर्वायणैक निपुणे द्विज वृन्दवंद्ये। आयाहि देवि नवरत्न विभासमाने सिंहासने ननु निधेहि पदाब्ज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

युग्मम् ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै नमः भगवतीमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ आसन० पुष्पं गृहीत्वा—ॐ तां आवह। अनेक रत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितम्। कार्तस्वरमयं दिव्यं आसनं प्रति गृह्यताम्। ॐ भू० भग० आसनं सम० ॥२॥ पाद्यम् ॐ अश्वपूर्णां। गांगेन निर्मितमिदं पयसा सदूर्वा गन्धाक्षतं समुदितामित मंत्र पूतं। देवि च पादसरसीरुहयोर्भवत्याः पाद्यं महेश्वरि मुदा परि कल्पयामि ॥३॥ अर्घ्यम्० ॐ कांसोस्मिताम्। गन्धाक्षतादि सहितं विविधैः प्रसूनैरुल्लासितं कनकरत्न परिष्कृतं च। देवि हि पाणि कमले विमले भवत्याः अर्घ्यं पवित्रमिममम्ब समर्पयामि ॥४॥ मधुपर्कम्० ॐ मधुवाता। घृत मधु समायुक्तं पात्रयुग्म समन्वितम्। मधुपर्कं गृहाणत्वं शुभदा भव शोभने ॥ ५ ॥ आचमनम्० ॐ चन्द्रांप्रभा। कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिः स्वादु शीतलं। तोयमाचमनीयार्थम् देवि त्वं प्रतिगृह्यताम्। गंगा जलेन शुचिनाऽऽचमनं विधेहि मातः मुरारि शिरसा परिलालितेन। अभ्यंग सेवन विधानमथाऽनुगृह्य स्नानाय देवि वरदे मयि सम्प्रसीद ॥६॥ स्नानम्० ॐ आदित्यवर्णे। गंगा कलिन्द तनयेन्दु समुद्भवादि प्राज्य प्रभाव तटिनी गण तोय पूर्णैः। हेमैर्घटैर्मृगमदादि सुग-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्धिभिस्ते स्नानं परात्परतरे विनिवर्तयामि ॥ इति स्नानम् ॥७॥ पयः स्नानम्० ॐ पयः पृथिव्यां । कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ ८ ॥ दधि स्नानम्० ॐ दधिक्राव्णो । पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्नानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥६॥ घृत स्नानम्० ॐ घृतं घृत० । नवनीतं समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥१०॥ मधु स्नानम्० ॐ मधुवाता० । तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ११ ॥ शर्करा स्नानम्० ॐ अपाꣳ रसस्य० । इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१२॥ पंचामृत स्नानम्० । ॐ पंचनद्यः० । पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् । पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१३॥ गन्ध स्नानम्० । ॐ गन्धद्वाराम्० । मलयाचल संभूतं चन्दनागरु संभवम् । चन्दनं देवि देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १४ ॥ उद्वर्तन—सुगन्धि तैल स्नानम्० । ॐ अꣳशुना नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनी युतम् । उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुद्ध स्नानम्०। ॐ शुद्धवालः। शंखं गृहीत्वा—पुरुषसूक्तेन—श्रीसूक्तेनाभिषेकं कुर्यात्। वस्त्रोपवस्त्रम्०। ॐ उपैतु मां०। वालार्कमण्डल विलासिनी मन्दहासे श्री देवि योगिजनमानस राजहंसि। वस्त्रोपवस्त्र युगलं सहभूषणाद्यैः स्वीकृत्य पाहि परमेश्वरि नः प्रनम्रान् ॥१६॥ यज्ञोपवीतम्०। ॐ क्षुत्पिपासा०। यज्ञोपवीतमिदमम्ब धरासुराणामास्योद्गतैः श्रुति वचो विसरैः पवित्रम्। तेजोमयं द्रुत सुवर्ण सवर्णमेतत् संधार्य देवि परिपाहि कृपा कटाक्षैः ॥१७॥ गन्धम्०। ॐ गन्धद्वाराम्। काश्मीर नीर मिलितं घनसार शीतं कस्तूरिका सुरभितः भ्रमरावलीढम्। सर्वांगलेपन सुखं मलयोद्भवन्ते मातः समर्थ परमं प्रमथं भजामि ॥१८॥ अक्षतान्०। ॐ अक्षन्नमी०। अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान्। गृहाणेमान्महादेवि देहि मे निर्मलां धियम् ॥१९॥ हरिद्रा चूर्णम्०। ॐ हरिद्रारंजिते देवि सुख सौभाग्यदायिनी। तस्मात्वं पूजयाम्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छमे ॥२०॥ अवीर गुलालम्। ॐ कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम संभवम्। कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥२१॥ सिन्दूरम्०। ॐ सिन्धोरिव०। सिन्दूरमरुणाभासं जपा कुसुम संनिभम्। अर्पितं ते मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥२२॥ कज्ज-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लम्० । चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्ति कारकम् । कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥२३॥ सौभाग्यद्रव्यम्० । सौभाग्य लक्षणमिदं परमं सतीनां सिन्दूर कुंकम मुखं खलु वस्तु जातम् । स्वीकृत्य सर्व सुरसेवित पादपद्मे सौभाग्यमुज्ज्वलतरं कृपया प्रयच्छ ॥२४॥ दूर्वांकुरम्० । ॐ आर्द्रां पुष्क० । दूर्वादले श्यामले त्वं महीरुपे हरिप्रिये । अतो दूर्वाभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे ॥२५॥ विल्वपत्रम्० । ॐ आर्द्रां यः करिणीं० । अमृतोद्भव श्री वृक्षो महादेवः प्रिय सदा । विल्व-पत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥२६॥ पुष्पाणि० । ॐ तां म आवह० । नानाभिधानि सुरभीणि मनोहराणि गुंजनमधु-व्रतकुलैः परिवारितानि । संफुल्ल पाटलि सरोज मुखानि मातः पुष्पाणि ते चरणयोरहमर्पयामि ॥२७॥ रत्नमालाम्० । ॐ कर्दमेन० । मुक्ताफलयुतां मालां रत्नवैदुर्य सुप्रभाम् । माणिक्य स्वर्णग्रथितां गृह्यतां वरदे नमः ॥२८॥ पुष्पमालाम्० । ॐ आपःस्रजन्तु० । पद्मशंखज पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम् । पुष्प-मालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥२६॥ पुनः पुष्पम्० । ॐ मनसः काम० । मन्दार पारिजातादि पाटलि केतकानि च । जाति चंपक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ॥३०॥ अलं-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कारम्० । ॐ हारकंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभिः । रत्नाढ्य कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥३१॥ सुगन्धि-इत्र० । ॐ अहिरिव । चन्दनागुरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा । कस्तूर्यादि सुगन्धाश्च सर्वांगेषु विलेपयेत् ॥३२॥

॥ अथांग पूजा ॥

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि ॥१॥ ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि ॥२॥ ॐ मंगलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि ॥३॥ ॐ कात्यायन्यै नमः ऊरु द्वयं पूजयामि ॥४॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पू० ॥५॥ ॐ कमलवासिन्यै नमः नाभिं पू० ॥६॥ ॐ शिवायै नमः उदरं पू० ॥७॥ ॐ क्षमायै नमः हृदयं पू० ॥८॥ ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पू० ।६। ॐ उमायै नमः हस्तौ पू० ॥१०॥ ॐ महागौर्यै नमः दक्षिण बाहुं पू० ॥ ११ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः बाम बाहुं पू० ॥१२॥ ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पू० ॥१३॥ ॐ स्कन्धमात्रे नमः कंठं पू० ॥१४॥ ॐ महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पू० ॥१५॥ ॐ सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पू० ॥१६॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः शिरः पू० ॥१७॥ ॐ कात्यायन्यै नमः सर्वांगम् पू० । इत्यंग पूजा । धूपम्० । ॐ यः शुचिः । धूपं दशांग परि मे दुरमा समन्ता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दाविर्भवत्परिमलं कुलितान्तरालम्। देवि प्रसीद सदये रवि मण्डलस्थे सद्यो गृहाण वर राजत पात्रसंस्थम् ॥३३॥ दीपम्०। ॐ अग्निर्ज्ज्यों०। अन्तर्बहिस्तिमिर वारण कारणं च सद्वर्ति पंचकयुतं घृतपूर पूतम्। ज्योतिर्मयि त्रिभुवनाऽवन चारुशीले श्री देवि दीपमिदमम्ब समर्पयामि ॥३४॥ नैवेद्यम्०। ॐ प्राणाय स्वाहा०। सौवर्ण पात्र विहितं विविध प्रभेदं पंच प्रकारमपि षड्रस संयुतं च। आस्वाद्यमम्ब पुरतः तव देवमातः नैवेद्यमद्यमधुरं समुपाहरामि। ब्रह्मेशाद्यैः परित उरुभिः सूपविष्टैः समेतैर्लक्ष्म्या सिंजद्वलय करया सादरं वीज्यमानः। नर्मक्ष्वेली प्रहसन् मुखैर्व्याप्नुवन्पंक्ति मध्यम् मुक्तापात्रे कनक घटिते षड्-रसं चण्डिके च। शालीभक्तं सुभक्तं शिशिर करशितं पायसा पूप सूपं लेहं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं द्वारिकाद्यं सुखाद्यम्। आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयन रुचिकरं राजिकैलामरीच स्वादी पः शाकराजी परिकरममृताहार जोषं जुषस्व। आचमनीयं सम० ॥३५॥ ऋतुफलम्०। ॐ याः फलि०। द्राक्षाखर्जूर कदलीपनसाम्र कपित्थकम्। नारिकेलेक्षुजं वादि फलानि प्रति गृह्यताम् ॥३६॥ ताम्बूलम्०। ॐ एलोल्लसत् परिमलं वदनाम्बु-जात वाला तयार्पितमुदार सुगन्धसारम्। ताम्बूलमम्ब करुणा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरुणालये ते मार्तगृहाण पुरतः परिकल्पयामि। एलालवंग कस्तूरी कर्पूरैः पुष्पवासिताम्। वीटिकां मुख वासार्थं अर्पयामि सुरेश्वरि ॥३७॥ दक्षिणा०। ॐ हिरण्यगर्भ०। माता द्विजेन्द्रकुल वन्दित पादपद्मे भक्त्या भवत्कर सरोरुहयोर्वितीर्णाम्। पूजा विधान सहितां नवरत्नरुपां तां दक्षिणां निखिल देव नुते गृहाण ॥३८॥ प्रदक्षिणाम्०। प्रदक्षिणीकृत्य वपुस्त्वदीपं ज्योतिर्मयं मातरु दारभावे। कृतार्थयामि च्युत पापजालं निजं शरीरं जगदम्ब सद्यः ॥३६॥ प्रणामः। सरसिज नयने विरिञ्चिविष्णु प्रमुख सुरेन्द्र निषेवितांघ्रि पद्मे। सकल निगम मूल बीजभूते जय जय देवि नमो नमस्ते ॥४०॥ पुष्पांजलि० ॥

स्फुरत्यरिमलाकुल भ्रमर गुंजतान्मंजुलो
मरन्दभरमेदुरो मलयजा ऽ वलीढान्तरः।
सभक्ति तवपादयोरयमिहार्पते मानसा
नुराग रस मंथर विकसित प्रसूनांजलिः ॥

ध्यानम्—दुर्गे स्मृता। इति नत्वा ॐ देवा आयान्तु यातु-
धाना अपयान्तु। दुर्गे देवि यजनं रक्षस्वेति
भूमौ प्रणमेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ नवदुर्गा पूजनम्—भित्तौ कलशोपरि वा ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः शैलपुत्र्यै नमः शैलपुत्रीमावाहयामि स्थापयामि ।१।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिण्यै नमः । आ० स्था० ॥२॥
ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रघंटायै नमः । आ० स्था० ॥३॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कुष्माण्डायै नमः । आ० स्था० ॥४॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः । आ० स्था० ॥५॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायन्यै नमः । आ० स्था० ॥६॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्र्यै नमः । आ० स्था० ॥७॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः । आ० स्था० ॥८॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदायै नमः । आ० स्था० ॥९॥

॥ ज्योति पूजनम् ॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः । ॐ ॐ भूर्भुवः स्वः तेजस्वरुप श्री दुर्गायै नमः पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ध्यायेत् । प्रधान साधार विकल्पसत्ता स्वभावभावाद् भुवनत्रयस्य । सा विद्यया व्यक्तमपीह माया ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यम् ।

॥ वटुक पूजनम् ॥ ॐ वं वटुकाय नमः । पाद्यादिभिः पूजनं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधाय ध्यायेत् । ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनील व्याल यज्ञोपवीती । क्रतुसमय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति वटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

॥ अथ नवकन्या पूजनम् ॥

आवाहनम्० । ॐ मंत्राक्षर मयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् । नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्या मावाहयाम्यहम् । ॐ कन्यायै नमः ।

१—ॐ सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति स्वरूपिणि ।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते ।
ॐ कुमार्यै नमः ॥१॥

२—ॐ त्रिपुरां त्रिपुरा धारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम् ।
त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ।
ॐ त्रिमूर्त्यै नमः ॥२॥

३—ॐ कलात्मिकां कलातीतां कारुण्य हृदयां शिवाम् ।
कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ।
ॐ कल्याण्यै नमः ॥३॥

४—ॐ अणिमादि गुणाधाराम काराद्य पक्षरात्मिकाम् ।
अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ।
ॐ रोहिण्यै नमः ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५—ॐ कामाचारां शुभां कान्तां कालचक्र स्वरूपिणीम् ।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ।
ॐ कालिकायै नमः ॥५॥

६—ॐ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्ड प्रभंजनीम् ।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमाम् ॥
ॐ चण्डिकायै नमः ॥६॥

७—ॐ सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेव नमस्कृताम् ।
सर्व भूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ।
ॐ शांभव्यै नमः ॥७॥

८—ॐ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भव दुःख विनाशिनीम् ।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम् ।
ॐ दुर्गायै नमः ॥८॥

९—ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुख सौभाग्य दायिनीम् ।
सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ।
ॐ सुभद्रायै नमः ॥९॥

एवमावाहयेत् पूजयेच्च ॥

॥ ब्राह्मण वरणम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य—अमुक गोत्रोत्पन्नामुक शर्मा मम जन्मलग्नात्—वर्षलग्नात्—गोचराद्वा ये केचिच्च-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुर्थाष्टम द्वादशस्थान स्थित सूर्यादि क्रूर ग्रहाः तज्जनितारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं दशान्तर दशा चोप दशा दिन दशाजनितारिष्ट ज्वर पीडा दाक्ष पीडा नेत्र कर्णोद रादि पीडा मतिष्क पीडा निवृत्ति पूर्वकं अल्पायु निवृत्ति पूर्वकं चाधि दैविकाधि भौतिका ध्यात्मिक जनित क्लेश कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधा घौघ निवृत्ति पूर्वकं शरीरारोग्यार्थं परमैश्वर्यादि प्राप्त्यर्थं च श्री जगदम्बा प्रसाद सिद्धि द्वारा सर्वापन्निवृत्ति पूर्वकं सर्वाभीष्ट धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धयर्थं राजभय निवृत्यर्थं राजकृत पीडा विनाशार्थम् राजद्वारतः व्यापारतश्च लाभार्थं विजयतार्थं च अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्मी चिरकाल संरक्षणार्थम् व्यापारे वहु द्रव्य प्राप्त्यर्थं श्री महाकाली महा-लक्ष्मी महा सरस्वती देवता प्रीत्यर्थं कवचार्गला कीलक पठन एकादश न्यास पूर्वक नवार्णमंत्राष्टोत्तर शतजप रहस्य त्रय पठनान्तं मध्ये मार्कण्डेय उवाच इत्यारभ्य सावर्णि र्भविता मनुरित्यन्तम् सर्वा वाधा—इति मंन्त्र संपुटितं अस्मिञ्छत चण्ड्याख्य यज्ञ कर्मणि श्री चण्डी सप्तशत्याः पठन (पाठ) करणार्थम् एभिः गन्धाक्षतपुष्प यज्ञोपवीत सुवर्णांगुलीयका-सन पंचपात्रपुस्तक वासोभिः अमुक गोत्रामुक शर्माणं त्वामहं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वृणे० वृतोस्मि—प्रतिवचनम् । एवमाचार्यादि वरणम् । इत्थं कर्म कृत्वा आवाहित देवानाम् कुर्यात् । (हवन द्रव्य त्यागः) गन्धाक्षतपुष्पद्रव्याण्यादाय० अमुकगोत्रोऽमुक शर्माहं शतचण्डयाख्य हवन कर्मणि इदं हविर्द्रव्यं गणेशाम्बिका—षोडशमातृका वास्तु पुरुष सपैतृक विश्वेदेवा—चतुःषष्टि योगिनी—एकोन पंचाशत मरुद्गणा सप्तवसोद्धांश—सूर्यादिग्रहाः ईश्वराद्यधिदेवताग्न्यादि प्रत्यधि देवता पंचलोकपाल दशदिग्पाल ब्रह्मादि सर्वतोभद्र मण्डलस्थ पंचाशद्देवताभ्यो न मम । इति त्यागः ॥

॥ अध्यायाहुति विशेषः ॥

१ अध्याय—२ पान-शाकल्य-कैथ - कमलगट्टा - १ सुपारी १ लवंग २ छो० इलायची २ गुगल-सहत श्रुची मे रखकर खड़े होकर—

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा । अम्बे अम्बिके—स्वाहा । पश्चात् ५ वार घृत की आहुति ॐ घृतं घृत पावान० मंत्र से देवे । यह अध्याय समाप्ति की आहुति है ।

बिशेष— वंचिताभ्याम् १०० मंत्रमे कर्पूर की आहुति है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ अध्याय मे—देवासुर २ गुगल की आहुति ।

विशेष—नारियल-गुगल है-अन्य पूर्ववत् ।

३ अध्याय मे—गर्ज गर्ज क्षणं० सहत की आहुति ।

विशेष-घृत-मधु-पुष्प-मैला गुगल है—

और वही क्रम है ।

४ अध्याय मे—विशेष खीर-मिश्री-(शूलेन पाहिनो ४ मंत्रो

की आहुति नहीं होती ।

४ अध्याय मे—या श्रीः स्वयं—मे बेलगीरी की आहुति ।

५ अध्याय मे—कर्पूर-पुष्प-ऋतुफल विशेष है और वही क्रम है।

६ अध्याय मे—विशेष भोजपत्र है और वही क्रम है ।

७ अध्याय मे—विशेष जायफल दो २ है ।

विचित्र खट्वांगधरा—मे चुहारी मालाकी

आहुति है । वही क्रम है ।

८ अध्याय मे—विशेष-लालचन्दन-घृत-ईक्षु और वही क्रम है।

९ अध्याय मे—विशेष—घृत - ईक्षु - कुष्माण्ड - बेलफल है ।

और वही क्रम है ।

१० अध्याय मे—विशेष-बेलगीरी-घृत-ऋतुफल है और वही क्रम है

११ अध्याय मे—विशेष—घृत-अनार-पुष्प-खीर है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देव्याहते त० हलुवा की आहुति०

रोगान शेषा० घृतमे भीगोकरगीलोयकी आहुति०

श्लोक ८ से ३८ तक पेडा की आहुति०

सर्वा वाधा० काली मिर्च व पीली सीरस्यु०

भक्षयन्त्या० अनार की०

शाकंभरी० वथुवा या पालख०

शरणागत० लवंग०

सर्वा वाधा० पीली सीरस्यु०

ततो मा० अनार की

ततः शतेन० कमलगट्टा—और वही क्रम है।

१२ अध्याय—वलि प्रदाने० पेठो०

स्तुता सं० मोती०

विशेष—घृत-विल्व-केला-ऋतुफल। वही क्रम है।

१३ अध्याय—विशेष—घृत-केला-फल-फूल श्रीफल-लालवस्त्र है। और वही क्रम है।

आवाहित देवानां सदीपदधिमाषभक्तवलिं देयम्। पश्चात्॥ दुर्गा वलिदानम्॥ ॐ दुर्गाबलि द्रव्याय नमः गन्धपुष्पाभ्यां संपूज्य० ॐ दुर्गायै सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सशक्तिकायै ब्रह्माविष्णुरुद्र सहितायै त्रिगुणात्मिका चण्डिका देव्यै नमः। इति संपूज्य। बलिमुपनीय—एह्येहि जगतां जननि इममामिषान्नबलिं गृह्ण २ सिद्धिं देहि २ शत्रुक्षयं कुरु २ ह्रां ह्रीं हुं फट् स्वाहा एष बलिः दुर्गायै सांगायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै त्रिगुणात्मिकायै श्री दुर्गा देव्यै नमः। इति जलमुत्सृज्य प्रार्थयेत्। शरणागत दीनार्त ॥ इति ॥ उत्तर पूजनम्। अस्मिन् शतचण्ड्याख्य हवन कर्मणि सांगता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादि मण्डल स्थापित देवानामुत्तर पूजनं करिष्ये। पूजनं समाप्य। अथ पूर्णाहुतिः। श्रुचिं श्रीफल—फलताम्बूलगन्धमालादिभिरलंकृत्य ॐ मृडाग्नये नमः इति मंत्रेण श्रुचिं सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्० अद्येत्यादि कृतस्य शतचण्ड्याख्य यज्ञ कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होमं करिष्ये। होमान्ते—त्र्यायुषं—क्षेत्रपालबलिं—छायापात्रदानम् मंत्रा पूर्वमेव प्रदर्शिता। गोदानम् अद्येत्यादि कृतस्य शतचण्डी हवन कर्मणः अपूर्ण पूर्णार्थम् न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् (गोरभावे) गोचारिणीं गोदुग्धपानार्थं वा दक्षिणां अ० गो० अ० ब्रा० सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हवन कर्तृभ्यो दक्षिणा दानम् ॥ कृतस्य शतचण्डी हवन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं यथानाम गोत्रेभ्य० आचार्यादि ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां यथा यथा विभज्य युष्मभ्यमहमुत्सृजे ॥ ॥ भूयसी दानम् ॥ कृतस्य शतचण्डी हवन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं अपूर्ण पूर्णार्थम् भूयसीं दक्षिणां नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो अन्ध पंगुभ्यश्च यथा विभज्य दातुमहमुत्सृजे। आचार्य ऋत्विग्भ्यो दक्षिणा दानम्। ब्राह्मण भोजन संकल्पः देशकालौ संकीर्त्य—कृतस्य शतचण्डी यज्ञाख्य कर्मणः सम्पूर्णता सिद्ध्ये तत्संपूर्ण फल प्राप्त्यर्थं यथोपपन्नेनान्नेन यथा संख्याकान् नानागोत्रान् नानाभिधान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये दक्षिणां च दास्ये। पाठकर्तृक दक्षिणा ॥ देशका० कृतैतच्छत चण्डी यज्ञ कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तत्संपूर्ण फल प्राप्तये पाठ कर्तारं इमां दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ देशाचारात्—आरतो—छातमितिदिक् ॥ तर्पणम्—दुग्धजलेन—कुशान् गृहीत्वा—ॐ दुर्गां तर्पयामि नमः। पुनः मार्जनम्—ॐ दुर्गां मार्जयामि नमः। ब्राह्मणान् प्रार्थयेत्० मया यत्कृतं शतचण्ड्याख्य यज्ञ कर्म कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं द्रव्यहीनं तद् ब्राह्मण वचनात् श्री सूर्याद्याहित देवता श्री भगवति प्रसा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दात् सर्वं परिपूर्णमस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्तु परिपूर्णः ३ ॥
वर प्रार्थना०

रूपं देहि यशो देहि—भाग्यं भगवति देहि मे
पुत्रान्देहि धनं देहि—सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥१॥
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि
आयुरारोग्य विजयं देहि देवि नमोऽस्तुते ॥२॥
भूतप्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यः परमेश्वरि
भयेभ्यो मानुषेभ्यश्च देवेभ्यो रक्ष मां सदा ॥३॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
उमे ब्रह्माणि कौमारी विश्व रूपे प्रसीद मे ॥४॥
कुंकुमेन समालब्धे चन्दनेन विलेपिते ।
विल्वपत्र कृता पीडे दुर्गे त्वां शरणं गतः ॥५॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च
आगता सुख संपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥६॥
हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हरासुखम्
हर रोगं हर क्षोभं हरमारीं हरप्रिये ॥७॥
कायेन मनसा वाचा कर्मणा यत्कृतं मया
ज्ञानाज्ञान कृतं पापं दुर्गे त्वं हर दुर्गतिम् ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजाफलाग्नि कार्याद्यैः सुकृतं यन्मयार्चितम्
तत्सर्वं फलदं मे ऽस्तु भुक्ति मुक्ति च देहि मे ॥९॥
लप्सित्वत्प्रज्ञया नित्यं कृता पूजा तवाज्ञया
स्थिरा भव गृहेह्यस्मिन्मम ऐश्वर्य कारिणी ॥१०॥
विपद्घनध्वान्त सहस्रभानवः समीहितार्थान् प्रति काम धेनवः
अपार संसार समुद्र सेतवो मां पातु चण्डी चरणाब्ज रेणवः।११।
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरि
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥१२॥
न्यूनं वाप्यधिकं वापि यन्मया मोहतः कृतम्
सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥१३॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥१४॥
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप संभवः
ताहि मां सर्वदा मातः सर्वपाप हरा भव ॥१५॥

—ः समाप्तम् ः—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ शतचण्डी हवन विशेष सामग्री ॥

सुपारी, पान, लवंग,	मिश्री, पीली सीरस्यु (सर्षप)
इलायची, केला, पुष्प,	काली मिर्च, गीलोय, पेड़ा
नारियल, गट (गीरीगोला)	सहत, अनार, वडा, गुलगुला
कर्पूर	कुष्माण्ड
कमलगट्टा	खीर
बेलगीरी	वथुवा
गुगल	पालख
भैसा गुगल	चुहारी माला
जायफल	गन्डेरी इक्षु
भोजपत्र	विजोरा
लाल चन्दन	कैथ
अनारफूल	हलुवा
लालवस्त्र	मोती २

देव्यष्ट गन्ध शारदा तिलके—

चन्दना गुरु कर्पूर चौर (कचूर) कुंकुम रोचनाः
जटामांसी कपि (रक्त चन्दन) युताः शक्तेर्गन्धाष्टकं विदुः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ टिप्पणी ॥

संस्कार ग० सर्वेषु धर्म कार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा ।
अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः ॥

धर्म-प्रवृत्तौ० व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी सह भोजने ।
व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ॥२॥
वामे सिन्दूर दाने च वामे चैव द्विरागमे ।
वामेऽशनैक शय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी ॥
आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालनेतथा ।
शयने भोजने चैव पत्नीतूत्तरतो भवेत् ॥
वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितॄणां पादशोचने ।
रथा रोहण काले च ऋतुकाले सदा भवेत् ॥

पवित्रधार० मंत्रेण धारयेद्विप्रः पवित्रं सर्वं कर्मसु ।
मंत्रं बिना घृतं यत्तु पवित्रमफलं भवेत् ॥

पूजा द्रव्य—स्थापयेत् दक्षिणे भागे—पूजा द्रव्याणि दैशिकः ॥

॥ यज्ञ कर्मणि हस्तस्वर हीना एवमंत्राः पठनीयाः ॥

जपे होमे मखे श्राद्धेऽभिषेके पितृकर्मणि
हस्तस्वरं न कुर्वीत संध्यादौ देवपूजने ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उपस्थाने जपे होमे मार्जने यज्ञ कर्मणि
कंठस्वरं प्रकुर्वीत हस्तस्वर विवर्जितम् ॥
॥ प्रणवोच्चारणम् प्रतिमंत्रं कर्तव्यम् ॥
ब्रह्म यज्ञो जपे होमो देवर्षि पितृ कर्म च
अनोंकृत्य कृतं सर्व न भवेत् सिद्धिदायकम् ॥

दीप— घृत दीपो दक्षिणेस्याच्चैल दीपस्तु वामतः
सितवर्ति समायुक्तो दक्षे वामेंगे रक्तवर्तिका ॥
चित्रो कर्मणि दक्षिणस्यां दीपः ।

——

पंचोपचार—गन्ध पुष्पं धूप दीपो नैवेद्य इति पंचकम्
पंचोपचारमाख्यातं पूजने तत्वविद् बुधैः ।

——

तिलक— तिलकं कुंकुमेनैव सदा मंगल कर्मणि
कारयेत्सुमतिमान् न श्वेत चन्दनं मृदा ॥

——

नैवेद्य— नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः

——

ताम्बूल— लवंग जाति कंकोल चूर्ण क्रमुक खादिरम्
कर्पूर सहितं पत्रं ताम्बूलं च समर्पयेत्

——

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्रव्याभावे—द्रव्याभावे प्रदातव्या क्षालितास्तण्डुलाः शुभाः
उपचारेषु च सर्वेषु यत्किंचित् दुर्लभं भवेत्
तत्सर्वं मनसा ध्यात्वा पुष्प क्षेपेण कल्पयेत् ॥
अग्नि पूजने—मध्येऽपि गन्धपुष्पादीन् दद्यादग्नेर्न संशयः
शान्ति मयूख—वहि नैवेद्य मात्रन्तु दातव्य मिति निश्चयः ॥

——

अधि देवता ग्रहस्य दक्षिण भागे स्थाप्या ।
प्रत्यधि देवता वाम पार्श्वे स्थाप्या ।
उत्तरे पंचलोक पाला स्थाप्या

——

ऋत्विजां जुह्वतामग्नौ बहिः पतति यद्धविः
सज्ञेयो वारुणो भागः प्रक्षेप्यो विमले जले ॥

——

अग्निचक्र—उत्सर्गे च प्रतिष्ठायां संस्कारे वास्तु शान्तिके ।
पुरश्चरणे कथा होमे तथा चोद्यापने विधौ ।
नित्य होमे महीदेव नाग्निचक्रं विचारयेत् ॥
संस्कारदीपके—जातके नामके चैव ह्यन्नप्राशन कर्मणि ।
तथा निष्क्रमणे चैव पत्नी पुत्रश्च दक्षिणे ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गर्भाधाने पुंसवने सीमन्तोन्नयने तथा ।
वधू प्रवेशने चैव पुनः सन्धान एव च ॥२॥
प्रदाने मधुपर्कस्य कन्यादाने तथैव च ।
कर्मस्वेतेषु वैभार्यां दक्षिणेतूपवेशयेत् ॥

द्वारमातृका—कुमारी धनदा नन्दा विपुला मंगलाऽचला ।
पद्मा चैव समाख्याता सप्तैता द्वार मातरः ॥

जीवमातृका—कल्याणी मंगला भद्रा पुण्या पुण्यमुखी तथा
जया च विजया चैव सप्तैता जीव मातरः ॥

स्थलमातृका—ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा
वाराही च तथैन्द्राणी चामुण्डा स्थल मातरः

जलमातृका—मत्स्यी कूर्मी च वाराही माण्डूकी मकरी तथा
ग्राहकी क्रौंचकी चैव सप्तैता जल मातरः ॥
कांस्ये वा ताम्रपात्रेवा प्रभूत जल पूरणम्
तत्र मत्स्याद्या आवाह्य पूजयेज्जल मातृकाः

——

आसन— पौष्पं दारुमयं वास माक्षतं कौश तैजसम्
षड्विधं चासनं प्रोक्तं देवता प्रीति कारकम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अधिदेवता—ईश्वरं च उमां चैव स्कन्दं विष्णुं तथैव च
ब्रह्माणेन्द्र यमं चैव कालं चैव तु अष्टमम् ॥
चित्रगुप्तं तु नवमं अधि दैवत कीर्तिताः

प्रत्यधिदेवता—अग्निश्चैव तथा वायुः पृथिवी विष्णु रेव च
इन्द्रश्चैव तथेन्द्राणि प्रजापति स्तथैव च
सर्पश्चैव तु ब्रह्मा च एताः प्रत्यधि देवताः ॥

समाप्त

॥ अथ कुष्माण्ड वलिदानम् ॥

देवीं पंचोपचारैः संपूज्य महावलिं दद्यात्। तत्र क्षत्रियादिनाश्व मेष छाग महिषाणामन्य तरोदेयः। विप्रेण तु कुष्माण्ड विल्वमिक्षवश्चदेयाः। सचेत्थम्—देवीं द्रोण पुष्प विल्वाम्रुदल जातीचंपकैः संपूज्य कर्ता उदङ्मुखः देवी मुखं वा वलिं गन्धादिनाभ्यर्च्यं ॥

पशो त्वं वलिरुपेण मम भाग्यादुपस्थितः ।
प्रणमामि ततः सर्व रूपिणं वलिरुपिणम् ॥१॥
चण्डिका प्रीति दानेन दातुराप द्विनाशनम् ।
चामुण्डा वलिरूपाय वलेतुभ्यं नमो नमः ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञार्थे वलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयं भुवा
अतस्त्वां घातयाम्यद्य (छेदयामि) तस्माद्यज्ञे वधोवधः

इति वलिमभिमंत्र्य ऐं ह्रीं श्रीं इति पुष्पं क्षिप्त्वा

खड्ग पूजा—ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट् इति मंत्रेण गन्धाक्षतादिना संपूज्य।

ॐ कालि कालि यज्ञेश्वरि लोह दण्डायै नमः इति वलिं छेदयित्वा ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं कौशिकि रूधिरेणा प्यायताम् इति देव्यै निवेद्य ततो प्रार्थयेत्।

खड्गिनी शू० शूलेनपाहि० नमोदेव्यै० रूपं देहि०
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी ॥
आयुरारोग्य मैश्वर्यं देहि देवि नमोस्तुते ॥

कुष्माण्डं छेदयित्वा तस्योपरि कुंकुमं (रोली) विकिरेत् इति संप्रदाय ॥

॥ नवरात्रे देवि आवाहन विचार ॥

रवि शशि गजारूढा
शनि भौम तुरंगमे।
भृगु गुरू च दोलायाम्
नौकायां च बुधे स्मृता ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फलम्

गजे च जलदा देवि
सस्य पूर्णा वसुन्धरा
नौकायां जले प्लुता भूमि
दोलायां मरणं भयम् ॥२॥

—

॥ श्रीः ॥

इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ सहायता देने वाले सज्जन

११०१) द्वारका प्रसाद गुटगुटिया मधुपुर
११००) सागरमल सराफ ट्रस्ट द्वारा
जगदीश—विश्वनाथ—राजकुमार
५०१) गुप्त राक सम
२५१) गुप्त वना
२५१) बाबूलालजी कृष्णगोपाल झुंझनवाला
२५१) गंगाधरजी सीताराम झुंझनवाला
२५१) प्रहलादरायजी दुर्गाप्रसाद सरायाँ
२५१) मंगलचन्द चमड़िया
२५१) नागरमलजी सरावगी
२५१) महावीरप्रसाद विजयकुमार सराफ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२५१) खेमचन्द बंसल
२५१) गुप्त प्रज्ञु
२५१) राधामोहनजी झुंझुनवाला
२५१) वृजमोहनजी झुंझनवाला
२०१) रामगोपाल मोदी
२०१) राधेश्याम सराफ
२०१) प्रहलादराय राधेश्याम
२०१) शान्ति देवी राजगढ़िया
१५१) राधेश्याम श्रीराम खेतान
१५१) वासुदेवजी कानोड़िया
१५१) मुरलीधर मोहनलाल
१५१) दिलीप कुमार क्याल
१५१) ज्वालाप्रसाद राजकुमार बाजोरिया
१५१) स्व० गुरुदयालजी बजाज की स्मृति मे
१०१) प्रहलादरायजी तुलस्याण
१०१) आनन्दीलाल केडिया
१०१) काशीप्रसाद क्याल
१०१) बनवारीलाल हनुमानदास

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुद्रक :—
उदयाचल प्रेस
३१, मुखराम कानोड़िया रोड,
हवड़ा–७११११०१
फोन { ६६-५४८८ / २०-०१७२ / २०-२५६१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection